



आचार्यवर्य गोस्वामि तिलकायित
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज



नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म दिनांक - २४ फरवरी
सन् १९५०

॥ श्री हरिः ॥

अस्वण्ड भूमण्डलाचार्य

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

आप श्री का प्राकट्य विक्रम संवत् २००६ फाल्गुन शुक्लपक्ष सप्तमी को श्री विजयलक्ष्मी बहूजी की कोख से हुआ।

आप श्री सप्तस्वरूपोत्सव कर्ता नित्य लीलास्थ पूज्यपाद गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज श्री के द्वितीय पुत्र हैं। आपश्री का शुभ विवाह श्रीमती राजेश्वरी बहूजी के साथ २२ नवम्बर १९७१ को मथुरा में सम्पन्न हुआ।

आपश्री के विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न कलानुरागी एक पुत्र रत्न चि. गो. १०५ श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशालबाबा), दो सुपुत्रियाँ अ.सौ. पद्मिनी बेटीजी एवं अ.सौ. प्रियंवदा बेटीजी तथा सुपौत्री सुश्री (हरिवल्लभी) आराधिका बेटीजी एवं सुपौत्र चि. श्री लाल गोविन्द जी (श्री अधिराज बाबा) हैं।

विक्रम संवत् २०५७ आषाढ शुक्लपक्ष ६ (कसूंभी छट्ठ) को आप श्री का आचार्य पद पर तिलकोत्सव सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात् प्रभु श्रीनाथजी के प्रति अपना सेवानुराग, दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रत्युत्पन्नमतित्व, न्यायप्रियता, गाम्भीर्य, सहनशीलता, अन्तःकरण की निर्मलता एवं लोक कल्याण की भावना आदि अनेक सद्गुणों से आप श्री जन-जन के प्रणम्य बने हुए हैं।

आप श्री ने श्री नवनीत प्रभु को श्रीनाथ गौशाला, गणगोर घाट, घसियार के प्राचीन मंदिर, राजा ठाकुर मंदिर गोकुल, जतीपुरा (श्री गिरिराजजी), लालबाग, वृन्दावनबाग, टाँटोल गौशाला, गिरिराज परिक्रमा की छतरी, नाथद्वारा, श्रीनाथजी की हवेली उदयपुर तथा निचली ओडन के बाग में पधरा कर दिव्य एवं अलौकिक मनोरथों का आयोजन किया गया। आप द्वारा लालबाग के छपर में भी महाछप्पन भोग का विशेष मनोरथ आयोजित किया गया। उत्तरी अमेरिका पेनसिलवेनिया ब्रज में श्री ब्रजराज का दिव्य स्वरूप पधराया।

प्रभु श्रीनाथजी को नाना प्रकार से लाड़ लड़ाने तथा सम्प्रदाय की अनेक विशिष्ट सेवाएं करने की पुनीत भावना आपके अन्तर्मन में तरंगायित है।

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायणजी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष
मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

॥ श्रीहरिः॥

-: निवेदन :-

अखण्ड भूमण्डलाचार्य जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य चरणान्वयप्राप्त जन्मविद्याविलासी श्री गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्रीइन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराजश्री की आज्ञा से सूक्ष्म दृश्य गणितानुसार चित्रापक्षीय निरयण के द्वारा विक्रम संवत् २०८० का यह श्रीनाथ पंचांग निर्मित कर सेवामें प्रस्तुत किया है। यद्यपि अपनी मति अनुसार पूर्णरूप से इसकी शुद्धि का प्रयत्न किया गया है। तथापि यदि गणित अथवा अशुद्धि संशोधन में कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे विद्वान् सुधार कर पढ़ने की कृपा करेंगे।

अत्र क्वचित्स्मृति दृष्टिदोषश्चेत् क्षतव्यं सुधीभिः।

पूर्व विद्याविभागाध्यक्ष पूज्य गुरुचरण दादाजी श्रीनारायण रामकृष्णजी शास्त्री की दी हुई प्रेरणा एवं आशीर्वाद से इस पंचांग का निर्माण किया गया है।

निवेदक

त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दनजी शास्त्री

कठेरावाली चौकी नाथद्वारा (राज.)

मोबाइल : ९४१४४७३०१६

दूरभाष (०२६५३) २३०४८५

email: rts1966@gmail.com

आयुर्निर्णय:-

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विःस्वभावभेऽष्टमेशः
स्थिरभे लग्नेशः द्विःस्वभावभे अष्टमेशः	स्थिरभे लग्नेशः चरभे अष्टमेशः	स्थिरभे लग्नेशः स्थिरभे अष्टमेशः
द्विःस्वभावभे लग्नेशः स्थिरभे अष्टमेशः	द्विःस्वभावभे लग्नेशः द्विःस्वभावभे अष्टमेशः	द्विःस्वभावभे लग्नेशः चरभे अष्टमेशः

चोरी में गई वस्तु कब मिले -

अन्धलोचन	रो, पुष्य, उ.फा, विशा, पू.षा, धनि, रेवती	शीघ्र लाभ
मन्दलोचन	मृग, आश्ले, हस्त, अनु, उ.षा, शत, अश्वि	यत्न से लाभ
मध्यलोचन	आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभि, पू.भा, भरणी	दूर सुनाई दे
सुलोचन	पुन, पू.फा, स्वाति, मूल, श्रवण, उ.भा, कृत्तिका	नहीं मिले

॥ श्री हरि ॥

श्रीनाथो विजयते॥ सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पाद पङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्॥१॥ जयति श्रीपतिः पुष्टि मार्गसेव्यो निधिः सताम्। वाक्पतिस्तदनु श्रीमद् वल्लभोदेशिकेश्वरः॥२॥ कुञ्चित चिकुरकलापं रुचिरालापं महः किमपि। त्रिभुवनसुषमासीम श्रीमत्कृष्णाभिधं जयति॥३॥ करेण स्वीयानां हृदयमिव हैयङ्ग.वलवन्दधानः सम्प्रीणन्नमृतमधुरैर्बालचरितैः। हसन्नल्पैर्दन्तैः कर चरण जान्वञ्चनपरः शिशुः कृष्णोऽस्माकं दिशतुदृगमीशः स्वविषयाम्॥४॥ राज्यं स्यादचलं नृप श्रवणतो मन्त्रिश्रवात्कौशलं धान्येशात्कमलास्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात्। धर्मे बुद्धिरतिस्थिरा रसपते दीर्घायु राप्तिर्भवेत् सस्येशाद्विमला यतः शुभकरी राजा बलिः श्रूयताम्॥५॥

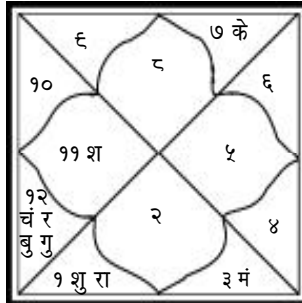
स्वस्ति श्रीमन्नुपति विक्रमार्कसमयात् २०८० श्रीशालिवाहन शके १६४५ प्रवर्तमाने श्री ब्रह्ममानेन प्रथमदिवसस्य घटिका १३ पलानि ४२ अक्षर त्रयं च गतम्। अथ कृतयुग प्रमाणम् १७२८००० त्रेतायुग प्रमाणम् १२६६००० द्वापर युग प्रमाणम् ८६४००० कलियुग प्रमाणम् ४३२००० तन्मध्य गतकलि ५१२४ शेष कलिः ४२६८७६ अथस्मिच्छुभ संवत्सरे श्रीमद्वल्लभाचार्याणाम् प्रादुर्भावाद् गताब्दाः ५४५ वैशाख कृष्ण ११ रवि वासरे षड्चत्वारिंशत् पञ्चशततमाब्द अस्मिन्वर्षे राजा बुधः। मंत्री भृगुः। सस्येश रविः। धान्येश शनिः। मेघेश गुरुः। रसेशभौमः। नीरसेश रवौः। फलेश गुरौः। धनेश रवौः। दुर्गेश गुरौः। एतेदशाधिकारिणाम् वर्षनाम् अश्विन स्तत्फलम् - अब्देत्वाश्वयुजे त्यथ सुखिनः सर्वजन्तवः। मध्यमं पूर्वं सस्यस्यात् परिपूर्णा विपच्यते। नलनाम संवत्सरे शकानुसारेण शोभन नाम संवत्सरे मेघनाम द्रोणः। द्रोणे वर्षति सर्वदा। रोहिणी निवासस्तटे। तटे वृष्टि सुशोभना। समय निवास रजक गृहे। रजके वृष्टिः रूतमा।

समय विश्वा १० समय वाहनं सिंचाणुः। स्तम्भौः १ तृणम्। तृणम् सोमवत्याः ३ अंगारकी चतुर्थी ३ सोमवती पंचमी २ भानु सप्तमी २ बुधाष्टमी ३ रविदशमी १ समय मुहूर्ताः ३६० समयदिनानि ३८४ तिथिक्षयः १८ तिथि वृद्धि १२ उत्पत्ति विश्वा १०५ रवपति विश्वा ६६ वर्षा विश्वा १३ धान्यम् ५ तृणम् ५ शीतम् १३ तेजः १७ वायुः १३ वृद्धिः १५ क्षय १५ विग्रह ११ ऐक्यं १०७ शनिदृष्टिरुत्तरे सत्या॥धर्म१॥ पापं १८ ग्रहणं १ चन्द्रस्यः।

वर्ष प्रवेश लग्न कुण्डली

ता. २१.०३.२३ इष्ट ४०/३६

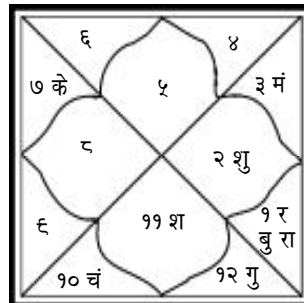
सूर्यः ११/०५ लग्न ७/०२



जगलग्न कुण्डली

ता. १४.०४.२३ इष्ट २१/४५

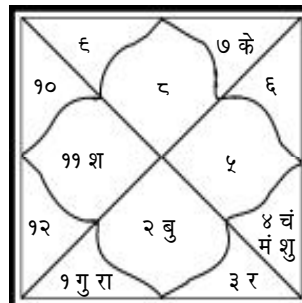
सूर्य ०/० लग्न ४/०८



आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

ता. २२.०६.२३ इष्ट ३०/०३

सूर्य २/०६ लग्न ७/१६



समय शुद्धि के लिए

चैत्र शुक्ल १ बुध से वैशाख कृष्ण ६ शुक्र तक मीन संक्रान्ति। गुरु अस्त चैत्र शुक्ल ६ गुरु से वैशाख शुक्ल ६ बुध तक। आषाढ शुक्ल ११ गुरु से कार्तिक शुक्ल ११ गुरु तक देवशयन। अधिक मास श्रावण (दि. १८.७.२०२३ से १६. ८.२०२३ तक) शुक्रास्त अधिक श्रावण कृष्ण ४ शनि से शुद्ध श्रावण १ गुरु तक। मार्गशीर्ष शुक्ल ४ शनि से पौष शुक्ल ३ रवि तक धनुर्मास। मीन संक्रान्ति फाल्गुन शुक्ल ५ गुरु से वर्ष समाप्ति तक।

॥श्री गणेशाय नमः॥ अन्तराय तिमिरोपशान्तये शान्त पावन मचिन्त्य वैभवम्। तं नरं वपुषि कुञ्जरं मुखे मन्महे किमपि तुन्दिलं महं॥१॥

नलनाम संवत्सर फलम् - नलाब्दे मध्य सस्यार्थं वृष्टिभिः प्रचुराधराः। नृप सं क्षोभ संजाता भूरि तस्कर-भीतयः॥२॥

शोभननाम संवत्सर फलम् - शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोग शोकदा। तथापि सुखिनो लोका बहुसस्सार्थवृष्टयः॥३॥

राजा बुधस्तस्यफलम् - बुधस्य राज्ये सजलं महीतरनं गृहे गृहे विवाह मंगलम्। प्रकुर्वते दानदयां जनोऽपि स्वास्थ्यं सुभिक्षं धन धान्य सुफलम्॥४॥

मंत्री भृगुस्तस्यफलम् - भृगुसुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभ मूषक रावध माहिषैः। भवति धान्य समर्थतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्॥५॥

सस्येशो रविस्तस्यफलम् - सस्याधि नाथे तरणौ हि पूर्व धान्यं समर्थं बहवोहि चौराः। युद्धं नृपाणं जलदा जलाद्याः स्वल्पं च सस्यं बहु भूरहाश्चः॥६॥

धान्येशो शनिस्तस्यफलम् - निर्धनाक्षिति भुजो रणादराः सस्यमल्पमति रोगिणे जनाः। नैव वर्षति जलम् सुरेश्वरः स्याद्यदा कणपतिः शनैश्चरः॥७॥

मेघेशो गुरुस्तस्यफलम् - गुरुरपि प्रिय वृष्टिकरः सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा। श्रुति विचारपरा नरपालका रससमृद्धिः युताऽखिलः मानवाः॥८॥

रसेशो भौमस्तस्यफलम् - यदि धरातनयो रसयो भवेन्न रस शशि युता जनता तदा। नरपतिर्विषमो जनता पदो न जलदो बहुवृष्टि करो भुवि॥९॥

नीरसेशो रविस्तस्यफलम् - नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि। रत्न माणिक्य मुक्तादरर्धवृद्धिः प्रजायते॥१०॥

फलेशो गुरुस्तस्यफलम् - सुर गुरु फलनायकतां गर्तोगतभया वन राशि महाद्रुमाः। यजन याजनाकोत्सव मन्दिराः श्रुति विचारपरा द्विजपूर्वकाः॥११॥

धनेशो रविस्तस्यफलम् - द्रविणपे यदि वासरपे तदाः वणिजतो बहुद्रव्य समागमः। गजतुरंगममेष खरोष्ट्र तो धन च यं लभते क्रय विक्रयात्॥१२॥

दुर्गेश गुरुस्तस्यफलम् - सुर गुरौ गढये नय शोभिता नरवरा नर पालिताः। गिरिषुवैन गरेषु समं सुख सुमति द्विजशस्त्रवतां विशाम्॥१३॥

नाथद्वारीय लग्न भोग

वर्ष का फलादेश

लाभव्यय कोष्ठक

राशि	घ.	मि.	संवत्सर फल -	नल नाम संवत्सर के स्वामी शनि है। अन्न जल मध्यम्, अधिकारी क्रोधरत रहे, चोरों का भय बने, प्रचण्ड वायु बहे, राजाओं में परस्पर विरोध, रोगों तथा उपद्रव का भय बना रहें।	राशि	लाभः	व्ययः	फलम्
मेष	१	३८	राजा का फल -	वर्षा अच्छी हो, घर-घर मंगलाचार हो, सभी लोग दयालु बने। स्वास्थ्य वृद्धि, धन-धान्य की प्रचुरता रहे, प्रजा में सुभिक्ष रहे।	मेषः	५	५	लाभ
वृषभ	१	५६	मंत्री का फल -	धान्य की महर्धता, जनता में भय तथा वर्षा प्रचुर हो, रोग की वृद्धि, बाढ़ का भय रहे।	वृषभ	१४	११	हानि
मिथुन	२	१३	सस्येश फल -	पूर्वधान्य महंगा, चोरों की वृद्धि, राजाओं में बैर तथा युद्ध होवे, स्वल्पधान्य होवे। महामारी के प्रकोप का भय होवे।	मिथुन	२	११	रोग
कर्क	२	१७	धान्येश फल -	राजाओं में परस्पर युद्ध, धान्य की कमी, प्रजा में रोग व्याप्त हो, वर्षा की कमी, राजा प्रजा में परस्पर कलह, अशान्ति हो।	कर्क	११	८	सौख्य
सिंह	२	१५	मेघेश फल -	पृथ्वी पर हर्ष व्याप्त हो, वर्षा अच्छी होवे। प्रजा में धार्मिक भावना की अभिवृद्धि हो।	सिंह	१४	२	विजय
कन्या	२	१४	रसेश फल -	रसो की निपज कम हो, राजा प्रजा में वैषम्य, वर्षा की कमी रहे।	कन्या	२	११	रोग
तुला	२	१६	नीरसेश फल -	ताम्र, चन्दन, रत्न, माणिक्य, मोती, इनके मूल्य में वृद्धि हो।	तुला	१४	११	हानि
वृश्चिक	२	१७	फलेश फल -	वृक्षों से फलों की उत्पत्ति अच्छी हो, ब्राह्मण यज्ञादि तथा श्रुति विचार में तत्पर हो। प्रजा में उत्सवों की वृद्धि हो।	वृश्चिक	५	५	लाभ
धनुः	२	६	धनेश फल -	व्यापार में द्रव्य लाभ हो, हाथी, घोड़े, ऊँट आदि के बेचने खरीदने से लाभ प्राप्त हो। व्यापारी वर्ग को धन प्राप्ति होवे।	धनुः	८	११	सौख्य
मकर	१	४७	दुर्गेश फल -	राजाओं में नीति व्याप्त हो, सुरक्षा का प्रबन्ध सर्वत्र रहे; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी सुखी होवे।	मकर	११	५	विजय
कुंभ	१	३२	रोहिणी निवास -	तट पर समय निवास घोबी के घर होने से वर्षा अच्छी रहे। गौ प्रजा भाग्य बलिष्ठ है।	कुंभ	११	५	विजय
मीन	१	२६			मीन	८	११	सौख्य

लाभ व्यय कोष्ठक देखने की विधि और फल - जिस राशि का फल देखना हो उस राशि के सामने वाले लाभ व्यय के अंकों को जोड़कर पुनः १ घटा देना और ८ का भाग देना जो शेष बचे उसके अनुसार यह फल होता है। १ लाभ, २ शुभ, ३ क्लेश, ४ रोग, ५ अपमान, ६ सन्मान, ७ विजय, ८ या ० शेष रहे तो हानि होती है।

सर्वोपयोगिमुहूर्तः

१. प्रथम रजस्वला स्नान।

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, रेवती, शुभ तिथि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार में शीघ्र गर्भ धारण होय।

२. गर्भाधान में ग्राह्य।

भ, रो, मृ, ह, अनु, स्वा, तीनों उत्तरा, ध, श, ये नक्षत्र और १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ ये तिथि सो, बु, गु, शु, ये वार रजोदर्शन से ५।६।७।८।९।१०।१२।१३।१४।१५।१६ वीं रात्रि में चन्द्रबल में शुभ ग्रहों को देख गर्भाधान श्रेष्ठ, है और अश्वि, चि, पुन, पुष्य, इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम है।

३. पुंसवनं।

अ, भ, कृ, रो, मृ, म, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, आर्द्रा, पुन, पुष्य, रे, इन नक्षत्रों में रवि, मंगल, गुरुवार शुभ तिथि गर्भधान से २/३ महिना धनुः, कन्या, मीन, स्थिर लग्न चन्द्रबल देखके पुंसवन संस्कार करना।

४. सीमान्त (अठमासा)

पुनर्वसु, पुष्य, मृ, रे, रो, ३ उत्तरा, ये नक्षत्र, शुभ, तिथि शुभ वार गर्भ से ४।६।८ मास और विष्णुबलि में श्रवण, रो, पुष्य, नक्षत्र २/७।१२ तथा शुभवार, शुभ ग्रहों के लग्न तथा चन्द्रबल में विष्णुबलि श्रेष्ठ है यह ब्राह्मणों के लिए कहा गया है।

५. जातकर्म नामकरण।

मृगशिर, चि, अनु, ३ उत्तरा, रो, अश्वि, पुष्य, हस्त ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभ वार जन्मतः ११।१२ वादिवस शुभ लग्न चन्द्रबल देखकर नामकरण करना श्रेष्ठ है।

६. प्रसूत स्त्री स्नान-सूर्य पूजा।

रेवती, ३ उत्तरा, रो, मृ, ह, स्वा, श्र, अश्वि, अनु ये नक्षत्र रवि, गुरु, मंगलवार, शुभ तिथि, शुभ लग्न चन्द्रबल शुभवार में प्रसूत स्त्री को स्नान कराना श्रेष्ठ है।

७. बालक को पालना में झुलाना। (चक्र)

१०।१२।१६।१८।३२ वां दिन शुभवार ३ उत्तरा, मृ, चि, अनु, रे, अश्वि, पुष्य हस्त इन नक्षत्रों में शुभ तिथि, शुभ लग्न, में झुलावे उत्त वारादि में जन्मतः १२ वें दिवस तथा चौथा महिने में बालक को निष्कासन करें।

८. जलपूजा

उत्तम तिथि में, बुध, गुरु, शुक्र, वारों में अ, पु, पु, मृ, मू, अनु, नक्षत्रों, में तथा मास पूर्ति में भी उत्तम है, गुरु शुक्रास्त चैत्र, पौष, जन्म, मास मलमास वर्जित है, चन्द्रबल देखना।

९. अन्न प्राशन।

छः महिने से लेकर सममास में पुत्र को, पांच महिने से लेकर विषममास में कन्या को। मृ, चि, अनु, रे, अश्वि, पुष्य, हस्त, पुन, स्वा, श्र, ध, श, इन नक्षत्रों में शुभवार २।३।५।७।१०।१३ ये तिथि, शुभ लग्न चन्द्रबल में उत्तम है।

१०. कर्ण वेध

जन्मतः ६।७।८ वें महीना, ३।५।७ वर्ष। श्र, ध, पु, पु, मृ, रे, चि, अनु, ह, अश्वि, इन नक्षत्रों में वृष, तु, धन, मीन लग्न शुभ वारों में अष्टमघर शुद्ध चन्द्रबल देखकर कर्ण वेध करें चैत्र, पौष, जन्म मास रिक्ता तिथि, समवर्ष, जन्मतारा आदि को छोड़ना चाहिये।

११. चौला चूडा (जडुला उतारने का)

जन्मतः ३।५।७ वे वर्ष में रेवती, अश्वि, ह, चि, स्वा, पु, पु, मृ, ज्ये, श्र, वि, श और गु, शु, सो, बुधवार, शुक्लपक्ष, उत्तरायण चन्द्रबल देखकर शुभ तिथि में वृष, कन्या, मि, ध, कुं, लग्न में श्रेष्ठ ४।६।१४।६।८।३० इन तिथि को छोड़ना।

१२. विद्यारम्भ (अक्षरारम्भः)

उत्तरायण ५।७।८ वें वर्ष में र, बु, गु, शुक्रवार और २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि में रे, अश्वि, पु, पु, अनु, आ, श्र, ह, स्वा, वि, ३ उत्तरा मृ, अश्ले, ध, श, इन, नक्षत्रों में शुभ लग्न पंचम स्थान शुद्ध, चन्द्र बल देखकर बालक को विद्यारंभ कराना श्रेष्ठ है।

१३. व्रत बन्ध (यज्ञोपवीत)

पू, ३, उत्तरा, ३, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, श, रे, अश्वि, रो, मृ, आ, पु, पु, अश्ले, ये नक्षत्र २।३।५।१०।११।१२ तिथि में मिथुन, सिंह, कन्या, धनुः, वृष, मीन, लग्न रवि, चन्द्र, गुरुबल शुक्रोदय र, बु, गु, शु, शनिवार १।३।५ स्थान शुद्ध, चैत्र, वै, ज्ये, आषाढ, मार्ग, मा, फा, मास, शुक्लपक्ष, उत्तरायण, जन्मतः ५।७।८।९।११ वर्ष में बालक को यज्ञोपवीत धारण कराना श्रेष्ठ है।

१४. प्रथम वधू प्रवेश।

विवाह के दिन से ३।५।७।८ में दिन तीनों उत्तरा रो, अश्वि, पुष्य, ह, चि, अनु, रे, मृ, ध, श्र, मू, म, स्वा, इन नक्षत्रों में शुभ, तिथि गुरु, शुक्र, सोम, शनिवार में वधू प्रवेश श्रेष्ठ है चन्द्रबल को देखे।

१५. द्विरागमन

विवाह से १।३।५।७ वर्षों में वृश्चिक, कुंभ मेष, के सूर्य में गुरु शुद्ध होय सो, बु, गु, शु, वारों में मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष, लग्नों में अश्वि, पुष्य, ह, रो, ३ उत्तरा, श्र, ध, पुन, स्वा, मू, मृ, रे, चि, अनु, इन नक्षत्रों में चन्द्रबल देखकर द्विरागमन (आणागोणा) करें।

१६. अग्निहोत्र।

उत्तरायण सूर्य, कृ, वि, तीनों उत्तरा रो, मृ, ज्ये, पुष्य, इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में श्रेष्ठ है चन्द्रमा, मंगल, गुरु, शुक्र नीच के न हो और अस्त शत्रुक्षेत्री भी न हो कर्क, मकर, मीन, कुम्भ लग्न तथा लग्न में चन्द्रमा जहां हो ऐसे समय में अग्नि होत्र करना श्रेष्ठ है चन्द्रबल उत्तम हो।

॥ श्रीनाथद्वारलग्नपत्रम् । अयनांशः २४ चरखण्डानि ५६।४५।९६ अक्षप्रभा ५।३६ अक्षांशः २४।५४ पलकर्णाः १३।१४ रेखांशः ७३।४८ अन्तर-३४ मि. ४८ से.

रा.अ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेषः ०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
वृषभः १	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
मिथुनः २	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
कर्कः ३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
सिंहः ४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
कन्याः ५	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३
तुलाः ६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९
वृश्चिकः ७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
धनुः ८	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५
मकरः ९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१
कुम्भः १०	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
मीनः ११	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
रा.अ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

सूर्यराश्यंशमानेन ग्राह्यं घट्यादिकफल॥
इष्टघटी समायुक्तं लग्नम् भवति तन्मितम्॥

यात्रा मुहूर्त

शुभ तिथि शुक्लपक्ष की १ को छोड़कर १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुभ नक्षत्र अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। साधारण नक्षत्र रोहिणी, ३ पूर्वा, उत्तरा, ज्येष्ठा, मूल, शत। शुक्लपक्ष में चन्द्रबल देखकर तथा कृष्णपक्ष में तारा बल देखकर यात्रा करना शुभ है। ताराबल देखने का प्रकार जन्म नक्षत्र से दिन-दिन नक्षत्र तक गिनना जो संख्या प्राप्त हो उसमें २ का भाग देना शेष १२।४।६।१० बचे तो ताराबल समझना गमन समय में योगिनि कालवास दिक्शूल बांये अथवा पीठ के शुभ होते है तथा चन्द्र सन्मुख एवं दक्षिण शुभ है।

दिक् शूलादि जानने का कोष्ठक

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षि	नैर्ऋ	पश्चि	वाय	उत्त	ईशा
दि.शु.	श.सो.	सो.गु.	गुरु	शु.श.	शु.र.	मंगल	म.बु.	बु.श.
यो,	१	३	५	४	६	७	२	८
वा,	९	११	१३	१२	१४	१५	१०	३०
काल	शनि	शुक्र	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि
वास								
चन्द्र	मे,सिं,		वृष		मिथु,		कर्क	
वास	धनु		क,म,		तु,कुं,		वृ,मी	

यात्रा से पुनः घर में प्रवेश शुभ तिथि यात्रावन शुभ वार बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न स्थिर। षष्ठ अष्टम द्वादश स्थान शुद्ध हो उस समय चन्द्रबल देखकर घर में प्रवेश करना शुभप्रद हैं रवियोग- सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र ४।६।९।१०।१३।१२० वां हो तब होता हैं। यह योग सभी शुभकार्यों में ग्राह्य है ही किन्तु इसकी विशेषता यह है कि यह सब प्रकार के अशुभ योगों का भी नाश करता हैं। कुमार योग- तिथि १।५।६।१०।११ सोम, मंगल, बुध, शुक्र नक्षत्र- अश्विनी रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, इन तीन के मिलने से यह योग होता है मंत्रदीक्षा विद्या तथा व्रतादि में शुभ होता हैं।

निरक्षे लग्न दशम सारिणी पलभा ०।० अक्षांश ०।० अयनांशः २४ चरखण्डा ०।०।०

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मकर ६	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९
कुम्भ १०	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
मीन ११	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
मेष १२	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
वृषभ १	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
मिथुन २	२८	२८	२८	२८	२८	२८	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कर्क ३	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९
सिंह ४	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४
कन्या ५	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
तुला ६	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक ७	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४
धनुः ८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८

सूर्य के राशि अंश से लग्नसारिणी के कोष्ठक में जो अंक प्राप्त हो उसमें इष्ट जोड़ने से जो फल प्राप्त होता है वह फल लग्न सारिणी में जहां मिले वह लग्न होगा, वही फल दशम सारिणी में जहां मिले वह दशम लग्न होता है।

खेती सम्बन्धी

हल चलाने का मुहूर्त

४।६।११।१४।१५।३० शुक्ल १ को छोड़कर अन्य तिथियों में मं, बु.गु. शनिवार को मृग, पुन, पुष्य, मघा, ३ उत्तरा हस्त, चित्रा, स्वा, वि, अनु, मूल, श्र, ध, श, रे, इन नक्षत्रों में २।३।६।१२ लग्न में दक्षिण से उत्तर की ओर तीन बार हल चलाना।

बीज बोने का मुहूर्त

४।६।११।१४।३०।१५ शुक्ल १ को छोड़कर शुभवार अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, मघा, ३ उत्तरा ह, चित्रा, स्वा, अनु, मृ, पुन, ध, रे, इन नक्षत्रों में चन्द्रबल देखकर बीज बोना चाहिए।

राहु नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनना

८	३	१	३	१	३	१	३	४	सूर्य नक्षत्र
अ	शु	अ	शु	अ	शु	अ	शु	अ	३ ८ ६ ८
									अ शु अ शु

धान्य काटने का मुहूर्त

४।६।१४ तिथि में शनिवार को छोड़कर भरणी, कृ, मृ, आ, पुष्य, आश्ले, म, उ फा, इन नक्षत्रों में २।५।८।११ इन लग्नों में धान्य का काटना शुभ है।

धान्य कोठार में भरने का मुहूर्त

शुभ तिथि र, सो, गु, शु, अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य उफा, ह, चि, स्व, अनु, उषा, श्र, ध, श, पूफा, उषा इन नक्षत्रों में कोठार में धान्य भरना श्रेष्ठ है।

अवकहोडा चक्रम् ।												
स्वामी	राशि	नक्षत्र के पाद के अनुसार नाम करण अक्षर	नाम नक्षत्र	पुं	संज्ञा	युज्जा	गण	पुं	स्थान	स्वरूप	हस्त	हस्त
वर्ण वश्य हंसक	भौम क्षत्रिय चतुःपद अग्नि	चू चे चो ला	अश्विनी	अश्व	लक्ष्मी	पूर्व	देव	आदि	अ.कु	उत्तर	अश्वमुख	३
		ली लू ले लो	भरणी	गज	उ.क्र	पूर्व	मनुष्य	मध्य	यम.	उत्तर	योनिरूप	३
		आ. इ उ ए	कृत्तिका	मेष	मि.सा.पूर्व	पूर्व	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	मध्य	क्षुधाकार	६
		ओ वा वी वु	रोहिणी	सर्प	ध्रु.स्थि.पूर्व	पूर्व	मनुष्य	अन्त्य	ब्रह्मा	मध्य	शकटाकार	५
वृषभ	मिथुन	वे वो। क की	मृगशिर	सर्प	मृ.मै.	पूर्व	देव	मध्य	चन्द्र	दक्षिण	मुगाकार	३
		कु ष ड छ	आर्द्रा	श्वान	ती.दा.	मध्य	मनुष्य	आदि	शिव	दक्षिण	मणिआकार	९
		के को हा ही	पुनर्वसु	मार्जार	च. च.	मध्य	देव	आदि	देवता	दक्षिण	गुह्यकार	४
		हु हे हो डा	पुष्य	मेष	ल.क्षी	मध्य	देव	मध्य	गुरु	मध्य	शराकार	३
कर्क	सिंह	डी डू डे डो	आश्लेषा	मार्जार	ती.दा.	मध्य	राक्षस	अन्त्य	सर्प	मध्य	चक्राकार	५
		मा मी मू मे	मघा	मूषक	उ.क्रू.	मध्य	राक्षस	अन्त्य	पितर	उत्तर	मालाकार	५
		मो टा टी टू	पूर्वफाल्गुनी	मूषक	उ.क्र.	मध्य	मनुष्य	मध्य	भग	उत्तर	शय्याकार	२
		टो टो प पी	उ. फाल्गुनी	गाय	ध्रु.स्थि.	मध्य	मनुष्य	आदि	अर्यमा	उत्तर	शय्याकार	२
कन्या	तुला	पू ष ण ठ	हस्त	महिष	ल.क्षी.	मध्य	देव	आदि	रवि	दक्षिण	हस्ताकार	५
		पे पो। रा री	चित्रा	व्याघ्र	मृ.मै.	मध्य	राक्षस	मध्य	त्वष्टा	मध्य	मोक्तिकाकार	९
		रू रे रो ता	स्वाती	महिष	च.च.	मध्य	देव	अन्त्य	वायु	उत्तर	प्रवालाकार	९
		ती तू ते। तो	विशाखा	व्याघ्र	मि.सा.	मध्य	राक्षस	अन्त्य	इग्नी	उत्तर	तोरणाकार	४
वृश्चिक	धनुः	ना नी नू ने	अनुराधा	हरिण	मृ.मै.	मध्य	देव	मध्य	मित्र	दक्षिण	बलीआकार	४
		नो या यी यू	ज्येष्ठा	मृग	ती.दा.	अन्त्य	राक्षस	आदि	इन्द्र	दक्षिण	कुण्डलाकार	३
		ये यो भा भी	मूल	श्वान	ती.दा.	अन्त्य	राक्षस	आदि	राक्षस	दक्षिण	सिंह पुच्छ	९९
		भू धा फा ढा	पूर्वाषाढा	वानर	उ.क्रू.	अन्त्य	मनुष्य	मध्य	दक	दक्षिण	हस्तीदन्ताकार	२
मकर	कुम्भ	भो भो जा जी	उत्तराषाढा	नकुल	ध्रु.स्थि.	अन्त्य	मनुष्य	अन्त्य	विश्वेदे	दक्षिण	शय्याकार	२
		जू जे जो खा	अभिजित	नकुल	ल.क्षी.	अन्त्य	मनुष्य	अन्त्य	ब्रह्मा	मध्य	त्रिकोणाकार	३
		खी खू खे खो	श्रवण	मर्कट	च.च.	अन्त्य	देव	अन्त्य	विष्णु	मध्य	त्रिकोणकार	३
		ग गी। गू गे	धनिष्ठा	सिंह	च.च.	अन्त्य	राक्षस	मध्यम	वसु	मध्य	मुदंगाकार	४
मीन	गुरु	गो सा सी सू	शतभिषा	अश्व	च.च.	अन्त्य	राक्षस	आदि	वरुण	मध्य	वर्तुलाकार	१००
		से सो दा दी	पू. भाद्रपद	सिंह	उ.क्रू.	अन्त्य	मनुष्य	आदि	अजक	उत्तर	मंचाकार	२
		दु थ झ ञ	उ. भाद्रपद	गाय	ध्रु.स्थि.	अन्त्य	मनुष्य	मध्य	अहिबु	उत्तर	यमलाकार	२
		दे दो च ची	रेवती	गज	म.म.	पूर्व	देव	अन्त्य	पूषा	मध्य	मुदंगाकार	२
वर्णा वश्य तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।। गणकूट भकूट च नाडी चैते गुणाः स्मृताः ।।												

१. वर्णागुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>ब्राह्मण</th><th>क्षत्रिय</th><th>वैश्य</th><th>शूद्र</th></tr> <tr> <td>कन्या</td><td>१</td><td>०</td><td>०</td><td>०</td></tr> <tr> <td>ब्राह्मण</td><td>१</td><td>१</td><td>०</td><td>०</td></tr> <tr> <td>क्षत्रिय</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td><td>०</td></tr> <tr> <td>वैश्य</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td></tr> <tr> <td>शूद्र</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td></tr> </table>		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	कन्या	१	०	०	०	ब्राह्मण	१	१	०	०	क्षत्रिय	१	१	१	०	वैश्य	१	१	१	१	शूद्र	१	१	१	१	४. वरवध्वोर्गुणज्ञानाय कोष्ठकानि । योनिगुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>अश्व</th><th>गज</th><th>मेष</th><th>सर्प</th><th>श्वान</th><th>मार्जार</th><th>मूषक</th><th>गौ</th><th>महिष</th><th>व्याघ्र</th><th>मृग</th><th>वानर</th><th>नकुल</th><th>सिंह</th></tr> <tr> <td>अश्व</td><td>४</td><td>२</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>०</td><td>१</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td></tr> <tr> <td>गज</td><td>२</td><td>४</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>१</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>०</td></tr> <tr> <td>मेष</td><td>३</td><td>३</td><td>४</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>१</td><td>३</td><td>०</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td></tr> <tr> <td>सर्प</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>४</td><td>२</td><td>१</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td><td>०</td><td>२</td><td>२</td></tr> <tr> <td>श्वान</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>४</td><td>१</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>०</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td></tr> <tr> <td>मार्जार</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>१</td><td>१</td><td>४</td><td>०</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td></tr> <tr> <td>मूषक</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td><td>२</td><td>०</td><td>४</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>३</td><td>२</td><td>१</td><td>२</td></tr> <tr> <td>गौ</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>४</td><td>३</td><td>०</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td></tr> <tr> <td>महिष</td><td>०</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>४</td><td>१</td><td>३</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td></tr> <tr> <td>व्याघ्र</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>०</td><td>१</td><td>४</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>३</td></tr> <tr> <td>मृग</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>२</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>३</td><td>१</td><td>२</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td></tr> <tr> <td>वानर</td><td>२</td><td>२</td><td>०</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>४</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td></tr> <tr> <td>नकुल</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>०</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>४</td><td>२</td></tr> <tr> <td>सिंह</td><td>१</td><td>०</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>२</td><td>१</td><td>१</td><td>३</td><td>१</td><td>२</td><td>२</td><td>४</td></tr> </table>			अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह	अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१	गज	२	४	३	२	२	३	३	३	१	३	२	२	२	०	मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	१	३	०	१	१	१	सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	१	०	२	२	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	०	२	२	२	२	मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२	मूषक	३	२	२	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२	गौ	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१	महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१	व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३	मृग	३	३	३	२	३	३	३	३	३	१	२	१	२	२	वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	४	२	२	२	नकुल	२	२	२	०	२	२	१	१	२	२	२	२	४	२	सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४	७. भकूट गुणाः वर�ः <table border="1"> <tr> <th></th><th>मेष</th><th>वृष</th><th>मिथुन</th><th>कर्क</th><th>सिंह</th><th>कन्या</th><th>तुला</th><th>वृश्चिक</th><th>धन</th><th>मकर</th><th>कुम्भ</th><th>मीन</th></tr> <tr> <td>मेष</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td></tr> <tr> <td>वृष</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td></tr> <tr> <td>मिथुन</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td></tr> <tr> <td>कर्क</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td></tr> <tr> <td>सिंह</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td></tr> <tr> <td>कन्या</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td></tr> <tr> <td>तुला</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>०</td></tr> <tr> <td>वृश्चिक</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td></tr> <tr> <td>धन</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td></tr> <tr> <td>मकर</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td></tr> <tr> <td>कुम्भ</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td></tr> <tr> <td>मीन</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>०</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td><td>०</td><td>७</td><td>७</td></tr> </table>			मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	सिंह	०	७	०	७	०	७	०	७	०	०	७	०	कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	०	०	०	७	तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	०	०	०	वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	मीन	०	७	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
कन्या	१	०	०	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
ब्राह्मण	१	१	०	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
क्षत्रिय	१	१	१	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
वैश्य	१	१	१	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
शूद्र	१	१	१	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																								
	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	१	३	२	२	२	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	१	३	०	१	१	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	१	०	२	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	०	२	२	२	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
मूषक	३	२	२	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
गौ	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
मृग	३	३	३	२	३	३	३	३	३	१	२	१	२	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	४	२	२	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	१	२	२	२	२	४	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																														
	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
सिंह	०	७	०	७	०	७	०	७	०	०	७	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	०	०	०	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	०	०	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
मीन	०	७	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
२. वश्यगुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>च.</th><th>मा.</th><th>ज.</th><th>व.</th><th>कीट</th></tr> <tr> <td>कन्या</td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>चतुष्पाद</td><td>२</td><td>१</td><td>११</td><td>०</td><td>१</td></tr> <tr> <td>मानव</td><td>१</td><td>२</td><td>१</td><td>०</td><td>१</td></tr> <tr> <td>जलचर</td><td>११</td><td>१</td><td>२</td><td>१</td><td>१</td></tr> <tr> <td>वनचर</td><td>०</td><td>०</td><td>१</td><td>२</td><td>०</td></tr> <tr> <td>कीट</td><td>१</td><td>१</td><td>१</td><td>०</td><td>२</td></tr> </table>		च.	मा.	ज.	व.	कीट	कन्या						चतुष्पाद	२	१	११	०	१	मानव	१	२	१	०	१	जलचर	११	१	२	१	१	वनचर	०	०	१	२	०	कीट	१	१	१	०	२	५. गणगुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>देव</th><th>मनुष्य</th><th>राक्षस</th></tr> <tr> <td>कन्या</td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>देव</td><td>६</td><td>५</td><td>१</td></tr> <tr> <td>मनुष्य</td><td>६</td><td>६</td><td>०</td></tr> <tr> <td>राक्षस</td><td>०</td><td>०</td><td>६</td></tr> </table> ६. नाडीगुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>आदि</th><th>मध्य</th><th>अन्त्य</th></tr> <tr> <td>कन्या</td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>आदि</td><td>०</td><td>८</td><td>८</td></tr> <tr> <td>मध्य</td><td>८</td><td>०</td><td>८</td></tr> <tr> <td>अन्त्य</td><td>८</td><td>८</td><td>०</td></tr> </table>			देव	मनुष्य	राक्षस	कन्या				देव	६	५	१	मनुष्य	६	६	०	राक्षस	०	०	६		आदि	मध्य	अन्त्य	कन्या				आदि	०	८	८	मध्य	८	०	८	अन्त्य	८	८	०	८. ग्रह मैत्री गुणाः वरः <table border="1"> <tr> <th></th><th>रवि</th><th>चन्द्र</th><th>मंगल</th><th>बुध</th><th>गुरु</th><th>शुक्र</th><th>शनि</th></tr> <tr> <td>कन्या</td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>रवि</td><td>५</td><td>५</td><td>५</td><td>४</td><td>५</td><td>०</td><td>०</td></tr> <tr> <td>चन्द्र</td><td>५</td><td>५</td><td>४</td><td>१</td><td>४</td><td>१</td><td>१</td></tr> <tr> <td>मंगल</td><td>५</td><td>४</td><td>५</td><td>११</td><td>५</td><td>३</td><td>१</td></tr> <tr> <td>बुध</td><td>५</td><td>१</td><td>११</td><td>५</td><td>११</td><td>५</td><td>४</td></tr> <tr> <td>गुरु</td><td>५</td><td>४</td><td>५</td><td>११</td><td>५</td><td></td></tr></table>		रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	कन्या								रवि	५	५	५	४	५	०	०	चन्द्र	५	५	४	१	४	१	१	मंगल	५	४	५	११	५	३	१	बुध	५	१	११	५	११	५	४	गुरु	५	४	५	११	५																																																																																																																																																																																																																																																																																																	
	च.	मा.	ज.	व.	कीट																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
कन्या																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																												
चतुष्पाद	२	१	११	०	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
मानव	१	२	१	०	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
जलचर	११	१	२	१	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
वनचर	०	०	१	२	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
कीट	१	१	१	०	२																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
	देव	मनुष्य	राक्षस																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
कन्या																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																												
देव	६	५	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
मनुष्य	६	६	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
राक्षस	०	०	६																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
	आदि	मध्य	अन्त्य																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
कन्या																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																												
आदि	०	८	८																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
मध्य	८	०	८																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
अन्त्य	८	८	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
कन्या																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																												
रवि	५	५	५	४	५	०	०																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
चन्द्र	५	५	४	१	४	१	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
मंगल	५	४	५	११	५	३	१																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
बुध	५	१	११	५	११	५	४																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
गुरु	५	४	५	११	५																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							

संवत् २०८० शक: १९४५ वर्षे विवाह मुहूर्ता: रेखा सहिता:

माह	दि.	सन् २०२३
मई	१	वैशाख शुक्ल ११ चन्द्रे उफायां. लग्न १० रे.६ ।।।।।।।।।।
मई	२	वैशाख शुक्ल १२ भौमे उफायां. लग्न रात्रौ अ. गोधूलि रे.८ ।।।।।।।।।। (मिथुने सोप्रांग: मं, अ. गोधुल्यां सोप्रांग: के)
मई	२	वैशाख शुक्ल १२ भौमे हस्ते रात्रौ लग्न ८, ११ रे.७ ।।।।।।।।।। (कुंभे सोप्रांग: श)
मई	३	वैशाख शुक्ल १३ बुधे हस्ते रात्रौ लग्न अ. गोधूलि रे.८ ।।।।।।।।।। (मिथुने सोप्रांग: मं, अ. गोधुल्यां सोप्रांग: के)
मई	१०	ज्येष्ठ कृष्ण ५ बुधे उपायां रात्रौ लग्न गोधूलि, ८, ६, ११, १ रे.७ ।।।।।।।।।। (गोधुल्यां सोप्रांग: के, धनुषि चं १ २१/४६ यावत्, शु ७ पूज्य:, कुंभे सोप्रांग: श, मेपे शु ३ दोष:, के ७ दोष:) दग्धा परिहारे
मई	२१	ज्येष्ठ शुक्ल २ रवौ मृगे रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ८, ६, ११, १ रे.१० ।।।।।।।।।। (कर्के सोप्रांग: मं, धनुषि चं. ६ २१/४४ यावत् तदुपरांत ७ पूज्य:, शु ७ पूज्य:, कुंभे सोप्रांग: श, मेपे शु ३ दोष:, के ७ दोष:)
मई	२६	ज्येष्ठ शुक्ल ७ शुके मघा. रात्रौ लग्न ११, १, २ रे.६ ।।।।।।।।।। (कुंभे चं ७ पूज्य:, सोप्रांग: श, मेपे शु ३ दोष:, के ७ दोष:, वृषे सोप्रांग: सू)
मई	२८	ज्येष्ठ शुक्ल ८ रवौ उफायां रात्रौ लग्न १, २ रे.८ ।।।।।।।।।। (मेपे शु ३ दोष:, के ७ दोष:, वृषे सोप्रांग: सू)
मई	२९	ज्येष्ठ शुक्ल ९ चंद्रे उफायां. रात्रौ लग्न गोधूलि, ६, ११ रे.८ ।।।।।।।।।। (वृषे सोप्रांग: सू, कर्के सोप्रांग: मं, धनुषि शु ७ पूज्य:, कुंभे सोप्रांग: श)
मई	२९	ज्येष्ठ शुक्ल ९ चंद्रे हस्ते रात्रौ लग्न २ रे.६ ।।।।।।।।।। (वृषे सोप्रांग: सू)
मई	३०	ज्येष्ठ शुक्ल १० भौमे हस्ते लग्न गोधूलि रे.६ ।।।।।।।।।। (वृषे सोप्रांग: सू, कर्के सोप्रांग: मं)
जून	३	ज्येष्ठ शुक्ल १४ शनौ अनुरा. रात्रौ लग्न १ रे.८ ।।।।।।।।।। (कर्के सोप्रांग: मं, मेपे के ७ दोष:) (भद्रा ११/१६ से २२/१८ यावत्)
जून	५	आषाढ़ कृष्ण १ चंद्रे मूले रात्रौ लग्न गोधूलि रे.८ ।।।।।।।।।।
जून	६	आषाढ़ कृष्ण ३ भौमे उषा. रात्रौ लग्न १, २ रे.८ ।।।।।।।।।। (भद्रा २४/५२ यावत्) (मेपे के ७ दोष:, वृषे शु ३ दोष:, सोप्रांग: सू) गणितेन क्रातिसाम्याऽभावः
जून	७	आषाढ़ कृष्ण ४ बुधे उपायां. रात्रौ लग्न गोधूलि, रे.७ ।।।।।।।।।। (वृषे शु ३ दोष:, सोप्रांग: कर्के चं ७ पूज्य:, सोप्रांग: मं) गणितेन क्रातिसाम्याऽभावः
जून	११	आषाढ़ कृष्ण रवौ उभायां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ६, १, २ रे.७ ।।।।।।।।।। (कन्या. चं ७ पूज्य:, मेपे के ७ दोष:, वृषे शु ३ दोष:, सोप्रांग: सू)
जून	१२	आषाढ़ कृष्ण ९ चंद्रे रेवत्यां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि रे.८ ।।।।।।।।।। (कन्या. चं. ७ पूज्य:) (भद्रा २१/५७ से)
जून	२३	आषाढ़ शुक्ल ५ शुके मघा. रात्रौ लग्न अ. गोधूलि १, २ रे.८ ।।।।।।।।।। (मिथुने सोप्रांग: सू, कर्के सोप्रांग: मं., वृश्चिके बु ७ पूज्य:, अ. गोधुल्यां मं ८, मेपे के ७ दोष:, वृषे शु ३ दोष:)
जून	२५	आषाढ़ शुक्ल ७ रवौ उफायां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि रे.७ ।।।।।।।।।। (अ. गोधुल्यां मं ८) (भद्रा २४/२६ से)
नवम्बर	२७	कार्तिक शुक्ल १५ रोहि. रात्रौ लग्न ६, ७, ८ रे.६ ।।।।।।।।।। (कन्या. रा ७ दोष:, सोप्रांग: के, तुला गु ७ पूज्य:, वृश्चिके चं ७ पूज्य:, सोप्रांग: सू मं)
नवम्बर	२८	मार्गशीर्ष १ भौमे मृगे रात्रौ लग्न ३, ४, ६, ७, ८ रे. ६ ।।।।।।।।।। (मिथुने बु ७ पूज्य:, कर्के शु दोष: कन्या. रा ७ दोष:, सोप्रांग: के, तुला. गु ७ पूज्य:, वृश्चिके सोप्रांग: सू मं)
दिसम्बर	४	मार्गशीर्ष कृष्ण ७ चंद्रे मघा. रात्रौ लग्न ४ रे. ७ ।।।।।।।।।। (भद्रा ८/४३ यावत्)

दिसम्बर	६	मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुधे हस्ते रात्रौ लग्न ८ रे. ६ ।।।।।।।।।। (वृश्चिके सोप्रांग: सू मं, धनुषि रा ४ दोष:) (भद्रा १६/१४ से २६/१० यावत्)
दिसम्बर	१५	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शुके उपायां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ३, ४, ६, ७, ८ रे. ६ ।।।।।।।।।। (अ. गोधुल्यां मं ७, मिथुने बु ७ पूज्य:, कर्के चं. ७ पूज्य:, कन्या. रा ७ दोष:, सोप्रांग: के, तुला गु ७ पूज्य:, वृश्चिके सोप्रांग: सू मं)
सन् २०२४		
जनवरी	१६	पौष शुक्ल ६ भौमे उभायां रात्रौ लग्न ८ रे.८ ।।।।।।।।।।
जनवरी	२०	पौष शुक्ल १० शनौ रोहि. रात्रौ लग्न ८ रे.७ ।।।।।।।।।। (भद्रा ३१/२४ से) (वृश्चिके चं ७ पूज्य:), गणितेन क्रातिसाम्याऽभावः
जनवरी	३०	माघ कृष्ण ४ भौमे हस्ते रात्रौ लग्न ७, ८, ६, १० रे.६ ।।।।।।।।।। (तुला, शु ३ दोष:, गु ७ पूज्य:, धनुषि रा ४ दोष:, सोप्रांग: मं, मकरे सोप्रांग: सू)
जनवरी	३१	माघ कृष्ण ५ बुधे हस्ते रात्रौ लग्न गोधूलि, ७ रे.६ ।।।।।।।।।। (मकरे सोप्रांग: सू, कुंभे सोप्रांग: श, तुला शु ३ दोष:, गु ७ पूज्य:)
फरवरी	४	माघ कृष्ण ६ रवौ अनुरा. रात्रौ लग्न अ. गोधूलि ६, ७, ६ रे.७ ।।।।।।।।।। (मकरे सोप्रांग: सू, कुंभे सोप्रांग: श, वृषे चं ७ पूज्य:, कन्या. रा ७ दोष:, सोप्रांग: के, तुला. शु ३ दोष:, गु ७ पूज्य:, धनुषि रा दोष: सोप्रांग: मं) (भद्रा २६/४५ से)
फरवरी	१२	माघ शुक्ल ३ चंद्रे उभायां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ६, ८, ६ रे.६ ।।।।।।।।।। (अ. गोधुल्यां मं ७, कन्या. रा ७ दोष:, चं ७ पूज्य:, सोप्रांग: के, वृश्चिके शु ३ दोष:, धनुषि रा ४ दोष:) (भद्रा २८/११ से)
फरवरी	१८	माघ शुक्ल ९ रवौ मृगे रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ६, ७, ८, ६ रे.७ ।।।।।।।।।। (कन्या रा ७ दोष:, सोप्रांग: के, तुला, गु ७ पूज्य:, वृश्चिके शु ३ दोष:, धनुषि रा ४ दोष:, चं ७ पूज्य:)
मार्च	४	फाल्गुन कृष्ण ८ चंद्रे मूले रात्रौ लग्न ७, ८, १०, ११ रे. ७ ।।।।।।।।।। (तुला. गु ७ पूज्य:, वृश्चिके शु ३ दोष:, मकरे सोप्रांग: मं, कुंभे सोप्रांग: सू श)
मार्च	६	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधे उपायां रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ७, ८, ६, ११ रे.८ ।।।।।।।।।। (तुला, गु ७ पूज्य:, वृश्चिके शु ३ दोष:, धनुषि रा ४ दोष:, कुंभे सोप्रांग: सू श)

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

संवत् २०८० शक: १९४५ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा शनिवार दिनांक २६ अक्टूबर, सन् २०२३ के दिन खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा।

स्टे.टा.	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घन्टा	१	१	२	१
मिनट	५	४५	२३	१८

मिथुन, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ राशि को शुभ सिंह, तुला, धनु, मीन राशि को मध्यम मेष, वृषभ, कन्या, मकर राशि को अशुभ

जिनका जन्म नक्षत्र अश्विनी हो, उनको अधिक अनिष्ट। ग्रहण का वेध शनिवार दिन के ३ बजके ७ मिनट से प्रारम्भ होता है। अतः उस समय के पूर्व ही भोजन कर लेना चाहिए। जलपान भी शनिवार रात्रि के ६ बजके २६ मिनट के पूर्व ही किया जा सकेगा। बाल, वृद्ध, आतुर तथा बिना यज्ञोपवीत के बालक शनिवार के दिन रात्रि ६ बजके २६ मिनट के पूर्व ही (प्रसाद) भोजन ले सकेंगे।

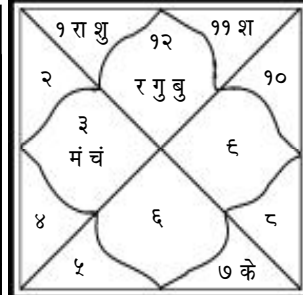
श्री वल्लभाब्दः ५४५ चैत्र शुक्लपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ मार्च-अप्रैल सन् २०२३ उत्तरायणे वसन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
																		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प									
१	बु	३४	१६	उ.भा.	२२	१६	शु	६	३६	किं	७	२८	३०	१	३	६	६	११	६	५८	०१	५६	३६	मीने								संवत्सरारम्भः। नवरात्रारम्भः। शोभननाम संवत्सरारम्भः	
२	गु	२६	२१	रे	१८	४६	ऐ	५२	४४	बा	२	५०	२५	२	२३	३७	४७	११	७	५७	३७	५६	३३	मेघे	१८	४६						चन्द्रदर्शनम् मु.३० पंचक समाप्त दिनके २ बजके ८ मिनट पर A	
३	शु	२६	०१	अ	१६	५६	वै	४७	४६	ग	२६	०१	२७	३	२४	३६	४७	११	८	५७	१०	५६	३१	मेघे								भ.प्र.५५/१७, गणगौरी (चूंदड़ी गणगौर) रेवत्यां बुधः ३२/२३	
४	श	२४	३२	भ	१६	५२	वि	४४	२२	वि	२४	३२	३०	४	२५	३५	४७	११	९	५६	४१	५६	२६	वृषे	३२	०५						भ.नि.२४/३२, पंचरंगी लेहरियाँ (हरि गणगौर) रेवत्यां ३ गुरुः १४/३०	
५	र	२४	५६	कृ	१८	३६	प्री	४२	२७	बा	२४	५६	३५	५	२६	३४	४८	११	१०	५६	१०	५६	२७	वृषे								गुलाबी गणगौर	
६	चं	२७	१६	रो	२२	१७	आ	४१	५७	तै	२७	१६	३८	६	२७	३३	४८	११	११	५५	३७	५६	२४	मिथुने	५४	४२						यमुना छट्ट, केसरी गणगौर, श्री गुसाई जी के छट्टेला जी श्री यदुनाथ जी का उत्सवB	
७	मं	३१	१६	मृ	२७	३२	सौ	४२	३७	व	३१	१६	४३	७	२८	३२	४६	११	१२	५५	०१	५६	२२	मिथुने								भ.प्र.३१/१६	
८	बु	३६	३४	आ	३४	०२	शो	४४	१४	वि	३	५७	४५	८	२६	३१	४६	११	१३	५४	२३	५६	२०	मिथुने								भ.नि.३/५७, बुधाष्टमी	
९	गु	४२	३४	पुन	४१	१४	अ	४६	२२	बा	६	३४	५०	९	३०	३०	५०	११	१४	५३	४३	५६	१८	कर्के	२४	२४						रामनवमी व्रतम्, गुरु पुष्यामृत योग रात्रि के ११ बजे से सूर्योदय तक	
१०	शु	४८	४७	पु	४८	४२	सु	४८	३७	तै	१५	४१	५२	१०	३१	२६	५०	११	१५	५३	०१	५६	१५	कर्के								रामनवमी व्रत की पारणा, पश्चिमे अस्तं गुरुः अश्विनी मेघे च बुधः २१/१८ C	
११	श	५४	४२	आ	५५	५२	धृ	५०	४२	व	२१	४५	५७	११	४	२८	५१	११	१६	५२	१६	५६	१३	सिंहे	५५	५२						भ.प्र.२१/४५, नि.५४/४२, श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई, D	
१२	र	५६	५७	म	६०	०	शू	५२	१५	ब	२७	२०	३१	१२	२	२७	५१	११	१७	५१	२६	५६	११	सिंहे									
१३	चं	६०	०	म	२७	०	गं	५३	०५	कौ	३२	७	२	१३	३	२६	५१	११	१८	५०	४०	५६	८	सिंहे								सोम प्रदोषः कृतिकायां भृगुः २१/४०	
१३	मं	०४	१५	पू.फ़.	८	०	वृ	५३	०५	तै	४	१५	७	१४	४	२५	५२	११	१६	४६	४८	५६	०६	कन्यायां	२४	१३							
१४	बु	०७	२०	उ.फ़.	१२	३०	ध्रु	५२	१०	व	७	२०	१०	१५	५	२४	५२	११	२०	४८	५४	५६	०५	कन्यायां								भ.प्र.७/२०, नि.३८/१८	
१५	गु	६	१५	ह	१५	४७	व्या	५०	२२	ब	६	१५	३१	१६	४	२३	५२	११	२१	४७	५६	५६	०२	तुलायां	४७	०						पूर्णिमाव्रतम्, वैशाख स्नानारम्भः, वृषभे भृगुः ११/३०	

अयनांशः २४/१०/४३

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

चैत्र शुक्ल ८ बुधे इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	११	११	०	१०	०	०	६
१३	७	२५	२४	२०	८	११	११	
५४	३३	३१	१३	१८	१४	२४	२४	
०६	१५	४८	३८	५८	१५	५२	५२	
५६	३०	११५	१५	७१	६	३	३	
२०	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	

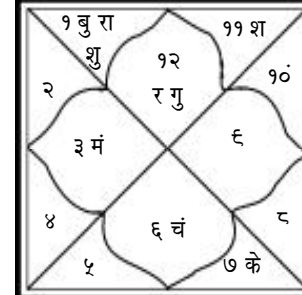


“अथ श्रीमद्भागवतदशम-
स्कंधार्थानुक्रमणिका”

श्रीकृष्णाय नमः

॥राजप्रश्नो हरेर्जन्मकारणं भूमिसालनम्॥
कंसबोधनषट्पुत्रवधः कंसभयं नृपु॥१॥
मायाज्ञापनदेवादितुतिः कृष्णसमुद्भवः॥
वर्णनं कृष्णरूपस्य वसुदेवस्य संस्तुतिः॥२॥
देवक्यादिपुराकृत्यकथनं जगदीशितुः॥
गोकुले नयनं कन्यामारणे तद्धिभाषणम्॥३॥
सालनं वसुदेवस्य मोचनं भार्यया सह॥
कंसदुर्मन्त्रवैद्येषु साधुबाल उपद्रवः॥४॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/१०/४४

चैत्र शुक्ल १५ गुरौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	०	११	०	१०	०	०	६
२१	११	६	२६	२६	६	१०	१०	
४७	३४	३३	०६	४६	०३	५६	५६	
२७	०६	१४	३१	३४	१३	५३	५३	
५६	३०	८८	१४	७०	६	३	३	
०२	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	

A भरण्यां भृगुः ८/४०

B बुधोदय पश्चिमे आर्द्रायां भौमः ११/०५

C रेवत्यां रविः ४७/५०

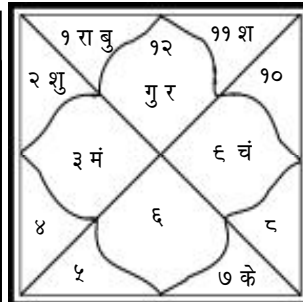
D कामदा ११ व्रतम् (लौंग-चारोली)

श्री वल्लभाब्दः ५४५ वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ अप्रेल सन् २०२३ उत्तरायणे वसन्तर्तुः ग्रीष्मर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के								
																		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प		रे.	आर्द्रा.	अश्वि.	रे.	कृ.	शते.	अश्वि.	स्वा.	
१	शु	१०	०	चि	१८	०	ह	४७	३७	कौ	१०	०	$\frac{३१}{१७}$	१७	$\frac{४}{७}$	$\frac{६}{२२}$	$\frac{६}{५३}$	११	२२	४६	५८	५६	०	तुलायां			श्री एकलिंगजी का पाटोत्सव							
२	श	९	३७	स्वा	१६	०५	व	४४	०५	ग	९	३७	२०	१८	८	२१	५३	११	२३	४५	५८	५८	५८	तुलायां			भ.प्र.३८/५५, रेवत्यां ४ गुरुः ७/३३ भरण्यां बुधः ४३/४०							
३	र	८	१२	वि	१६	१२	सि	३६	४५	वि	८	१२	२२	१६	६	२०	५३	११	२४	४४	५६	५८	५७	वृश्चिके	४	१६	भ.नि.८/१२, चतुर्थी व्रतम्							
४	चं	५	५०	अ	१८	२२	व्य	३४	४२	बा	५	५०	२५	२०	१०	२०	५४	११	२५	४३	५३	५८	५५	वृश्चिके										
५	मं	२	३२	ज्ये	१६	४२	व	२८	५७	तै	२	३२	२७	२१	११	१६	५४	११	२६	४२	४८	५८	५३	धनुषि	१६	४२	भ.प्र.५८/२७							
६	मं	५८	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
७	बु	५३	३६	मू	१४	१८	प	२२	३७	वि	२६	०३	३०	२२	१२	१८	५४	११	२७	४१	४१	५८	५१	धनुषि			भ.नि.२६/०३, श्री विठ्ठलनाथजी का पाटोत्सवः							
८	गु	४८	१६	पू.षा	११	०६	शि	१५	४४	बा	२१	५६	३२	२३	१३	१८	५५	११	२८	४०	३२	५८	५०	मकरे	२५	१६								
९	शु	४२	२६	उ.षा	७	२६	सि	८	२४	तै	१५	२४	३७	२४	१४	१७	५६	११	२६	३६	२२	५८	४८	मकरे			अश्विनी मेषे च रविः २१/४५ मेष संक्रान्तिः सतुआ उत्थापन अथवा A							
१०	श	३६	२२	श्र	$\frac{३}{५६}$	$\frac{२४}{०४}$	सा	$\frac{०}{५२}$	$\frac{४७}{५४}$	व	९	२६	४०	२५	१५	१६	५६	०	०	३८	१०	५८	४६	कुम्भे	३१	१६	भ.प्र.६/२६, नि.३६/२२, पंचक प्रारम्भ सायं ६ बजके ४३ मिनट पर B							
११	र	३०	०६	श	५४	४६	शु	४५	०१	ब	३	१४	४५	२६	१६	१५	५७	०	१	३६	५६	५८	४४	कुम्भे			वरुथिनी ११ व्रतम् (खरबूजा) श्री वल्लभाचार्याणां प्रादुर्भावोत्सवः (१५३५) C							
१२	चं	२३	५६	पू.भा	५०	४१	ब्र	३७	१६	तै	२३	५६	५२	२७	१७	१३	५८	०	२	३५	४०	५८	४३	मीने	३६	४०	सोम प्रदोषः							
१३	मं	१८	१४	उ.षा	४७	०६	ऐ	२६	५६	व	१८	१४	५७	२८	१८	१२	५६	०	३	३४	२३	५८	४१	मीने			भ.प्र.१८/१४, नि.४५/४०							
१४	बु	१३	०६	रे	४४	१८	वै	२३	०८	श	१३	०६	$\frac{३२}{०}$	२६	१६	११	५६	०	४	३३	०४	५८	३६	मेघे	४४	१८	पंचक समाप्त रात्रि के ११ बजके ५२ मिनट पर							
३०	गु	८	५३	अ	४२	३३	वि	१७	०८	ना	८	५३	$\frac{३२}{०२}$	३०	$\frac{४}{२०}$	$\frac{६}{१०}$	$\frac{६}{५६}$	०	५	३१	४२	५८	३७	मेघे			अमावस्या, ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भः							

अयनांशः २४/१०/४५

वैशाख कृष्ण ८ गुरौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	०	११	१	१०	०	६
२८	१५	१७	२७	७	६	१०	१०
३६	१०	५३	५०	५७	४४	३६	३६
५१	०४	४८	३०	२०	१०	५४	५४
५८	३२	४६	१५	७०	५	३	३
५०	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

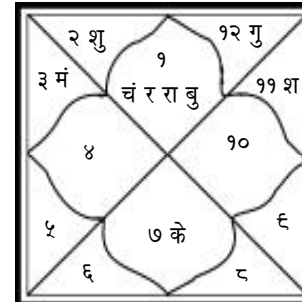


प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

मेष संक्रान्ति

वैशाख कृष्ण ६ भृगो इष्ट २१/४५ समये गर करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं गजः उपवाहनं गर्दभः भीतिः फलं मारकतं वस्त्रं नीलमुपवस्त्रं धनुष्यायुधं दुग्धं भक्ष्यं गोरचन लपेनं पशुजातिः बिल्वं पुष्पं लौह भोजनपात्रं मुकुटं भूषणं सीता कञ्चुकी नर्मदा स्नानं प्रौढावस्था मुहूर्ताः ३० साम्यार्धफलं (धान्यादि भाव समान) वारनाम मिश्राः पञ्चवः सुखिनः नक्षत्र नाम चराः चौराः सुखिनः वत्स पश्चिमे राहु दक्षिणे मूलं पाताले।

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/१०/४६

वैशाख कृष्ण ३० गुरौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	२	०	११	१	१०	०	६
५	१८	२१	२६	१६	१०	१०	१०
३०	५१	२१	३१	१	२१	१४	१४
४४	५४	६	२६	५७	६	५५	५५
५८	३२	५	१५	६६	५	३	३
३७	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A भोग में पुण्यकाल मध्याह्न से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त रोहिण्यां भृगुः ४५/४८

B शते २ शनिः ५५/५०

C श्री वल्लभाब्द ५४६ का प्रारम्भः

श्री वल्लभाब्दः ५४६ वैशाख शुक्लपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ अप्रेल-मई सन् २०२३ उत्तरायणे ग्रीष्मर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्र			प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के अश्वि. आर्द्रा. भ. रे. रो. शते. अश्वि. स्वा.							
														वै.	उ.	अ.		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प								
१	शु	५	५३	भ	४२	०८	प्री	१२	०८	ब	५	५३	$\frac{३२}{७}$	१	$\frac{४}{२१}$	$\frac{६}{६}$	$\frac{७}{०}$	०	६	३०	१६	५८	३५	वृषे	५७	१५	चन्द्रदर्शनम् मु. १५, व.ग. बुधः १६/५३ अश्विनी मेघे च गुरुः ५७/४५					
२	श	४	१७	कृ	४३	१२	आ	८	१५	कौ	४	१७	१०	२	२२	८	$\frac{७}{०}$	०	७	२८	५४	५८	३४	वृषे			परशुराम जयन्ती, पुनर्वसो भौमः ६/३३					
३	र	४	१५	रो	४५	५२	सौ	५	३७	ग	४	१५	१५	३	२३	७	$\frac{७}{१}$	०	८	२७	२८	५८	३१	वृषे			भ.प्र.३५/०२, अक्षय तृतीया जल कुम्भदानम्, पश्चिमे अस्तं बुधः पुनर्वसो A					
४	चं	५	४६	मृ	५०	०४	शो	४	१७	वि	५	४६	१७	४	२४	६	१	०	९	२५	५६	५८	२६	मिथुने	१७	४७	भ.नि.५/४६, अश्विनी ३ राहुः स्वात्यां १ केतुः ४५/१८					
५	मं	८	५६	आ	५५	४१	अ	४	०६	बा	८	५६	२२	५	२५	५	२	०	१०	२४	२८	५८	२७	मिथुने			श्री रामानुजाचार्य जयन्ती एवं आद्यशंकराचार्य जयन्ती					
६	बु	१३	३१	पुन	६०	००	सु	५	०६	तै	१३	३१	२५	६	२६	४	२	०	११	२२	५५	५८	२५	कर्के	४५	३५	मृगशिरायां भृगुः २३/४८, पूर्वोदयः गुरु					
७	गु	१६	०	पुन	२	२०	धृ	६	५०	व	१६	०	२७	७	२७	४	२	०	१२	२१	२०	५८	२३	कर्के			भ.प्र.१६/०, नि.५२/०, तिलकायित श्री लाल गिरधारीजी महाराज का उत्सव B					
८	शु	२५	०	पु	६	३७	शू	६	०	ब	२५	०	३०	८	२८	३	३	०	१३	१६	४३	५८	२१	कर्के			भरण्यां रविः १/३५					
९	श	३०	५४	आ	१६	५४	गं	११	१४	कौ	३०	५४	३२	१६	२६	२	३	०	१४	१८	०४	५८	१६	सिंहे	१६	५४						
१०	र	३६	११	म	२३	४४	वृ	१३	०६	तै	३	३३	३५	१०	३०	२	४	०	१५	१६	२३	५८	१६	सिंहे			रवि दशमी					
११	चं	४०	२६	पू.फा	२६	३८	धृ	१४	२१	व	८	१६	३७	११	$\frac{५}{१}$	१	४	०	१६	१४	३६	५८	१५	कन्याया	४५	५४	भ.प्र.८/१६, नि.४०/२६, मोहिनी ११ व्रतम् (गोतक)					
१२	मं	४३	१७	उ.फा	३४	१५	व्या	१४	३५	ब	११	५२	४२	१२	२	$\frac{६}{०}$	५	०	१७	१२	५४	५८	१२	कन्याया			मिथुने भृगुः १६/३५					
१३	बु	४४	३६	ह	३७	२४	ह	१३	४२	कौ	१३	५८	४५	१३	३	$\frac{५}{५६}$	५	०	१८	११	०६	५८	११	कन्याया			प्रदोषः					
१४	गु	४४	२६	चि	३६	०३	व	११	३६	ग	१४	३३	४५	१४	४	५६	५	०	१९	०६	१७	५८	६	तुलायां	८	२६	भ.प्र.४४/२६, श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्					
१५	शु	४२	४८	स्वा	३६	१५	सि	८	१८	वि	१३	३७	$\frac{३३}{५०}$	१५	$\frac{५}{५}$	$\frac{७}{५८}$	०	२०	७	२५	५८	७	तुलायां			भ.नि.१३/३७, पूर्णिमाव्रतम्, वैशाख स्नान की समाप्ति, अश्विनी २ गुरुः ५६/१३						

अयनांशः २४/१०/४७

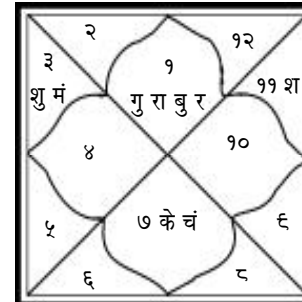
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

वैशाख शुक्ल ८ भृगौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	२	०	०	१	१०	०	६
१३	२३	१६	१	२५	११	६	६
१८	१०	३१	२६	८	०	४६	४६
२७	४६	१४	२१	३४	०७	५६	५६
५८	३३	३३	१५	६७	५	३	३
२१	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	११	११



प्रादुर्भूते व्रजे कृष्णे व्रजराज महोत्सवः॥
 मथुरागमनं नंदवसुदेवसमागमः॥५॥
 पूतनासुपयःपानं नंदगोपादिविस्मयः॥
 शकटव्यत्ययो दैत्यचक्रवातवधः शिशोः॥६॥
 संलालने मुखे धात्र्या जुंभणे विश्वदर्शनम्॥
 रामकेशवयोर्नाम्नः करणं केलिरेतयोः॥७॥
 धौर्त्यं गोपवधूगेहे प्रसंगाद्भक्षणं मृदः॥
 दर्शनं विश्वरूपस्य नंदभाग्यपुराकथा॥८॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/१०/४८

वैशाख शुक्ल १५ भृगौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	२	०	०	२	१०	०	६
२०	२७	१५	३	२	११	६	६
५	१	१२	६	५८	३०	२६	२६
५८	४१	१७	१७	१६	०५	५६	५६
५८	३४	३६	१४	६६	४	३	३
०७	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	११	११

A भौमः ६/३५

B गुरु पुष्यामृत योग प्रातः ६ बजके ५६ मिनट से सूर्योदय तक।

श्री वल्लभाब्दः ५४६ ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ मई सन् २०२३ उत्तरायणे ग्रीष्मर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्रः			प्रतिपदि सू. मं बु गु. शु श रा के भ. पुन. भ. अश्वि. मृग. शते. अश्वि. स्वा.								
														वै	उ.	अ.		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प.									
१	श	३६	५२	वि	३८	१२	व्य	३	५४	बा	११	२०	३२	१६	५	५	७	०	२१	०५	३२	५८	०६	वृश्चिके	२३	३४							
२	र	३५	५१	अ	३६	०३	प	५२	२१	तै	७	५२	५७	१७	७	५६	७	०	२२	०३	३८	५८	०४	वृश्चिके			चार स्वरूप का उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत						
३	चं	३१	०	ज्ये	३३	०८	शि	४५	३५	व	३	२६	३३	१८	८	५५	७	०	२३	०१	४२	५८	०२	धनुषि	३३	०८	भ.प्र.३/२६, नि.३१/०, चतुर्थी व्रतम्, कली के शृंगार प्रारम्भः, आद्रायां A						
४	मं	२५	३७	मू	२६	३७	सि	३८	२२	बा	२५	३७	२	१६	६	५५	८	०	२३	५६	४४	५८	०१	धनुषि									
५	बु	१६	५१	पू.षा	२५	४६	सा	३०	५६	तै	१६	५१	५	२०	१०	५४	८	०	२४	५७	४५	५८	०	मकरे	३६	४६	कर्क भौमः १६/४३						
६	गु	१३	५७	उ.षा	२१	५०	शु	२३	२७	व	१३	५७	७	२१	११	५४	६	०	२५	५५	४५	५७	५६	मकरे			भ.प्र.१३/५७, नि.४१/०२, कृतिकायां रविः ४७/३०						
७	शु	०८	०६	श्र	१७	५६	शु	१६	०१	ब	८	०६	१२	२२	१२	५३	१०	०	२६	५३	४४	५७	५७	कुम्भे	४६	०३	पंचक प्रारम्भ रात्रि के १२ बजके १७ मिनित पर						
८	श	०२	२७	घ	१४	१७	ब्र	८	४५	कौ	२	२७	१२	२३	१३	५३	१०	०	२७	५१	४१	५७	५६	कुम्भे			बुधोदय पूर्व						
९	श	५७	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
१०	र	५२	१६	श	११	०	ऐ	१	४६	व	२४	४२	१७	२४	१४	५२	११	०	२८	४६	३७	५७	५४	मीने	५३	५०	भ.प्र.२४/४२, नि.५२/१६						
११	चं	४८	०	पू.भा	८	१२	वि	४६	०५	ब	२०	०८	२०	२५	१५	५२	१२	०	२९	४७	३१	५७	५३	मीने			अपरा ११ व्रतम् (तर कांकडी) वृषभे रविः १४/४४ मा.ग. बुधः ७/२०						
१२	मं	४४	२४	उ.भा	६	०१	प्री	४३	३१	कौ	१६	१२	२२	२६	१६	५१	१२	१	०	४५	२४	५७	५२	मीने			पुष्ये भौमः १५/२३						
१३	बु	४१	३७	रे	४	३२	आ	३८	३७	ग	१३	०१	२५	२७	१७	५१	१३	१	१	४३	१६	५७	५१	मेघे	४	३२	भ.प्र.४१/३७, पंचक समाप्त प्रातः ७ बजके ३८ मिनित पर, प्रदोषः						
१४	गु	३६	४३	अ	३	५१	सौ	३४	२६	वि	१०	४०	२७	२८	१८	५०	१३	१	२	४१	०७	५७	५०	मेघे			भ.नि.१०/४०						
३०	शु	३८	५५	भ	४	१०	शो	३१	०७	च	६	१६	३३	२६	५	५०	१३	१	३	३८	५६	५७	४८	वृषे	१६	२४	अमावस्या, वट सावित्री व्रतम्						

अयनांशः २४/१०/४६

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

वृषभ संक्रान्ति

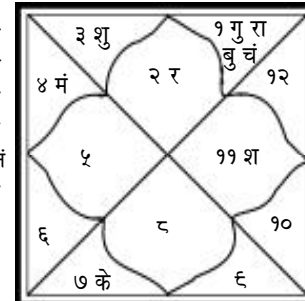
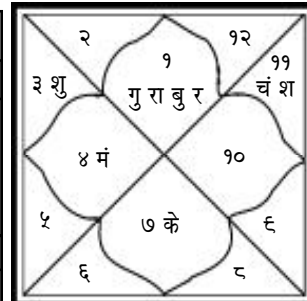
ज्येष्ठ कृष्ण ११ चन्द्रे इष्ट १४/४४ समये बव करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः समं फलं श्वेत वस्त्रं श्वेतमुपवस्त्रं भुशुण्ड्या युधं अन्नं भक्ष्यं कस्तूरी लेपनं देवता जाति पुन्नाग पुष्पं सुवर्ण भोजनपात्रं नुपूर भूषणं विचित्र कञ्चुकी गंगास्नानं बालावस्था मुहूर्ताः ४५ समर्थं फलं (धान्यादि भाव सस्ता) वार नाम ध्वांक्षी वैश्यः सुखिनः नक्षत्र नाम स्थिरा विप्रः सुखिनः वत्स उत्तरे राहुः पश्चिमे मूलं पाताले।

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/१०/५०

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शनौ इष्ट ०१०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	०	०	२	१०	०	६
२७	१	११	४	११	१२	६	६
४६	२६	५०	५८	४२	०	१	१
५६	३१	५३	१३	५६	५७	५७	५७
५७	३४	८	१४	६५	३	३	३
५६	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	११	११



ज्येष्ठ कृष्ण ३० भृगौ इष्ट ०१०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	३	०	०	२	१०	०	६
३	४	१२	६	१८	१२	८	८
३७	५३	१४	२०	०७	१६	४२	४२
०६	२७	१६	११	५०	०२	५७	५७
५७	३४	२०	१४	६३	२	३	३
४८	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A भृगुः २१/२०, व.ग. अश्विनी ४, बुधः २४/४०

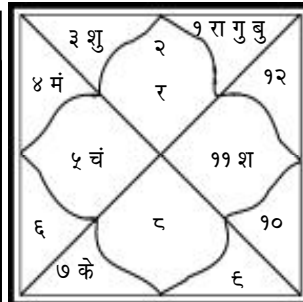
श्री वल्लभाब्दः ५४६ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ मई-जून सन् २०२३ उत्तरायणे ग्रीष्मर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा. वै.	अं उ.	र. अ.	प्रा. स्प. रवि.			गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के कृ. पुष्ये. अश्वि. अश्वि. आर्द्रा. शते. अश्वि. स्वा.	
																	स्टे.टा.	०६:३५		क.	वि.	राशि	घ.	प			
१	श	३६	१६	कृ	५	३३	अ	२८	४१	किं	६	०६	$\frac{३३}{३०}$	३०	$\frac{५}{२०}$	$\frac{५}{५०}$	$\frac{७}{१४}$	१	४	३६	४४	५७	४७	वृषे		अश्वि ३ गुरु: २६/१०, पुनर्वसु भृगु: ४७/५	
२	र	४०	५४	रो	८	०६	सु	२७	१७	बा	१०	०५	३२	३१	२१	४६	१४	१	५	३४	३१	५७	४५	मिथुने	३६	५५	चन्द्रदर्शनम् मु.३०, भरण्यां बुध: ४४/५५
३	च	४३	४८	मृ	१२	०३	धृ	२६	५३	तै	१२	२१	३२	ज्ये.	२२	४६	१४	१	६	३२	१६	५७	४४	मिथुने			प्रताप जन्मदिन
४	मं	४७	५६	आ	१७	०६	शू	२७	२६	व	१५	५२	३५	२	२३	४६	१५	१	७	३०	०	५७	४२	मिथुने			भ.प्र.१५/५२, नि.४७/५६, अंगारकी चतुर्थी
५	बु	५३	०४	पुन	२३	१७	गं	२८	४६	ब	२०	३०	३७	३	२४	४८	१५	१	८	२७	४२	५७	४१	कर्के	६	३६	श्री के नाव का मनोरथ
६	गु	५८	५३	पु	३०	१५	वृ	३०	५०	कौ	२५	५६	४०	४	२५	४८	१६	१	९	२५	२३	५७	४०	कर्के			रोहिण्यां रवि: ३८/०, गुरु पुष्यामृत योग सूर्योदयसे सायं ५ बजके ५३ मिनट तक
७	शु	६०	०	आ	३७	३८	ध्रु	३३	११	ग	३१	५२	४२	५	२६	४८	१६	१	१०	२३	०३	५७	३७	सिंहे	३७	३८	
७	श	४	५१	म	४४	५१	व्या	३५	२४	व	४	५१	४५	६	२७	४७	१७	१	११	२०	४०	५७	३७	सिंहे			भ.प्र.४/५१, नि.३७/३६
८	र	१०	२७	पू.फा	५१	२५	ह	३७	१२	ब	१०	२७	४६	७	२८	४७	१७	१	१२	१८	१७	५७	३५	सिंहे			
९	चं	१५	०८	उ.फा	५६	४८	व	३८	०५	कौ	१५	०८	४८	८	२६	४७	१८	१	१३	१५	५२	५७	३३	कन्यायां	७	५३	
१०	मं	१८	२६	ह	६०	०	सि	३७	५१	ग	१८	२६	५०	९	३०	४६	१८	१	१४	१३	२५	५७	३२	कन्यायां			भ.प्र.४६/१४, गंगादशमी, गंगा दशहरा, कर्के भृगु: ३४/४३
११	बु	२०	०१	ह	०	३६	व्य	३६	११	वि	२०	०१	५२	१०	३१	४६	१९	१	१५	१०	५७	५७	३१	तुलायां	३१	५०	भ.नि.२०/०१, निर्जला ११ व्रतम् (आम)
१२	गु	१६	४७	चि	२	३७	व	३३	०४	बा	१६	४७	५२	११	$\frac{६}{१}$	४६	१९	१	१६	०८	२८	५७	२६	तुलायां			प्रदोषः
१३	शु	१७	३६	स्वा	२	४६	प	२८	२६	तै	१७	३६	५५	१२	२	४६	२०	१	१७	०५	५७	५७	२८	वृश्चिके	४६	४८	ति. श्री गिरधारीजी महाराज का उत्सव, पुष्ये भृगु: ५८/२८
१४	श	१३	५०	वि	$\frac{१}{५८}$	$\frac{३१}{१५}$	शि	२२	३५	व	१३	५०	५६	१३	३	४६	$\frac{७}{२०}$	१	१८	०३	२५	५७	२८	वृश्चिके			भ.प्र.१३/५०, नि.४१/१४, स्नान का जल भरना
१५	र	८	३८	ज्ये	५४	०५	सि	१५	३३	ब	८	३८	$\frac{३३}{५७}$	१४	$\frac{६}{४}$	$\frac{५}{५८}$	$\frac{७}{२१}$	१	१६	०	५२	५७	२६	धनुषि	५४	०५	पूर्णिमा व्रतम्, स्नान यात्रा (ज्येष्ठाभिषेक) अश्वि ४ गुरु: ४०/१८

अयनांशः २४/१०/५१

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

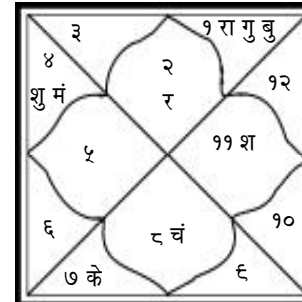
ज्येष्ठ शुक्ल ८ रवौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	३	०	०	२	१०	०	६	
१२	१०	१७	८	२७	१२	८	८	
१६	२	३६	२१	२४	४१	१३	१३	
२१	२५	३६	६	४३	०१	५८	५८	
५७	३५	५५	१३	६१	२	३	३	
३५	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	



चौर्यं हैयंगवस्याथ बंधनं दामभिर्बलात्॥
 यमलार्जुनताशापो भंगश्चैव स्तुतिस्तयोः॥६॥
 वालक्रीडोपनंदादिमंत्रणं गमनं ततः॥
 वृंदावने तयोः क्रीडा वयस्यैर्वनचारिणोः॥१०॥
 वत्सासुरस्य च वधो बक्राशसुरयोरपि॥
 भोजनं सखिभिस्तीरे यमुनाया हरेर्मुदा॥११॥
 वत्सापाहरणं धात्रा कृष्णत्वं वत्सपालयोः॥
 ब्रह्मणो मोहगमनं स्तुतिः कृष्णरतिर्गतिः॥१२॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/१०/५२



ज्येष्ठ शुक्ल १५ रवौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	३	०	०	३	१०	०	६	
१८	१४	२५	६	४	१२	७	७	
५८	६	११	५१	१६	५२	५१	५१	
५७	२४	५३	६	४०	०१	५८	५८	
५७	३४	७६	१३	५७	२	३	३	
२६	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	

श्री वल्लभाब्दः ५४६ आषाढ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ जून सन् २०२३ उत्तरायणे ग्रीष्मर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गति:	चन्द्र	प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
														ज्ये.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	रो.	पुष्ये.	भ.	अश्वि.	पुष्ये.	शते.	अश्वि.	स्वा.
१	चं	२	१५	मू	४६	०५	सा	७	३८	०८	कौ	२	१५	३३	१५	६	५	१	१६	५८	१८	५७	२६	धनुषि							कृतिकायां बुधः ८/५८
२	चं	५५	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०								
३	मं	४७	४३	पू.षा	४३	४०	शु	५०	२३	व	२१	२७	३४	१६	६	४६	२२	१	२०	५५	४४	५७	२४	मकरे	५७	१८					भ.प्र.२१/२७, नि.४७/४३
४	बु	४०	१६	उ.षा	३८	१३	ब्र	४१	३६	व	१४	०	१	१७	७	४६	२२	१	२१	५३	०८	५७	२४	मकरे							चतुर्थी व्रतम्, वृषभे बुधः ३५/००
५	गु	३३	०६	श्र	३३	०६	ऐ	३३	०३	कौ	६	४१	२	१८	८	४६	२२	१	२२	५०	३२	०	२३	मकरे							आश्लेषायां भौमः २३/५५, मृगशिरायां रविः ३२/५०
६	शु	२६	३१	घ	२८	३१	वै	२५	०३	व	२६	३१	३	१६	८	४६	२३	१	२३	४७	५५	५७	२३	कुम्भे	०	४२					भ.प्र.२६/३१, नि.५३/३७, पंचक प्रारम्भ प्रातः ६ बजके १ मिनट पर
७	श	२०	४३	श	२४	४६	वि	१७	४१	ब	२०	४३	४	२०	१०	४६	२३	१	२४	४५	१८	५७	२२	कुम्भे							
८	र	१५	५३	पू.भा	२१	५८	प्री	११	०३	कौ	१५	५३	५	२१	११	४६	२४	१	२५	४२	४०	५७	२२	मीने	७	३३					
९	चं	१२	०६	उ.भा	२०	११	आ	५	१८	ग	१२	०६	६	२२	१२	४६	२४	१	२६	४०	०२	५७	२१	मीने							भ.प्र.४०/४३
१०	मं	६	२०	रे	१६	२८	सौ	०	२५	वि	६	२०	७	२३	१३	४६	२५	१	२७	३७	२३	५७	२०	मेघे	१६	२८					भ.नि.६/२०, पंचक समाप्त दिनके १ बजके ३३ मिनट पर रोहिण्यां बुधः ५६/२५
११	बु	०७	४०	अ	१६	४८	अ	५३	०८	बा	७	४०	८	२४	१४	४६	२५	१	२८	३४	४३	५७	२०	मेघे							योगिनी ११ व्रतम् (मिश्री)
१२	गु	७	००	भ	२१	०७	सु	५०	४२	तै	७	००	६	२५	१५	४६	२६	१	२९	३२	०३	५७	२०	वृषे	३६	३५					प्रदोषः मिथुने रविः ३१/१७
१३	शु	७	१७	कृ	२३	२५	धृ	४६	०२	व	७	१७	१०	२६	१६	४६	२६	२	०	२६	२३	५७	२०	वृषे							भ.प्र.७/१७, नि.३७/५७
१४	श	८	३७	रो	२६	३६	शू	४८	०६	श	८	३७	११	२७	१७	४६	२६	२	१	२६	४३	५७	१८	मिथुने	५८	३८					आश्लेषायां भृगुः ३६/२५, व.ग. शनिः ४३/०३
३०	र	१०	५४	मृ	३०	५१	गं	४८	०४	ना	१०	५४	३४	२८	६	५	७	२	२	२४	०१	५७	१६	मिथुने							अमावस्या, ति. बड़े श्री गिरधारी जी महाराज का उत्सव

अयनांशः २४/१०/५३

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

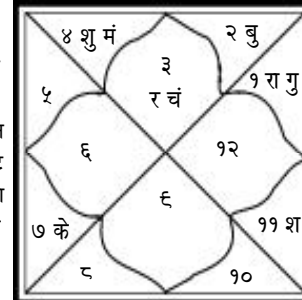
आषाढ कृष्ण ८ रवौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	३	१	०	३	१०	०	६
२५	१८	५	११	१०	१३	७	७
४०	११	८	१६	५१	०	२६	२६
४५	२५	८	०८	३८	०	५८	५८
५७	३५	६७	१२	५४	०	३	३
२२	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११



मिथुन संक्रान्ति

आषाढ कृष्ण १२-१३ गुरौ इष्ट ३१/१७ समये गर करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं गजः उपवाहनं गर्दभः भीतिः फलं मारकतं वस्त्रं नीलमुपवस्त्रं धनुष्यायुधं दुग्धं भक्ष्यं गोरचन लपेनं पशुजातिः बिल्वं पुष्पं लौह भोजनपात्रं मुकुट भूषणं सीता कञ्चुकी नर्मदा स्नानं प्रौढावस्था मुहूर्ता ३० साम्यार्थं फलं (धान्यादि भाव सस्ता) वार नाम नन्दा विप्राः सुखिनः नक्षत्र नाम उग्राः शुद्राः सुखिनः वत्स उत्तरे पश्चिमे राहुः मूलं स्वर्गो.

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/१०/५४

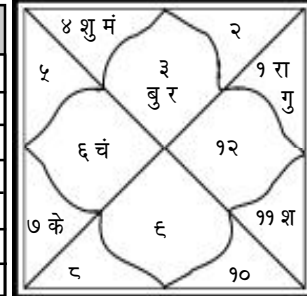
आषाढ कृष्ण ३० रवौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	३	१	०	३	१०	०	६
२	२२	१७	१२	१६	१३	७	७
२२	१६	२०	४२	५७	२	६	६
०६	२५	२१	०८	३४	०	५८	५८
५७	३६	११५	१२	४६	०	३	३
१६	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	११	११

श्री वल्लभाब्दः ५४६ आषाढ शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ जून-जुलाई सन् २०२३ उत्तरायणे ग्रीष्मर्तुः दक्षिणायने वर्षर्तुश्चः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः		चन्द्रः		प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के					
																					क.	वि.	राशि	घ.										प	मृगे.	आश्ले.	रो.	अश्वि.
१	चं	१४	११	आ	३६	०१	वृ	४८	४१	ब	१४	११	$\frac{३४}{११}$	२६	$\frac{६}{१६}$	$\frac{५}{४६}$	$\frac{७}{२६}$	२	३	२१	२०	५७	१७	मिथुने			चन्द्रदर्शनम् मु. १५											
२	मं	१८	२६	पुन	४२	०६	ध्रु	५०	०३	कौ	१८	२६	११	३०	२०	४७	२७	२	४	१८	३७	५७	१७	कर्के	२५	३०												
३	बु	२३	३०	पु	४८	५८	व्या	५२	०	ग	२३	३०	११	३१	२१	४७	२७	२	५	१५	५४	५७	१७	कर्के			भ.प्र.५६/२३, रथयात्रा, दक्षिणायनारम्भः वर्षा ऋतु का प्रारम्भः, पूर्वे अस्तं बुधः A											
४	गु	२६	१५	आ	५६	२०	ह	५४	२२	वि	२६	१५	१०	आ	२२	४७	२७	२	६	१३	११	५७	१५	सिंहे	५६	२०	भ.नि.२६/१५, आर्द्रायां रविः ३०/०५, स्त्री.स्त्री.चं.चं. वाहनम् मेघः											
५	शु	३५	१६	म	६०	०	व	५६	५२	ब	२	१७	६	२	२३	४८	२७	२	७	१०	२६	५७	१५	सिंहे			श्री द्वारकाधीश जी का पाटोत्सव											
६	श	४१	१८	म	३	४८	सि	५६	०८	कौ	८	१६	६	३	२४	४८	२७	२	८	०७	४१	५७	१५	सिंहे			कसूभा छट्ट, गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज गद्दी विराजे B											
७	र	४६	३५	पू.फा	११	०	व्य	६०	०	ग	१३	५७	८	४	२५	४८	२७	२	९	४	५६	५७	१४	कन्यायां	२७	४१	भ.प्र.४६/३५, भानु सप्तमी											
८	चं	५०	४५	उ.फा	१७	२०	व्य	०	४७	वि	१८	४०	८	५	२६	४८	२७	२	१०	०२	१०	५७	१३	कन्यायां			भ.नि.१८/४०, अश्विनी २ राहुः चित्रायां ४ केतुः ३६/४०											
९	मं	५३	१४	ह	२२	१६	व	०१	२६	बा	२२	०	७	६	२७	४८	२७	२	१०	५६	२३	५७	१३	तुलायां	५४	१०	आर्द्रायां बुधः २३/४५											
१०	बु	५३	४८	चि	२५	३१	प	$\frac{०}{५८}$	$\frac{५१}{३८}$	तै	२३	३१	७	७	२८	४६	२८	२	११	५६	३६	५७	१२	तुलायां			बैंगन दशमी											
११	गु	५२	१७	स्वा	२६	४५	सि	५४	४७	व	२३	०३	७	८	२६	४६	२८	२	१२	५३	४८	५७	१२	तुलायां			भ.प्र.२३/०३, नि.५२/१७ देवशयनी ११ व्रतम् (अंगूर) चातुर्मास नियमारम्भः C											
१२	शु	४८	४२	वि	२५	५४	सा	४६	१७	ब	२०	३०	६	६	३०	४६	२८	२	१३	५१	०	५७	११	वृश्चिके	११	१७	मघायां सिंहे च रविः ५१/०५											
१३	श	४३	१८	अ	२३	०८	शु	४२	१८	कौ	१६	०	६	१०	$\frac{७}{१}$	४६	२८	२	१४	४८	११	५७	११	वृश्चिके			शनि प्रदोषः											
१४	र	३६	२२	ज्ये	१८	४२	शु	३४	०२	ग	६	५०	५	११	२	५०	२८	२	१५	४५	२२	५७	११	धनुषि	१८	४२	भ.प्र.३६/२२											
१५	चं	२८	१६	मू	१३	०१	ब्र	२४	४६	वि	२	१६	$\frac{३४}{५}$	१२	$\frac{७}{३}$	$\frac{५}{२०}$	$\frac{७}{२८}$	२	१६	४२	३२	५७	११	धनुषि			भ.नि.२/१६, पूर्णिमाव्रतम्, व्यास पूर्णिमा, पर्वात्मकोत्सव, पुनर्वसो बुधः ३१/२०											

अयनांशः २४/१०/५६

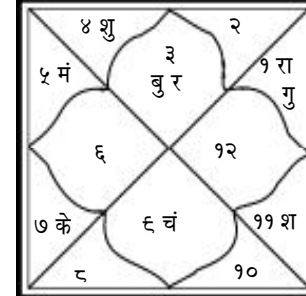
आषाढ शुक्ल ८ सोमे इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	३	२	०	३	१०	०	६	
१०	२७	३	१४	२३	१२	६	६	
०	०५	३८	१३	११	५७	४१	४१	
१५	२५	३१	८	३०	५६	५८	५८	
५७	३६	१३०	११	४३	१	३	३	
१३	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	११	११	



प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

गोचारणे महाकाय धेनुकादिवधस्तथा॥
 ब्रज आगमनं कृष्णो गोपीनेत्रमहोत्सवः॥१३॥
 मृतान् विषांभः पानेन गोपान् हरिरजीवयत्॥
 कालीयदमने स्तोत्रं तद्भार्याणां प्रलापनम्॥१४॥
 हृदे कालीयसंबंधकथनं वस्मिचनम्॥
 क्रीडाप्रलंबनिधनं दावाग्नेर्मोचनं गवाम्॥
 वर्षाशरद्वर्णनं च गोपीनां वचनामृतम्॥१५॥
 व्रतं गोकुलकन्यानां वस्त्राणां हरणं मुदा॥
 वनभाग्यकथा गोपप्रार्थना प्रेषणं मखे॥१६॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/१०/५७

आषाढ शुक्ल १५ सोमे इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	४	२	०	३	१०	०	६	
१६	१	१८	१५	२७	१२	६	६	
४०	१७	५२	२७	४६	४६	१६	१६	
४४	२६	४३	०८	२६	५६	५७	५७	
५७	३६	१२६	१०	३६	१	३	३	
११	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	११	११	

A मृगशिरायां बुधः ३/४८, भरण्यां १ गुरुः १५/५०

B (२०५७) मिथुने बुधः १७/१५

C कली के शृंगार पूर्ण, ति. महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्धन किया जा सकेगा।

श्री वल्लभाब्दः ५४६ शुद्ध श्रावण (गु. आषाढ) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ जुलाई सन् २०२३ दक्षिणायने वर्षर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः		चन्द्रः		प्रतिपदि		सू. मं बु गु शु श रा के आर्द्रा. म. आर्द्रा. भ. आश्ले. शते. अश्वि. चि.					
														आ	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प.									
१	मं	१६	३१	पू.षा	६ ५६	२८ ३३	ऐ	१४	५८	कौ	१६	३१	३४ ०४	१३	७ ०४	५ ५१	७ २८	२	१७	३६	४३	५७	११	मकरे	१६	४५						
२	बु	१०	३०	श्र	५२	४५	वै	०४ ५४	५२ ५५	ग	१०	३०	३	१४	५	५१	२८	२	१८	३६	५४	५७	१०	मकरे			भ.प्र.३६/०६, हिन्दोलारम्भः					
३	गु	१	४१	घ	४६	२६	प्री	४५	२४	वि	१	४१	०१	१५	६	५२	२८	२	१६	३४	०४	५७	११	कुम्भे	१६	२६	भ.नि.१/४१, श्री चन्द्रमा जी का पाटोत्सवः, चतुर्थी व्रतम्, पंचक प्रारम्भ A					
४	गु	५३	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०						
५	शु	४६	०८	श	४१	०३	आ	३६	३५	कौ	१६	४७	३४ ०	१६	७	५२	२८	२	२०	३१	१५	५७	१२	कुम्भे								
६	श	४०	०२	पू.भा	३६	५२	सौ	२८	४७	ग	१३	०५	३३ ५६	१७	८	५३	२८	२	२१	२८	२७	५७	११	मीने	२२	४५	भ.प्र.४०/०२, कर्कें बुधः १६/०					
७	र	३५	२१	उ.भा	३४	०३	शो	२२	०८	वि	७	४२	५८	१८	६	५३	२८	२	२२	२५	३८	५७	१२	मीने			भ.नि.७/४२, पुष्ये बुधः ५४/३३					
८	चं	३२	१०	रं	३२	४७	अ	१६	४२	बा	३	४६	५६	१६	१०	५३	२७	२	२३	२२	५०	५७	१३	मेघे	३२	४७	जन्माष्टमी की बधाई, पंचक समाप्त सायं ६ बजे के ५६ मिनट पर, B					
९	मं	३०	३१	अ	३२	५६	सु	१२	२६	तै	१	२१	५४	२०	११	५४	२७	२	२४	२०	०३	५७	१२	मेघे								
१०	बु	३०	१७	भ	३४	३५	धृ	६	२५	व	०	२४	५२	२१	१२	५४	२७	२	२५	१७	१५	५७	१४	वृषे	५०	१२	भ.प्र.०/२४, नि.३०/१७, श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज का उत्सव, (हांडी उत्सव)					
११	गु	३१	१६	कृ	३७	२६	शू	७	२६	ब	०	४८	५०	२२	१३	५४	२७	२	२६	१४	२६	५७	१४	वृषे			कामिका ११ व्रतम् (मिश्री)					
१२	शु	३३	२८	रो	४१	२३	गं	६	२३	कौ	२	२४	४८	२३	१४	५५	२६	२	२७	११	४३	५७	१४	वृषे								
१३	श	३६	३७	मृ	४६	१२	वृ	६	०७	ग	५	०३	४७	२४	१५	५५	२६	२	२८	८	५७	५७	१५	मिथुने	१३	३६	भ.प्र.३६/३७, शनि प्रदोषः					
१४	र	४०	३३	आ	५१	५१	ध्रु	६	३३	वि	८	३५	४६	२५	१६	५५	२६	२	२६	६	१२	५७	१५	मिथुने			भ.नि.८/३५, कर्कें रविः ५७/५६, आश्लेषायां बुधः ५५/५५					
३०	चं	४५	१७	पुन	५८	०६	व्या	७	३४	च	१२	५५	२६ ४४	२६	७ १७	५ ५६	७ २६	३	०	३	२८	५७	१६	कर्कें	४१	३०	सोमवती अमावस, हरियाली अमावस्या					

अयनांशः २४/१०/५६

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

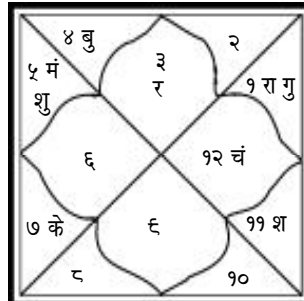
कर्क संक्रान्ति

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

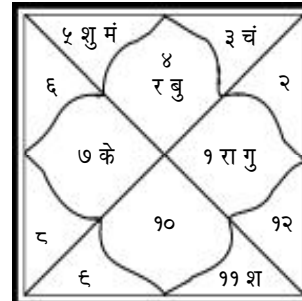
अयनांशः २४/११/०

शुद्ध श्रावण कृष्ण ८ सोमे इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	४	३	०	४	१०	०	६
२३	५	३	१६	१	१२	५	५
२१	३१	३०	३५	२६	३७	५७	५७
१३	३७	५६	१०	२५	५७	५७	५७
५७	३७	११६	१०	२५	३	३	३
१३	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	११	११



शुद्ध श्रावण कृष्ण १४-३० रवौ इष्ट ५७/५६
समये चतुष्पाद करणे प्रविष्टाः सुप्ता स्थितिः महर्षे
फलं वाहनं मेघः उपवाहनम् महिषः क्लेशः
फलं कम्बल वस्त्रं कुसुम मुपवस्त्रं अंकुशा युधं
मधुभक्ष्यं कज्जल लेपनं वैश्य जातिः वेला पुष्पं
करक भोजनपात्रं नीलमणि भूषणं चर्म कञ्चुकी
तुंगा स्नानं आर्तवन्ध्यावस्था मुहूर्ताः ४५ समर्थफलं
(धान्यादि भाव सस्ता) वार नाम घोराः शुद्राः सुखिनः
नक्षत्र नाम चरा चौराः सुखिनः वत्स उत्तरे पश्चिमे
राहुः मूलं भूमौ।



शुद्ध श्रावण कृष्ण ३० सोमे इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	४	३	०	४	१०	०	६
०	६	१६	१७	३	१२	५	५
१	४७	४६	३८	४४	२०	३३	३३
५६	४१	५८	६	१३	५७	५६	५६
५७	३७	१०७	८	१२	३	३	३
१६	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११

A दिनके १ बजके ३८ मिनट पर पुनर्वसो रविः २८/५८ स्त्री.पु.चं.चं. वाहनं गर्दभः मथायां सिंहे भृगुः ५५/३३

B बुधोदय पश्चिमे, भरण्यां २ गुरुः २६/३५

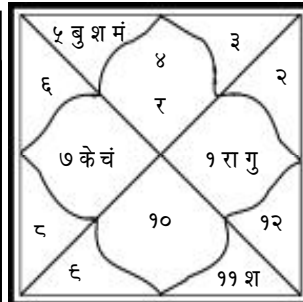
श्री वल्लभाब्दः ५४६ अधिक श्रावण शुक्लपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ अगस्त सन् २०२३ दक्षिणायने वर्षर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्र			प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के पुन. म. आश्ले. भ. म. शते. अश्वि. चि.									
														आ.	उ.	अ.		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प										
१	मं	५०	३६	पु	६०	०	ह	०६	०८	किं	१७	५७	३३ ४१	२७	७ १८	५ ५७	७ २५	३	१	०	४४	५७	१६	कर्क			पुरुषोत्तम मास का प्रारम्भः							
२	बु	५६	२७	पु	०५	०५	व	११	१२	बा	२३	३२	३६	२८	१६	५७	२५	३	१	५८	०	५७	१६	कर्क			चन्द्रदर्शनम् मु.१५							
३	गु	६०	०	आ	१२	२६	सि	१३	३३	तै	१६	३१	३६	२६	२०	५८	२४	३	२	५५	१६	५७	१७	सिंहे	१२	२६	पुष्ये रविः २७/२८, स्त्री.स्त्री.चं.चं. वाहनं गर्दभः							
३	शु	२	३५	म	२०	०२	व्य	१६	०५	ग	२	३५	३६	३०	२१	५८	२४	३	३	५२	३३	५७	१७	सिंहे			म.प्र.३५/४०							
४	श	८	४४	पू.फा	२७	३१	व	१८	३६	वि	८	४४	३२	३१	२२	५६	२४	३	४	४६	५०	५७	१७	कन्यायां	४४	२०	म.नि.८/४४, पूफायां भौमः ४४/५०							
५	र	१४	२७	उ.फा	३४	३२	प	२०	४५	बा	१४	२७	३०	श्रा	२३	५६	२३	३	५	४७	०७	५७	१८	कन्यायां			व.ग. भृगुः २/४३							
६	चं	१६	२१	ह	४०	३४	शि	२२	११	तै	१६	२१	२८	२	२४	६ ०	२३	३	६	४४	२५	५७	१८	कन्यायां			मघायां सिंहे च बुधः ५६/२३							
७	मं	२२	५५	चि	४५	१०	सि	२२	३५	व	२२	५५	२६	३	२५	६ ०	२३	३	७	४१	४३	५७	१८	तुलायां	१३	०३	म.प्र.२२/५५, नि.५३/५०							
८	बु	२४	४४	स्वा	४७	५६	सा	२१	३६	ब	२४	४४	२३	४	२६	१	२२	३	८	३६	०१	५७	१९	तुलायां			बुधाष्टमी							
९	गु	२४	३०	वि	४८	४०	शु	१६	०५	कौ	२४	३०	२१	५	२७	१	२२	३	९	३६	२०	५७	१९	वृश्चिके	३३	४०								
१०	शु	२२	०६	अ	४७	१७	शु	१४	४६	ग	२२	०६	१६	६	२८	१	२१	३	१०	३३	३६	५७	१९	वृश्चिके			म.प्र.४६/५६							
११	श	१७	४३	ज्ये	४३	५३	ब्र	८	५०	वि	१७	४३	१७	७	२६	२	२१	३	११	३०	५८	५७	१९	धनुषि	४३	५३	म.नि.१७/४३, कमला ११ व्रतम् (तुलसी पत्रं)							
१२	र	११	२४	मू	३८	४७	ऐ	१	१६	बा	११	२४	१५	८	३०	२	२०	३	१२	२८	१७	५७	२१	धनुषि			प्रदोषः							
१३	चं	०३	३३	पू.षा	३२	२१	वि	४२	३६	तै	३	३३	१२	६	३१	२	१६	३	१३	२५	३८	५७	२२	मकरे	४५	३५	म.प्र.५४/३६							
१४	चं	५४	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
१५	मं	४४	५७	उ.षा	२५	०२	प्री	३२	०४	वि	१६	४७	३३ १०	१०	८ १	६ ३	७ १९	३	१४	२३	०	५७	२२	मकरे			म.नि.१६/४७, पूर्णिमा व्रतम्, पुण्यदिनम्							

अयनांशः २४/११/०२

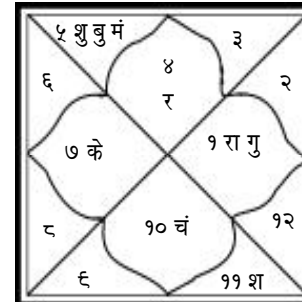
अधिक श्रावण शुक्ल ८ बुधे इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	४	४	०	४	१०	०	६
८	१५	१	१८	४	११	५	५
३७	२०	३६	४६	१४	५२	६	६
४०	४८	५५	१०	५०	५६	५६	५६
५७	३७	८६	७	८	३	३	३
१६	मा.	मा.	मा.	व.	व.	११	११



विप्रभार्याप्रसादश्च पश्चात्तापो द्विजन्मनाम्॥
यागभंगो महेंद्रस्य धृतिर्गोवर्धनस्य चा॥१७॥
सुरेंद्रगर्वहरणं गर्गगीतस्य वर्णनम्॥
गोपशंकापगमनमिन्द्रधेन्वभियाचनम्॥१८॥
नंदस्य मोक्षणं गोपवैकुण्ठागमनं ततः॥
पंचाध्याय्यां निशि क्रीडा सर्पाव्रंदस्य मोक्षणम्॥१९॥
शंखचूडवधः पश्चाद् गोपीगीतं वृषार्दनम्॥
कंसनारदसंवादः कंसाकूरकथा ततः॥२०॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/११/०३

अधिक श्रावण शुक्ल १५ भौमे इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	४	४	०	४	१०	०	६
१४	१६	१०	१६	२	११	४	४
२१	०३	४	३०	४६	३१	४७	४७
४५	५२	४८	०८	२६	५४	५६	५६
५७	३७	७७	६	२२	४	३	३
२२	मा.	मा.	मा.	व.	व.	११	११

श्री वल्लभाब्दः ५४६ अधिक श्रावण कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ अगस्त सन् २०२३ दक्षिणायने वर्षर्तुः

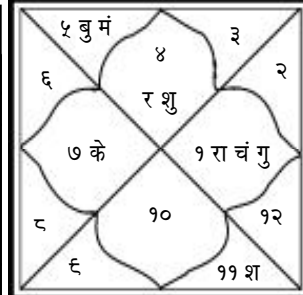
ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्र			प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के पुष्ये. पू.फा. म. भ. म. शते. अश्वि. चि.								
														श्रा.	उ.	अ.		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प									
१	बु	३५	०८	श्र	१७	१८	आ	२१	१६	बा	१०	०३	$\frac{३३}{८}$	११	$\frac{८}{२}$	$\frac{६}{३}$	$\frac{७}{१८}$	३	१५	२०	२२	५७	२३	कुम्भे	४३	२७	पंचक प्रारम्भ रात्रि के ११ बजके २७ मिनट पर						
२	गु	२५	३५	घ	६	४२	सौ	१०	३५	तै	०	२२	५	१२	३	४	१८	३	१६	१७	४५	५७	२४	कुम्भे			म.प्र.५१/०६, आश्लेषायां रविः २४/३३ स्त्री.पु.चं.सू. वाहनं महिषी A						
३	शु	१६	४३	श	$\frac{२}{५६}$	$\frac{४१}{४१}$	शो	$\frac{०}{५१}$	$\frac{२३}{०३}$	वि	१६	४३	$\frac{३३}{०}$	१३	४	४	१७	३	१७	१५	०६	५७	२५	मीने	४३	०८	म.नि.१६/४३, चतुर्थी व्रतम्						
४	श	६	०	उ.भा	५२	०५	सु	४२	४७	बा	६	०	$\frac{३२}{५६}$	१४	५	५	१६	३	१८	१२	३४	५७	२६	मीने			पश्चिमे अस्तं भृगुः						
५	र	२	४४	रे	४६	०६	घृ	३५	५४	तै	२	४४	५६	१५	६	५	१५	३	१६	१०	०	५७	२७	मेघे	४६	०६	म.प्र.५८/११, पंचक समाप्त रात्रि के १ बजके ४४ मिनट पर B						
६	र	५८	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
७	चं	५५	२५	अ	४७	५७	शू	३०	२७	वि	२६	४८	५३	१६	७	६	१५	३	२०	०७	२७	५७	२६	मेघे			म.नि.२६/४८, व.ग. कर्के भृगुः १२/१०						
८	मं	५४	२६	भा	४८	३६	गं	२६	२६	बा	२४	५६	५०	१७	८	६	१४	३	२१	०४	५६	५७	३०	मेघे									
९	बु	५५	१३	कृ	५०	५८	वृ	२३	५५	तै	२४	५०	४७	१८	६	७	१४	३	२२	०२	२६	५७	३१	वृषे	४	०१							
१०	गु	५७	३२	रो	५४	४७	ध्रु	२२	३६	व	२६	२३	४४	१६	१०	७	१३	३	२२	५६	५७	५७	३३	वृषे			म.प्र.२६/२३, नि.५७/३२						
११	शु	६०	०	मृ	५६	४८	व्या	२२	२५	ब	२६	१७	४१	२०	११	८	१२	३	२३	५७	३०	५७	३४	मिथुने	२७	०८							
११	श	१	०२	आ	६०	०	ह	२३	०७	बा	१	०२	३८	२१	१२	८	११	३	२४	५५	०४	५७	३५	मिथुने			कमला ११ व्रतम् (तुलसी पत्रम्)						
१२	र	५	३१	आ	५	४६	व	२४	२८	तै	५	३१	३४	२२	१३	६	१०	३	२५	५२	३६	५७	३७	कर्के	५५	४३	प्रदोषः उफायां भौमः ८/८						
१३	चं	१०	४५	पुन	१२	२७	सि	२६	१७	व	१०	४५	३०	२३	१४	६	६	३	२६	५०	१६	५७	३८	कर्के			म.प्र.१०/४५, नि.४३/३६						
१४	मं	१६	२६	पु	१६	३६	व्य	२८	२६	श	१६	२६	२७	२४	१५	१०	६	३	२७	४७	५४	५७	३६	कर्के			स्वतंत्रतादिनम्						
३०	बु	२२	२७	आ	२७	०	व	३०	५२	ना	२२	२७	$\frac{३२}{२४}$	२५	$\frac{७}{३६}$	$\frac{६१}{११}$	$\frac{७}{८}$	३	२८	४५	३४	५७	४१	सिंहे	२७	०	अमावस्या, पुण्यदिनम्, पुरुषोत्तम मास समाप्त						

अयनांशः २४/११/०४

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अधिक श्रावण कृष्ण ८ भौमे इष्ट ०।०

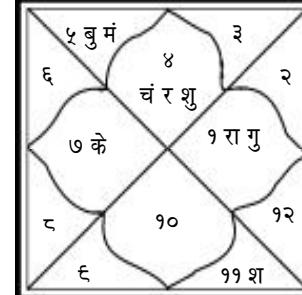
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	४	४	०	३	१०	०	६
२१	२३	१८	२०	२६	११	४	४
३	२५	२०	१०	३४	३	२४	२४
४७	५७	३२	८	०८	५४	५५	५५
५७	३८	६१	५	३५	४	३	३
३०	मा.	मा.	मा.	व.	व.	११	११



केशिनो निधनं कृष्णान्नारदर्विकथा ततः॥
 व्योमासुखधोऽक्रूरागमनं गोकुलेषु च॥२१॥
 दर्शनानंदहृष्टात्मरोमाचो गद्गदा गिरः॥
 संवादो रामकृष्णभ्यां वर्णितं कंसवेष्टितम्॥२२॥
 रामकृष्णप्रयाणं च तथा गोपीप्रलापनम्॥
 मथुरागमनं मध्ये हृदे कृष्णस्य दर्शनम्॥२३॥
 स्तुतिः पुरगतिः पश्चाद्दर्शनं पुरसंपदः॥
 रजकस्य शिरश्छेदो वायकस्य वरादयः॥२४॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/१०/०५



अधिक श्रावण कृष्ण ३० बुधे इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	४	४	०	३	१०	०	६
२८	२८	२५	२०	२४	१०	३	३
४४	२६	६	४६	४१	२६	५६	५६
३६	०५	०	७	५६	५३	५५	५५
५७	३८	३५	४	३६	४	३	३
४१	मा.	मा.	मा.	व.	व.	११	११

A पूफायां बुधः ३४/५३

B भरण्यां ३ गुरुः ३/२८

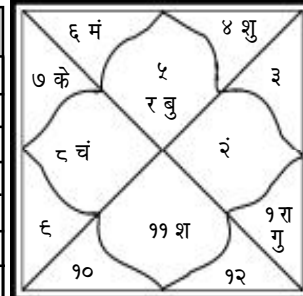
श्री वल्लभाब्दः ५४६ शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ अगस्त सन् २०२३ दक्षिणायने वर्षर्तुः शरदर्तुश्चः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः		चन्द्रः		प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	
																					क.	वि.	राशि	घ.										प
१	गु	२८	३६	म	३४	३१	प	३३	१६	ब	२८	३६	$\frac{३२}{२१}$	२७	$\frac{८}{३०}$	$\frac{६}{११}$	$\frac{७}{७}$	३	२६	४३	१५	५७	४२	सिंहे			चन्द्रदर्शनम् मु.३०, पूर्वोदय भृगुः मघायां सिंहे च रविः १८/२५ स्त्री.स्त्री. A							
२	शु	३४	४०	पू.फा	४१	५८	शि	३५	४३	बा	१	२८	१७	२७	१८	११	६	४	०	४०	५७	५७	४३	कन्यायां	५८	४६	कन्यायां भौमः २४/२०							
३	श	४०	२४	उ.फा	४६	०२	सि	३७	४६	तै	७	३२	१३	२८	१६	१२	५	४	१	३८	४०	५७	४४	कन्यायां			ठकुरानी तीज मधुस्रवा, उफायां बुधः ३/०३							
४	र	४५	२८	ह	५५	२८	सा	३६	२८	व	१२	५६	६	२६	२०	१२	४	४	२	३६	२४	५७	४६	कन्यायां			भ.प्र.१२/५६, नि.४५/२८							
५	च	४६	३५	चि	६०	०	शु	४०	२२	ब	१७	३२	०६	३०	२१	१२	३	४	३	३४	१०	५७	४६	तुलायां	२८	१७	नागपंचमी तथा सोमवती पंचमी							
६	म	५२	१६	चि	०	४६	शु	४०	१४	कौ	२०	५६	३	३१	२२	१३	२	४	४	३१	५६	५७	४८	तुलायां			वा.ग. शते १ शनिः ४१/१५							
७	बु	५३	१८	स्वा	४	५०	ब्र	३८	५०	ग	२२	४७	$\frac{३२}{०}$	भा	२३	१३	२	४	५	२६	४४	५७	४६	वृश्चिके	५१	४४	भ.प्र.५३/१८, शरद ऋतु प्रारम्भः व.ग. बुधः ४८/१५							
८	गु	५२	२७	वि	७	०६	ऐ	३५	५६	वि	२२	५३	$\frac{३१}{५७}$	२	२४	१४	१	४	६	२७	३३	५७	५०	वृश्चिके			भ.नि.२२/५३							
९	शु	४६	३६	अ	०७	३३	वै	३१	३३	बा	२१	०२	५४	३	२५	१४	$\frac{७}{०}$	४	७	२५	२३	५७	५१	वृश्चिके			सप्त स्वरूपोत्सव नि.ली.गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत							
१०	श	४४	४७	ज्ये	६	०	वि	२५	३२	तै	१७	१२	५१	४	२६	१५	$\frac{६}{५६}$	४	८	२३	१४	५७	५३	धनुषि	६	०	पश्चिमे अस्तं बुधः							
११	र	३८	१६	मू	$\frac{१}{५७}$	$\frac{३६}{३४}$	प्री	१८	०१	व	११	३३	४८	५	२७	१५	५८	४	६	२१	७	५७	५४	धनुषि			भ.प्र.११/३३, नि.३८/१६, पुत्रदा ११ व्रतम् (गुड-सिंघाड़ा) पवित्रा रोपणं B							
१२	च	३०	२३	उ.षा	५१	१३	आ	$\frac{६}{५६}$	$\frac{१५}{२८}$	ब	४	२१	४४	६	२८	१६	५७	४	१०	१६	०१	५७	५५	मकरे	११	०३	गुरुओं को पवित्रा धराना, सोम प्रदोषः, व.ग. पूजायां ४ बुधः १८/३३ C							
१३	म	२१	२४	श्र	४३	५६	शो	४८	५६	तै	२१	२४	४०	७	२६	१६	५६	४	११	१६	५६	५७	५६	मकरे			ऋग्वेदीन की श्रावणी							
१४	बु	११	५१	घ	३६	१८	अ	३८	१३	व	११	५१	३७	८	३०	१६	५५	४	१२	१४	५२	५७	५८	कुम्भे	१०	०६	भ.प्र.११/५१, नि.३६/५८, ति. श्री विठ्ठलेशरायजी का उत्सव, आपस्तम्भ D							
१५	गु	०२	०५	श	२८	४५	सु	२७	३०	ब	२	०५	$\frac{३१}{३३}$	६	$\frac{८}{३१}$	$\frac{६}{३७}$	$\frac{६}{५४}$	४	१३	१२	५१	५८	०	कुम्भे			पूर्णिमाव्रतम्, रक्षाबन्धनं प्रातः शृंगार में ७ बजके ६ मिनट पूर्व E							

अयनांशः २४/११/०६

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

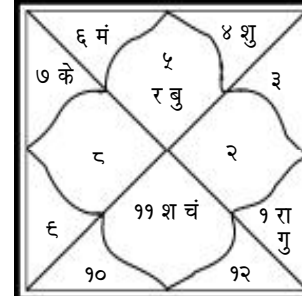
शुद्ध श्रावण शुक्ल ८ गुरौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	५	४	०	३	१०	०	६	
६	३	२७	२१	२०	६	३	३	
२६	३४	३६	११	२७	५३	३३	३३	
४१	०८	५३	०४	४५	५३	५४	५४	
५७	३८	४	२	२५	४	३	३	
५०	मा.	व.	मा.	मा.	व.	११	११	



शुद्ध श्रावण शुक्ल १ गुरौ इष्ट १८/२५ समये बव करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः समं फलं श्वेत वस्त्रं श्वेतमुपवस्त्रं भुशुण्ड्या युधं अनं भक्ष्यं कस्तूरी लेपनं देवता जाति पुन्नाग पुष्पं सुवर्णं भोजनपात्रं नुपूरं भूषणं विचित्र कञ्चुकी गंगास्नानं बालावस्था मुहूर्त्ता ३० साम्यार्थं फलं (धान्यादि भाव समान) वार नाम नन्दा विप्राः सुखिनः नक्षत्र नाम उग्राः शुद्धा सुखिनः वत्स पूर्व राहुः उत्तरे मूलं स्वर्गो

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/०७



शुद्ध श्रावण शुक्ल १५ गुरौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	५	४	०	३	१०	०	६	
१३	८	२५	२१	१८	६	३	३	
१२	३	८	२२	२०	२१	११	११	
१०	१६	३२	०२	४२	५२	५४	५४	
५८	३८	४४	१	६	४	३	३	
०	मा.	व.	मा.	व.	व.	११	११	

A चं.चं. वाहनमश्वं B प्रातः शृंगार में C अश्विनी १ राहुः चित्रायां ३ केतुः ३२/०८ D हिरण्यकेशीय यजुः अथर्ववेदीन तथा तैत्तरीयन की श्रावणी, पंचक प्रारम्भ प्रातः १० बजके २० मिनट पर E श्री दामोदरजी महाराज का उत्सव तथा नि.ली.गो.ति. श्री गोवर्द्धनलाल जी महाराज का उत्सव, पूजायां रविः ८/१० स्त्री.पु.सू.सू. वाहनं मयूरः

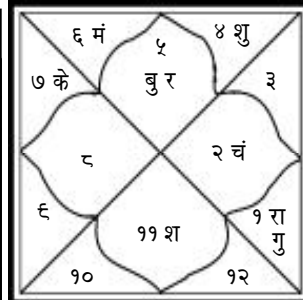
श्री वल्लभाब्दः ५४६ भाद्रपद (गु. शुद्ध श्रावण) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ सितम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने शरदर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं भा.	र. उ.	र. अ.	प्रा. स्प. रवि.				गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. पू.फा.	मं उ.फा.	बु पू.फा.	गु भ. आश्ले.	शु शते.	श अश्वि.	रा चि.	के	
																		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प												
१	गु	५२	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
२	शु	४३	५६	पू.भा	२१	४१	घृ	१७	१४	तै	१८	२०	$\frac{३१}{३०}$	१०	$\frac{६}{१}$	$\frac{६}{३१}$	$\frac{६}{५३}$	४	१४	१०	५१	५८	१	मीने	८	२१	हेमहिन्दोला									
३	श	३६	२५	उ.भा	१५	३५	शू	$\frac{७}{५६}$	$\frac{४५}{२०}$	व	१०	१२	२७	११	२	१७	५२	४	१५	८	५२	५८	३	मीने			भ.प्र.१०/१२, नि.३६/२५, कज्जली तीज									
४	र	३०	२२	रे	१०	५४	वृ	५२	१७	ब	३	२४	२२	१२	३	१८	५१	४	१६	६	५५	५८	५	मेघे	१०	५४	चतुर्थी व्रतम्, हिन्दोला विजय, पंचक समाप्त प्रातः १० बजेके ३६ मिनित पर A									
५	चं	२६	०३	अ	७	५३	घृ	४६	४३	तै	२६	०३	२०	१३	४	१८	५०	४	१७	५	०	५८	७	मेघे			मा.ग.भृगुः १/२३, व.ग. गुरुः ३३/३०									
६	मं	२३	४३	भ	६	४८	व्या	४२	४५	व	२३	४३	१६	१४	५	१८	४६	४	१८	०३	७	५८	६	वृषे	२१	४८	भ.प्र.२३/४३, नि.५३/३३									
७	बु	२३	२२	कृ	७	३७	ह	४०	१६	ब	२३	२२	१२	१५	६	१६	४८	४	१६	०१	१६	५८	१०	वृषे			श्री विष्णु स्वामि प्राकट्योत्सव, शयनेषष्ठयुत्सवः									
८	गु	२४	५३	रो	१०	१८	व	३६	१८	कौ	२४	५३	६	१६	७	१६	४७	४	१६	५६	२६	५८	१३	मिथुने	४२	१६	जन्माष्टमी व्रतम्									
९	शु	२८	०२	मृ	१४	३७	सि	३६	३०	ग	२८	०२	६	१७	८	१६	४६	४	२०	५७	३६	५८	१५	मिथुने			नन्दमहोत्सव									
१०	श	३२	२६	आ	२०	१६	व्य	४०	४१	व	०	१६	३	१८	६	२०	४५	४	२१	५५	५४	५८	१७	मिथुने			भ.प्र.०/१६, नि.३२/२६									
११	र	३७	५५	पुन	२६	५८	व	४२	३०	ब	५	१२	$\frac{३१}{२७}$	१६	१०	२०	४४	४	२२	५४	११	५८	१८	कर्के	१०	१४	अजा ११ व्रतम् (खारक), रवि पुष्यामृत योग सायं ५ बजेके ६ मिनित से B									
१२	चं	४३	५४	पु	३४	१४	प	४४	४४	कौ	१०	५५	$\frac{३०}{५७}$	२०	११	२०	४३	४	२३	५२	२६	५८	२१	कर्के												
१३	मं	५०	०६	आ	४१	४४	शि	४७	०६	ग	१७	०	५३	२१	१२	२१	४२	४	२४	५०	५०	५८	२३	सिंहे	४१	४४	भ.प्र.५०/०६, भौम प्रदोषः, बुधोदय पूर्व									
१४	बु	५६	१३	म	४६	१३	सि	४६	२८	वि	२३	१०	४८	२२	१३	२१	४०	४	२५	४६	१३	५८	२५	सिंहे			भ.नि.२३/१०, काका वल्लभाजी का उत्सव, उफायां रविः ५२/४५ C									
३०	गु	६०	०	पू.फा	५६	२४	सा	५१	३७	च	२६	०८	४५	२३	१४	२१	३६	४	२६	४७	३८	५८	२७	सिंहे			कुशग्रहणी अमावस									
३०	शु	२	०३	उ.फा	६०	०	शु	५३	२१	ना	०२	०३	$\frac{३०}{४१}$	२४	$\frac{६}{१५}$	$\frac{६}{२२}$	$\frac{६}{३८}$	४	२७	४६	०६	५८	२८	कन्यायां	१३	०७	मा.ग. बुधः ४८/४५									

अयनांशः २४/११/०८

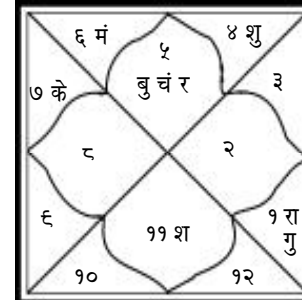
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

भाद्रपद कृष्ण ८ गुरौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	५	४	०	३	१०	०	६
१६	१२	१८	२१	१८	८	२	२
५८	३४	५३	२३	११	५०	४६	४६
५१	२२	०२	०	१७	५१	५३	५३
५८	३६	५६	०	८	४	३	३
१३	मा.	व.	व.	मा.	व.	११	११



सुदाम्नो वरदानं च कुब्जासंदर्शनं हरेः॥
धनुर्भगः सैन्यवधः कंसदुर्हेतुदर्शनम्॥२५॥
रंगोत्सवे कुवलयपीडयुद्धविधातनम्॥
दर्शनं रामकृष्णस्य पौराणं प्रेमदर्शनम्॥२६॥
मल्लानां निधनं रंगे कंसस्य सह बंधुभिः॥
पित्रोश्च सात्वतं सर्वसुहृदां परितोषणम्॥२७॥
उग्रसेनाभिषेकश्च नंदादिब्रजप्रेषणम्॥
ईषदिद्वजातिसंस्कारः पठनं च गुरोगृहे॥२८॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/११/०६

भाद्रपद कृष्ण ३० भृगौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	५	४	०	३	१०	०	६
२७	१७	१३	२१	२०	८	२	२
४५	४६	५१	१२	१२	१६	२४	२४
३७	२६	५३	५६	५३	५१	५३	५३
५८	३६	०३	२	२४	४	३	३
२८	मा.	व.	व.	मा.	व.	११	११

A हस्ते भौमः २/०३

B सूर्योदय तक

C स्त्री.स्त्री.सू.सू. वाहनं गजः

श्री वल्लभाब्दः ५४६ भाद्रपद शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ सितम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने शरदर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा. भा.	अं. उ.	र. अ.	र.	प्रा. स्टे.टा.	स्प. ०६:३५	रवि. ०६:३५	गति:		चन्द्र:			प्रतिपदि	सू. मं उ.फा. ह. पू.फा. भ. आश्ले. शते. अश्वि. चि.		
																					क.	वि.	राशि	घ.	प				
१	श	७	२२	उ.फा	३	०७	शु	५४	३७	ब	७	२२	३० ३७	२५ १६	६ २२	६ ३७	४	२८	४४	३४	५८	३१	कन्यायां				राधाष्टमी की बधाई, चन्द्रदर्शनम् मु.३०		
२	र	११	५६	ह	०६	११	ब्र	५५	१४	कौ	११	५६	३३	२६	१७	२३	३६	४	२६	४३	०५	५८	३२	तुलायां	४१	५५		सामवेदीन की श्रावणी, कन्यायां रवि: १७/५३	
३	चं	१५	४३	चि	१४	२३	ऐ	५५	०३	ग	१५	४३	३०	२७	१८	२३	३५	५	०	४१	३७	५८	३४	तुलायां				भ.प्र.४७/०३, हरतालिका व्रतम्	
४	मं	१८	२२	स्वा	१८	३५	वै	५३	५७	वि	१८	२२	२७	२८	१६	२३	३४	५	१	४०	११	५८	३६	तुलायां				भ.नि.१८/२२, गणेश चतुर्थी, अंगारकी चतुर्थी	
५	बु	१६	४६	वि	२१	२६	वि	५१	४६	बा	१६	४६	२४	२६	२०	२३	३३	५	२	३८	४७	५८	३७	वृश्चिके	५	५३		ऋषि पंचमी, द्वितीय स्वरूपोत्सव, पश्चिमे अस्तं भौमः	
६	गु	१६	४०	अ	२३	०	प्री	४८	२३	तै	१६	४०	२०	३०	२१	२४	३२	५	३	३७	२४	५८	३६	वृश्चिके				ति. श्री विठ्ठलेशजी महाराज का उत्सव	
७	शु	१८	०२	ज्ये	२२	५७	आ	४३	४२	व	१८	०२	१७	३१	२२	२४	३१	५	४	३६	०३	५८	४१	धनुषि	२२	५७		भ.प्र.१८/०२, नि.४६/२४	
८	श	१४	४६	मू	२१	२१	सौ	३७	४६	ब	१४	४६	१४	आ	२३	२४	३०	५	५	३४	४४	५८	४२	धनुषि				राधाष्टमी, भागवत सप्ताह का आरम्भ, चित्रायां भौमः २७/०	
९	र	१०	०	पू.षा	१८	१५	शो	३०	३७	कौ	१०	०	१०	२	२४	२५	२६	५	६	३३	२६	५८	४४	मकरे	३२	१४			
१०	चं	३	४६	उ.षा	१३	४७	अ	२२	२७	ग	३	४६	७	३	२५	२५	२८	५	७	३२	१०	५८	४६	मकरे				भ.प्र.३०/११, नि.५६/३२, नवलक्ष ग्रंथकर्ता श्री पुरुषोत्तम जी महाराज का उत्सव	
११	चं	५६	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१२	मं	४८	२३	श्र	८	१३	सु	१३	२१	ब	२२	२८	३	४	२६	२६	२७	५	८	३०	५६	५८	४८	कुम्भे	३५	०६		परिवर्तिनी ११ व्रतम् (बालन कांकड़ी) दान एकादशी वामन द्वादशी, A	
१३	बु	३६	४५	घ	१	५२	घृ	०३	४०	कौ	१४	०४	३०	५	२७	२६	२६	५	६	२६	४४	५८	४६	कुम्भे				प्रदोषः, गोत्रिरात्रि व्रतारम्भः, हस्ते रवि: ३३/४५, स्त्री.पु.सू.सू. वाहनं मण्डूकः	
१४	गु	३१	०१	पू.भा	४८	२६	गं	४३	४१	ग	५	२३	२६	६	२८	२७	२५	५	१०	२८	३३	५८	५२	मीने	३५	०५		भ.प्र.३१/०१, नि.५६/४७, अनन्त चतुर्दशी व्रतम्	
१५	शु	२२	३३	उ.भा	४२	१०	वृ	३४	०३	ब	२२	३३	२७	७	२६	२७	३३	५	११	२७	२६	५८	५३	मीने				पूर्णिमा व्रतम्, महालयारम्भः १ का श्राद्ध, सांझी का आरम्भ, गोत्रिरात्रि व्रत एवंB	

अयनांशः २४/११/१०

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

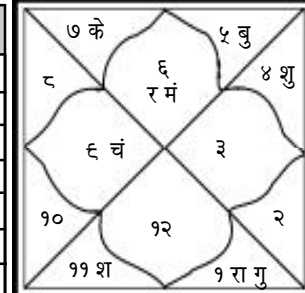
कन्या संक्रान्ति

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

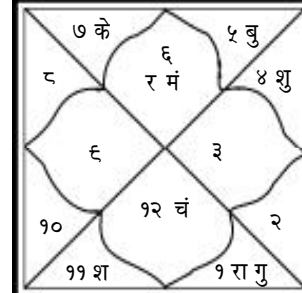
अयनांशः २४/११/११

भाद्रपद शुक्ल ८ शनौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	५	४	०	३	१०	०	६
५	२३	१७	२०	२४	७	१	१
३४	२	४५	४६	६	४४	५८	५८
२१	३०	३२	५१	२३	५१	५३	५३
५८	३६	६६	४	३६	४	३	३
४२	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११



भाद्रपद शुक्ल २-३ रवौ इष्ट १७/५३ समये तैलिल करणे प्रविष्टाः सुप्ताः स्थितिः महर्धं फलं वाहनं गर्दभः उपवाहनम् सुभिक्षं फलं पाण्डु वस्त्रं पीत मुपवस्त्रं दण्डायुधं पक्वान्नं भक्ष्यं मृत्तिका लेपनं पक्षी जातिः केतकी पुष्पं कास्य भोजनपात्रं प्रवाल भूषणं भूर्जपत्र कंचुकी मन्दाकिनी स्नानं युवावस्था मुहूर्तः ३० साम्यार्धं फलं (धान्यादि भाव समान) वार नाम धोरा शुद्राः सुखिन नक्षत्र नाम मैत्रा राजाः सुखिनः वत्स पूर्व उत्तरे राहुः मूलं स्वर्गः



भाद्रपद शुक्ल १५ भृगौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	५	४	०	३	१०	०	६
११	२७	२५	२०	२७	७	१	१
२७	०	४६	२४	५८	२३	३६	३६
०८	३६	४८	४८	४३	५३	५२	५२
५८	४०	६५	५	४३	३	३	३
५३	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११

A पंचक प्रारम्भ रात्रि के ८ बजके २८ मिनट पर

B भागवत सप्ताह की समाप्ति, उफायां बुधः ३३/२३

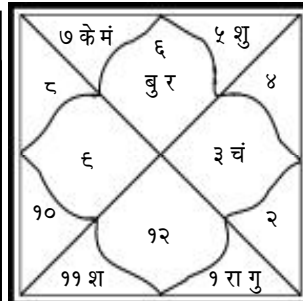
श्री वल्लभाब्दः ५४६ आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ सितम्बर-अक्टूबर सन् २०२३ दक्षिणायने शरदर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.	गतिः	चन्द्र			प्रतिपदि सू. मं बु गु. शु श रा के									
														आ.	उ.	अ.	उ.	स्टे.टा. ०६:३५	क. वि.	राशि	घ.	प	ह. चि. पू.फा. भ. आश्ले. शते. अश्वि. चि.									
१	श	१४	४६	रे	३६	४४	ध्रु	२५	०२	कौ	१४	४६	२६ ४६	८ ३०	६ २८	६ २२	५	१२	२६	१६	५८	५५	मेघे	३६	४४	२ का श्राद्ध, पंचक समाप्त रात्रि के ६ बजके ८ मिनट पर						
२	र	८	०८	अ	३२	३१	व्या	१६	५६	ग	८	०८	४२	६ १० १	२८	२१	५	१३	२५	१४	५८	५७	मेघे			३ का श्राद्ध, भ.प्र.३५/३२, कन्यायां बुधः ३५/२३, मा.ग.मघायां सिंह च भृगुः ४६/२३						
३	च	२	५५	भ	२६	५२	ह	१०	०२	वि	२	५५	३८	१०	२	२६	२०	५	१४	२४	११	५६	०	वृषे	४४	२८	४ का श्राद्ध, भ.नि.२/५५, भरणी श्राद्ध, गौधी जन्मदिन, चतुर्थी व्रतम्, ४६/२३					
४	च	५६	२२	०	०	०	व	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
५	मं	५७	४४	कृ	२८	५६	व	४	३४	कौ	२८	३३	३५	११	३	२६	१६	५	१५	२३	११	५६	२	वृषे			५ का श्राद्ध, श्री हरिराय जी का उत्सव, तुलायां भौमः २८/४८, व.ग. A					
६	बु	५८	०५	रो	३०	०३	सि	० ५८	३५ १३	ग	२७	५५	३२	१२	४	२६	१८	५	१६	२२	१३	५६	४	वृषे			६ का श्राद्ध व व्यतीपात श्राद्ध, भ.प्र.५८/०५					
७	गु	६०	०	मृ	३२	५६	व	५७	१४	वि	२६	११	२८	१३	५	३०	१७	५	१७	२१	१७	५६	६	मिथुने	१	१६	७ का श्राद्ध, भ.नि.२६/११					
७	शु	०	१६	आ	३७	३६	प	५७	३३	ब	०	१६	२४	१४	६	३०	१६	५	१८	२०	२३	५६	६	मिथुने			८ का श्राद्ध, पूर्वे अस्तं बुधः					
८	श	४	०६	पुन	४३	३६	शि	५८	५२	कौ	४	०६	२०	१५	७	३१	१५	५	१६	१६	३२	५६	११	कर्के	२७	०१	९ का श्राद्ध व अविधवा नवमी, श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र B					
९	र	६	१८	पु	५०	३८	सि	६०	०	ग	६	१८	१७	१६	८	३१	१४	५	२०	१८	४३	५६	१३	कर्के			१० का श्राद्ध, भ.प्र.४२/१७, रवि पुष्यामृत योग सूर्योदय से रात्रि के C					
१०	चं	१५	१७	आ	५८	०७	सि	०	५०	वि	१५	१७	१४	१७	६	३१	१३	५	२१	१७	५६	५६	१६	सिंहे	५८	०७	११ का श्राद्ध, भ.नि. १५/१७					
११	मं	२१	३६	म	६०	०	सा	३	०६	बा	२१	३६	१०	१८	१०	३२	१२	५	२२	१७	१२	५६	१८	सिंहे			मघा श्राद्ध, इन्दिरा ११ व्रतम् (गुड़ घृत) महादान					
१२	बु	२७	४८	म	५	३५	शु	५	२५	तै	२७	४८	७	१६	११	३२	११	५	२३	१६	३०	५६	२०	सिंहे			१२ का श्राद्ध व सन्यासीन का श्राद्ध, श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र D					
१३	गु	३३	२६	पू.फा	१२	४१	शु	७	२४	ग	०	३७	५	२०	१२	३२	१०	५	२४	१५	५०	५६	२२	कन्यायां	२६	२२	१३ का श्राद्ध, भ.प्र.३३/२६, श्री गुसाई जी के तीसरे लाल जी E					
१४	शु	३८	१८	उ.फा	१६	०८	ब्र	८	५३	वि	५	५२	२	२१	१३	३२	६	५	२५	१५	१२	५६	२५	कन्यायां			१४ का श्राद्ध, शस्त्रादि हतानामेव श्राद्ध, भ.नि.५/५२, स्वात्यां भौमः २३/१८					
३०	श	४२	१२	ह	२४	३६	ऐ	६	३६	च	१०	१५	२८ ५६	२२	१० १४	३२ ६	६ ८	५	२६	१४	३८	५६	२६	तुलायां	५७	०२	३० का श्राद्ध, सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती एवं सांझी की समाप्ति F					

अयनांशः २४/११/१२

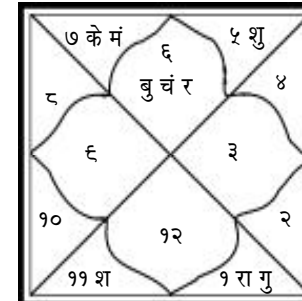
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

आश्विन कृष्ण ८ शनौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	६	५	०	४	१०	०	६
१६	२	६	१६	४	६	१	१
१६	२१	२४	४१	८	५६	१४	१४
२१	४०	२५	४२	०५	५२	५२	५२
५६	४०	१०६	७	५०	३	३	३
११	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११



मृतपुत्रप्रदानं च गुरोः पंचजनार्दनम्॥
पुनरागमनं शौरेर्मधुपुर्या महोत्सवः॥२६॥
उद्धवप्रेषणं गोपीविलापपरिसात्वन्म्॥
कुब्जारतिस्तथाकूरप्रेषणं गजसाह्ये॥३०॥
पांडवेषु च वैषम्यं धृतराष्ट्रस्य बोधनम्॥
इत्येवं दशमस्कंधपूर्वार्धे विनिरूपितम्॥३१॥
जामातृवधसंततजरासंधचमूवधः॥
बहुशः सेनयोद्धेगो द्वारकादुर्गकरणम्॥३२॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/११/१२

आश्विन कृष्ण ३० शनौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	६	५	०	४	१०	०	६
२६	७	२१	१८	१०	६	०	०
१४	४	४५	५५	१२	४२	५१	५१
३२	४७	३३	४२	२३	५२	५२	५२
५६	४१	१०५	७	५५	३	३	३
२६	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११

A भरण्यां २ गुरुः ४५/४३

B श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तम जी का उत्सव, हस्ते बुधः २०/८

C २ बजके ४५ मिनट तक

D श्री गोपीनाथजी का उत्सव, प्रदोषः, चित्रायां रविः ३/४०

E श्री बालकृष्णजी का उत्सव

F चित्रायां बुधः ५४/०३

श्री वल्लभाब्दः ५४६ आश्विन शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ अक्टूबर सन् २०२३ दक्षिणायने शरदर्तुः हेमन्तर्तुश्चः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः		चन्द्रः		प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के								
														आ.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	चि.	स्वा.	ह.	भ.	म.	शते.	अश्वि.	चि.	
१	र	४५	०	चि	२६	०८	वै	६	३५	किं	१३	३६	$\frac{२८}{५५}$	२३	$\frac{१०}{१५}$	$\frac{६}{३३}$	$\frac{६}{७}$	५	२७	१४	०४	५६	२६	तुलायां			नवरात्रारम्भः, मातामह श्राद्ध, व.ग.धनिष्ठायां ४ शनिः १२/२३					
२	च	४६	३६	स्वा	३२	३४	वि	८	४४	बा	१५	५०	५१	२४	१६	३४	६	५	२८	१३	३३	५६	३०	तुलायां			चन्द्रदर्शनम् मु.१५					
३	मं	४७	१३	वि	३४	५३	प्री	६	५८	तै	१६	५६	४७	२५	१७	३४	५	५	२९	१३	०३	५६	३३	वृश्चिके	१६	२४	तुलायां रविः ४७/२०, पूफायां भृगुः २२/०३					
४	बु	४६	३७	अ	३६	०४	आ	४	१६	व	१६	५५	४४	२६	१८	३४	४	६	०	१२	३६	५६	३४	वृश्चिके			भ.प्र.१६/५५, नि.४६/३७, ति. श्री दाऊजी महाराज का उत्सव (दुहेरा मनोरथ)A					
५	गु	४४	५३	ज्ये	३६	१०	सौ	$\frac{०}{५६}$	$\frac{४५}{२३}$	ब	१५	४५	४२	२७	१६	३५	४	६	१	१२	१०	५६	३६	धनुषि	३६	१०						
६	शु	४२	०४	मू	३५	१४	अ	५१	०७	कौ	१३	२६	३६	२८	२०	३५	३	६	२	११	४६	५६	३८	धनुषि			सरस्वती पूजनारम्भः,					
७	श	३८	१५	पू.षा	३३	१५	सु	४५	०	ग	१०	१०	३६	२६	२१	३५	२	६	३	११	२४	५६	३६	मकरे	४७	३६	भ.प्र.३८/१५					
८	र	३३	२७	उ.षा	३०	१६	धृ	३८	०६	वि	५	५१	३२	३०	२२	३६	१	६	४	११	०३	५६	४१	मकरे			भ.प्र.५/५१ स्वात्यां बुधः ४५/१३					
९	चं	२७	५०	श्र	२६	३३	शू	३०	३८	बा	०	३६	२८	का	२३	३७	$\frac{६}{०}$	६	५	१०	४४	५६	४३	कुम्भे	५४	२४	दशहरा (विजयादशमी), सरस्वती विसर्जनम्, पंचक प्रारम्भ पिछली रात्रि के B					
१०	मं	२१	३१	ध	२२	०६	गं	२२	३४	ग	२१	३१	२५	२	२४	३७	$\frac{५}{५६}$	६	६	१०	२७	५६	४५	कुम्भे			भ.प्र.४८/०८, श्री गिरधर जी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी का उत्सव C					
११	बु	१४	४५	श	१७	१०	वृ	१४	०८	वि	१४	४५	२२	३	२५	३८	५६	६	७	१०	१२	५६	४६	मीने	५८	१६	भ.नि.१४/४५, पाशांकुशा ११ व्रतम् (ककड़ी)					
१२	गु	७	४४	पू.भा	१२	०१	धृ	$\frac{०५}{५६}$	$\frac{२६}{४६}$	बा	७	४४	१६	४	२६	३८	५८	६	८	०६	५८	५६	४८	मीने			प्रदोषः					
१३	शु	०	४५	उ.भा	६	५२	ह	४८	२५	तै	०	४५	१४	५	२७	४०	५७	६	६	०६	४६	५६	५०	मीने			भ.प्र.५४/०७, श्री बालकृष्णजी का पाटोत्सवः, रासोत्सव, पूर्णिमा शनिवार D					
१४	शु	५४	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०						
१५	श	४८	०६	रे	$\frac{२}{५८}$	$\frac{०८}{०६}$	व	४०	३१	वि	२१	०६	$\frac{२८}{१२}$	२८	$\frac{१०}{२८}$	$\frac{४०}{६०}$	$\frac{५}{५६}$	६	१०	६	३८	५६	५२	मेघे	२	०८	भ.नि.२१/०६, शरद पूर्णिमा, पूर्णिमाव्रतम्, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण निर्णय E					

अयनांशः २४/११/१३

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

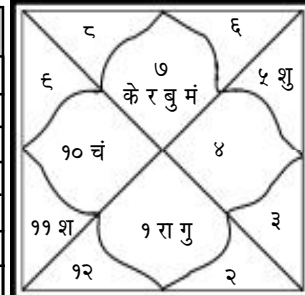
तुला संक्रान्ति

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

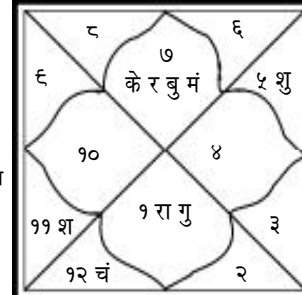
अयनांशः २४/११/१४

आश्विन शुक्ल ८ रवौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	६	०	४	१०	०	६
४	१२	५	१७	१७	६	०	०
११	३१	२४	५६	४६	२८	२६	२६
०३	५१	३०	३८	३६	५५	५१	५१
५६	४१	१००	८	५६	२	३	३
४१	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११



आश्विन शुक्ल ३-४ भौमे इष्ट ४७/२० समये वणिज करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं महिषः उपवाहन उष्ट्रः क्लेशः फलं श्याम वस्त्रं कम्बलमुपवस्त्रम् तोमरायुद्धं दधिभक्ष्यं यावक लेपनं मृग जातिः अर्क पुष्पं खर्परं भोजन पात्रं मर्णिभूषणं पाण्डु कञ्जचुकी कृष्णा स्नानं प्रगल्भावस्था मुहूर्तः ३० सम्यार्ध फलं (धान्यादि भाव समान) वारनाम महोदरी चौरा सुखिनः नक्षत्र नाम मैत्रा राजाः सुखिनः वत्स पूर्वे राहुः उत्तरे मूलं भूमौ।



आश्विन शुक्ल १५ शनौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	६	०	४	१०	०	६
१०	१६	१५	१७	२३	६	०	०
६	३८	१३	०६	४८	२२	७	७
५०	५६	३८	३७	०	५१	५१	५१
५६	४१	६६	८	६२	०	३	३
५२	मा.	मा.	व.	मा.	व.	११	११

A तुलायां बुधः ४६/५० B ४ बजके २३ मिनट पर, हेमन्त ऋतु का प्रारम्भः

C स्वात्यां रविः २६/३५

D को चन्द्रग्रहण होने से आज

E पू.१० पर अंकित है। पंचक समाप्त प्रातः ७ बजके ३१ मिनट पर, कार्तिक स्नानारम्भः

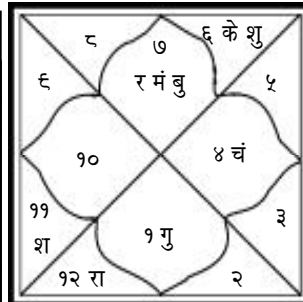
श्री वल्लभाब्दः ५४६ कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ अक्टूबर-नवम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने हेमन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा. का.	अं. उ.	र. अ.	र. अ.	प्रा. स्प. रवि.			गतिः		चन्द्र			सू. मं बु गु शु श रा के							
																		स्टे.टा.	०६:३५		क.	वि.	राशि	घ.	प	प्रतिपदि	स्वा.	स्वा.	स्वा.	भ.	पू.फा.	ध.	अश्वि.
१	र	४३	०२	भ	५५	०४	सि	३३	१६	बा	१५	३४	$\frac{२८}{०६}$	७	$\frac{१०}{२६}$	$\frac{६}{४१}$	$\frac{५}{५५}$	६	११	६	३०	५६	५४	मेघे									
२	च	३६	१५	कृ	५३	२०	व्य	२७	०८	तै	११	०६	३	८	३०	४२	५५	६	१२	६	२४	५६	५६	वृषे	६	२८	मीने राहुः कन्यायां केतुश्चः २५/१५, उफायां भृगुः ४६/०३						
३	म	३७	०१	रो	५३	११	ब	२२	०६	व	८	०८	२	६	३१	४२	५४	६	१३	६	२०	५६	५७	वृषे			भ.प्र.८/०८, नि.३७/०१, विशाखायां बुधः १/५३, व.ग. भरण्यां १ A						
४	बु	३६	३५	मृ	५४	४५	प	१८	३०	ब	६	४६	$\frac{२७}{५७}$	१०	$\frac{११}{११}$	४३	५४	६	१४	६	१७	६०	०	मिथुने	२३	४४	चतुर्थी व्रतम्, करक चतुर्थी (करवा चौथ), विशाखायां भौमः ५१/३०						
५	गु	३७	५६	आ	५८	०६	शि	१६	१६	कौ	७	१६	५३	११	२	४४	५३	६	१५	६	१७	६०	२	मिथुने			कन्यायां भृगुः ५६/१८						
६	शु	४१	०२	पुन	६०	०	सि	१५	२२	ग	६	२६	५०	१२	३	४४	५२	६	१६	६	१६	६०	४	कर्के	४६	४१	भ.प्र.४१/०२						
७	श	४५	४०	पुन	०३	०३	सा	१५	४५	वि	१३	२१	४७	१३	४	४५	५२	६	१७	६	२३	६०	६	कर्के			भ.नि.१३/२१ मा.ग. शनिः १४/३३						
८	र	५१	२६	पु	६	२१	शु	१७	०६	बा	१८	३३	४४	१४	५	४६	५१	६	१८	६	२६	६०	८	कर्के			रवि पुष्पामृत योग सूर्योदय से प्रातः १० बजके २६ मिनट पर						
९	चं	५७	४५	आ	१६	३२	शु	१६	१०	तै	२४	३६	४०	१५	६	४६	५०	६	१६	६	३७	६०	१०	सिंहे	१६	३२	वृश्चिके बुधः २४/१३, विशाखायां रविः ४६/४८						
१०	मं	६०	०	म	२४	०६	ब्र	२१	२३	व	३०	५३	३७	१६	७	४७	५०	६	२०	६	४७	६०	१३	सिंहे			भ.प्र.३०/५३						
१०	बु	४	०१	पू.फा	३१	२१	ऐ	२३	२६	वि	४	०१	३४	१७	८	४८	५०	६	२१	१०	०	६०	१४	कन्यायां	४८	०६	भ.नि.४/०१, अनुराधायां बुधः ३४/५३						
११	गु	६	४७	उ.फा	३७	५५	वै	२५	०	बा	६	४७	३०	१८	६	४६	४६	६	२२	१०	१४	६०	१६	कन्यायां			रमा ११ व्रतम् (केला),						
१२	शु	१४	३१	ह	४३	२१	वि	२५	४३	तै	१४	३१	२७	१६	१०	४६	४८	६	२३	१०	३०	६०	१६	कन्यायां			प्रदोषः						
१३	श	१७	५४	चि	४७	२६	प्री	२५	२४	व	१७	५४	२४	२०	११	५०	४८	६	२४	१०	४६	६०	२०	तुलायां	१५	३३	भ.प्र.१७/५४, नि.४८/५२, धनतेरस धन्वन्तरी त्रयोदशी बुधोदयः पश्चिमे						
१४	र	१६	५०	स्वा	५०	०५	आ	२३	५७	श	१६	५०	२२	११	१२	५१	४८	६	२५	११	०६	६०	२२	तुलायां			रूप चतुर्दशी (अभ्यंग) दीपावली (दीपोत्सव) हटडी, गोकर्ण जागरणम् B						
३०	चं	२०	१८	वि	५१	२३	सौ	२१	२१	ना	२०	१८	$\frac{२७}{२२}$	२२	$\frac{११}{३३}$	$\frac{५}{५१}$	$\frac{५}{४७}$	६	२६	११	३२	६०	२३	वृश्चिके	३६	१०	अन्नकूटोत्सव, गोवर्द्धन पूजा, सोमवती अमावस योग दिन के C						

अयनांशः २४/११/१५

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

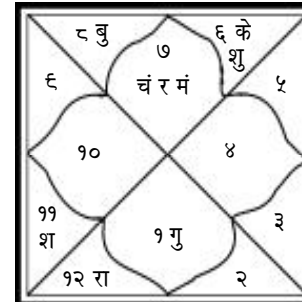
कार्तिक कृष्ण ८ रवौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	६	०	५	१०	११	५
१८	२२	२७	१६	२	६	२६	२६
१०	११	४६	४	१२	२०	४१	४१
०	११	५८	३४	२५	०	५०	५०
६०	४१	६३	८	६४	०	३	३
८	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११



यवनस्य वयो दृष्ट्या मुचुकुन्दस्य संस्तुतिः।
वरं दत्त्वा ततो स्लेच्छवधं कृत्वा धने ततः॥३३॥
नीयमाने वरैर्दत्तजरासंथात्पलायनम्॥
रैवताद्रेवतीकन्या बलदेवसमर्पणम्॥३४॥
रुक्मिणीप्रियसंदेशश्रवणादखिलात्रिपूना॥
निर्जित्य निर्गमो गेहदंबिक्रया हतिर्बलात्॥३५॥
चैद्यसांत्वनमुर्वीशैस्ततो रुक्मिसमागमः॥
युद्धाक्षेपापराधे च मुंडनं तस्य कृष्णतः॥३६॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/१६



कार्तिक कृष्ण ३० सोमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	७	०	५	१०	११	५
२६	२७	१०	१४	१०	६	२६	२६
१२	४६	०	५६	५५	२३	१६	१६
१४	२३	०६	३६	४८	३	४६	४६
६०	४२	६०	७	६७	१	३	३
२३	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११

A गुरुः ३७/०८

B कान जगाई हस्ते भृगुः ६/३०

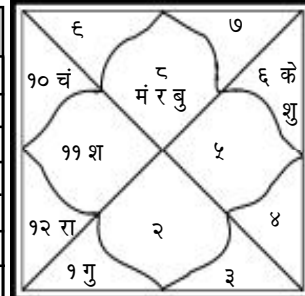
C २ बजके ५७ मिनट तक

श्री वल्लभाब्दः ५४६ कार्तिक शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ नवम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने हेमन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा. का.	अं. उ.	र. अ.	प्रा. स्प. रवि. स्टे.टा. ०६:३५	गतिः		चन्द्रः			प्रतिपदि	सू. वि.	मं वि.	बु अनु.	गु भ.	शु ह.	श ध.	रा रे.	के चि.
																		क.	वि.	राशि	घ.	प									
१	म	१६	२६	अ	५१	२४	शो	१७	४४	ब	१६	२६	$\frac{२७}{३७}$	२३	$\frac{११}{१४}$	$\frac{६}{५२}$	$\frac{५}{४७}$	६	२७	११	५५	६०	२५	वृश्चिके							गुर्जराणाम् २०८० वर्षारम्भ, चन्द्रदर्शनम् मु.३०
२	बु	१७	२२	ज्ये	५०	२५	अ	१३	१०	कौ	१७	२२	१४	२४	१५	५२	४६	६	२८	१२	२०	६०	२७	धनुषि	१७	२२					यम द्वितीया (भाई दूज)
३	गु	१४	१८	मू	४८	३३	सु	७	४८	ग	१४	१८	१२	२५	१६	५३	४६	६	२९	१२	४७	६०	२८	धनुषि							भ.प्र.४२/२४, वृश्चिके रवि: ४६/०८, वृश्चिके भौम: ६/४३
४	शु	१०	२६	पू.षा	४६	०१	धृ	$\frac{१}{५५}$	$\frac{४६}{२१}$	वि	१०	२६	१०	२६	१७	५४	४६	७	०	१३	१५	६०	३०	धनुषि							भ.नि.१०/२६, ज्येष्ठायां बुध: २६/५७
५	श	६	०४	उ.षा	४३	०२	गं	४८	२६	बा	६	०४	७	२७	१८	५४	४५	७	१	१३	४५	६०	३१	मकरे	०	१८					सौभाग्यवती पंचमी
६	श	०१	१५	श्र	३६	४५	वृ	४१	२५	तै	१	१५	५	२८	१६	५५	४५	७	२	१४	१६	६०	३२	मकरे							भ.प्र.५६/१०, भानु सप्तमी, श्री नवनीत प्रभु के व्रज में पधारने का उत्सव A
७	र	५६	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
८	चं	५०	५६	ध	३६	१८	धृ	३४	११	वि	२३	३३	३	२६	२०	५६	४५	७	३	१४	४८	६०	३३	कुम्भे	८	०२					भ.नि.२३/३३, गोपाष्टमी, पंचक प्रारम्भ प्रातः १० बजके ८ मिनट पर B
९	मं	४५	३७	श	३२	४४	व्या	२६	५२	बा	१८	१८	$\frac{२७}{०}$	३०	२१	५७	४५	७	४	१५	२१	६०	३५	कुम्भे							अक्षय नवमी कृत युगादि कृष्णान्द दानम्
१०	बु	४०	२०	पू.षा	२६	१२	ह	१६	३२	तै	१२	५६	$\frac{२६}{५६}$	मा	२२	५७	४५	७	५	१५	५६	६०	३५	मीने	१५	०५					
११	गु	३५	१३	उ.षा	२५	४८	व	१२	२०	व	७	४७	५५	२	२३	५८	४४	७	६	१६	३१	६०	३७	मीने							भ.प्र.७/४७, नि.३५/१३,प्रबोधिनी ११ व्रतम् (काचरी) देवोत्थापनं प्रातः C
१२	शु	३०	२४	रै	२२	३६	सि	$\frac{५}{५८}$	$\frac{१६}{३४}$	ब	२	४६	५२	३	२४	५६	४४	७	७	१७	०८	६०	३८	मेघे	२२	३६					प्रदोषः, श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी तथा पंचम लालजी D
१३	श	२५	५६	अ	१६	५२	व	५२	१४	तै	२५	५६	५०	४	२५	५६	४४	७	८	१७	४६	६०	४०	मेघे							
१४	र	२२	१८	भ	१७	४५	प	४६	३३	व	२२	१८	४६	५	२६	$\frac{७}{०}$	४४	७	९	१८	२६	६०	४०	वृषे	३२	२२					भ.प्र.२२/१८, नि.५०/५२, ति. श्री गोविन्दजी महाराज का उत्सव E
१५	चं	१६	२६	कृ	१६	२८	शि	४१	३६	ब	१६	२६	$\frac{२६}{४८}$	६	$\frac{११}{१७}$	$\frac{७}{३}$	$\frac{५}{४४}$	७	१०	१६	०७	६०	४२	वृषे							पूर्णिमा व्रतम्, चार स्वरूप का उत्सव नित्य लीलास्थ, गो.ति.१०८ F

अयनांशः २४/११/१८

कार्तिक शुक्ल ८ सोमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	७	०	५	१०	११	५
३	२	२०	१४	१८	६	२८	२८
१५	४२	१८	६	४७	३२	५४	५४
४३	३५	१०	३५	०५	०७	४८	४८
६०	४३	८६	७	६८	२	३	३
३३	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११



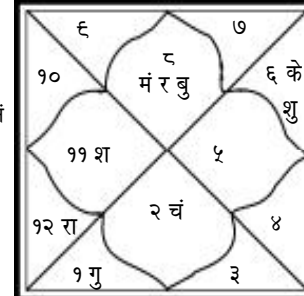
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

वृश्चिक संक्रान्ति

कार्तिक शुक्ल ३-४ गुरौ इष्ट ४६/०८ समये विष्टि करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं अश्वं उपवाहनं सिंहः धैर्यः फलं असित वस्त्रं पट्टमुपवस्त्रं कुन्तायुधं चित्रान्नं भक्ष्यं ओतुमदः लेपनं द्विजजातिः दूर्वाः पुष्पं पत्रं भोजनपात्रं गुंजामूषणं नील कञ्चुकी गोदावरी स्नानं वृद्धावस्था मुहूर्ता ३० साम्यार्थं फलं (धान्यादि भाव समानं) वार नाम नन्दा विप्रः सुखिनः नक्षत्र नाम दारुणाः चाण्डाल सुखिनः क्तसः दक्षिणे पूर्वे राहुः मूलं पातालो

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/१६



कार्तिक शुक्ल १५ सोमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	८	०	५	१०	११	५
१०	७	०	१३	२६	६	२८	२८
२०	४१	४	१८	४८	४६	३१	३१
१४	४०	०	३७	२६	११	४८	४८
६०	४२	७६	६	७०	३	३	३
४२	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११

A गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)

B अनुराधायां रविः ४/१५, अनुराधायां भौमः ५२/३५

C शृंगार में, चित्रायां भृगुः ५६/३

D श्री रघुनाथजी का उत्सव, शते १ शनिः ४/४५, पंचक समाप्त सायं ४ बजके १ मिनट पर

E मूले धनुषिः च बुधः ५७/१५ व.ग. अश्विनी ४ गुरुः ५०/३३

F श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत, चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति, गोपमासारम्भः

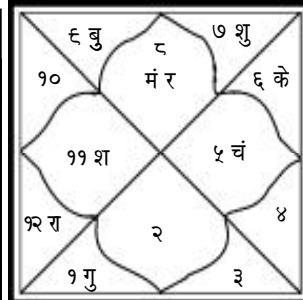
श्री वल्लभाब्दः ५४६ मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ नवम्बर-दिसम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने हेमन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्र			प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के अनु. अनु. मू. अश्वि. चि. शते. रे. चि.									
														मा.	उ.	अ.		स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प										
१	मं	१७	४१	रो	१६	१६	सि	३७	३६	कौ	१७	४१	२६ ४७	७	११ २८	७ १	५ ४४	७	११	१६	४६	६०	४३	मिथुने	४६	४१	गोपमासारम्भः (व्रतचर्या)							
२	बु	१७	२०	मृ	१७	२५	सा	३४	४२	ग	१७	२०	४५	८	२६	२	४४	७	१२	२०	३२	६०	४५	मिथुने			भ.प्र.४७/५४, तुलायां भृगुः ४५/०५							
३	गु	१८	२८	आ	१६	५८	शु	३३	०	वि	१८	२८	४३	९	३०	३	४४	७	१३	२१	१७	६०	४६	मिथुने			भ.नि.१८/२८, चतुर्थी व्रतम्							
४	शु	२१	१४	पुन	२४	०४	शु	३२	३१	बा	२१	१४	४२	१०	१२ १	४	४४	७	१४	२२	०३	६०	४७	कर्के	७	५४								
५	श	२५	२७	पु	२६	३७	ब्र	३३	०७	तै	२५	२७	३८	११	२	५	४४	७	१५	२२	५०	६०	४६	कर्के										
६	र	३०	५८	आ	३६	२०	ऐ	३४	३८	व	३०	५८	३५	१२	३	६	४४	७	१६	२३	३६	६०	५०	सिंहे	३६	२०	भ.प्र.३०/५८, ज्येष्ठायां रविः १४/४५							
७	चं	३७	१८	म	४३	४६	वै	३६	४३	वि	४	०८	३३	१३	४	७	४४	७	१७	२४	२६	६०	५१	सिंहे			भ.नि.४/०८, सप्तस्वरूपोत्सव कर्तुं नि.ली.गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलाल जी A							
८	मं	४३	५२	पू.फा	५१	१६	वि	३८	५६	बा	१०	३५	३३	१४	५	७	४४	७	१८	२५	२०	६०	५३	सिंहे			श्री गुसाई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दराय जी का उत्सव स्वात्यां भृगुः २६/४५							
९	बु	४६	५७	उ.फा	५८	२५	प्री	४०	५७	तै	१६	५५	३२	१५	६	८	४५	७	१९	२६	१३	६०	५५	कन्यायां	८	१०								
१०	गु	५४	५८	ह	६०	०	आ	४२	१३	व	२२	२८	३१	१६	७	८	४५	७	२०	२७	०८	६०	५५	कन्यायां			भ.प्र.२२/२८, नि.५४/५८, षष्ठा का प्रारम्भ (हरि षष्ठा)							
११	शु	५८	३१	ह	४	२६	सौ	४२	२१	ब	२६	४५	३०	१७	८	९	४५	७	२१	२८	०३	६०	५७	तुलायां	३६	५५								
१२	श	६०	०	चि	८	५७	शो	४१	१०	कौ	२६	२२	३०	१८	९	९	४५	७	२२	२९	०	६०	५८	तुलायां			उत्पत्ति ११ व्रतम् (बिल्व फल) श्री नवनीत प्रभु को ब्रज से पुनः नाथद्वारा B							
१२	र	०	१३	स्वा	११	४३	अ	३८	३३	तै	०	१३	२८	१९	१०	११	४६	७	२३	२६	५८	६०	५९	वृश्चिके	५७	३७	प्रदोषः							
१३	चं	०	२	वि	१२	३६	सु	३४	३२	व	०	२	२७	२०	११	११	४६	७	२४	३०	५७	६१	०	वृश्चिके			भ.प्र.०/२, नि.२६/०६, श्री गुसाईजीके सातवे लालजी श्री घनश्यामजी का उत्सव							
१४	मं	५८	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
३०	मं	५४	४०	अनु	११	५५	धृ	२६	१२	च	२६	२५	२६ २६	२१	१२ १२	१२	५६ ५६	७	२५	३१	५८	६१	१	वृश्चिके			अमावस्या, श्याम घटा							

अयनांशः २४/११/२१

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

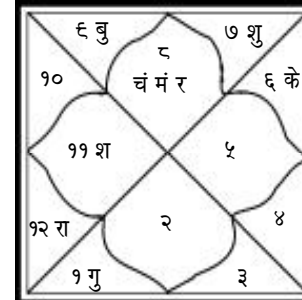
मार्गशीर्ष कृष्ण ८ भौमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	८	०	६	१०	११	५
१८	१३	६	१२	६	७	२८	२८
२६	२५	३५	३२	८	०८	०६	०६
४०	५२	५२	४०	४०	१२	४७	४७
६०	४३	५८	५	७०	३	३	३
५३	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११



रुक्मिणीदुःखशमनं रामवाक्यं च मोक्षणम्॥
ततो विवाहे रुक्मिण्या विधिवत्पुरे तदा॥३७॥
प्रद्युम्नोत्पत्तिकथनं हरणं सूक्तिकागृहात्॥
मायावत्योक्तवृत्तांतः शंवरस्य वधस्ततः॥३८॥
पुनरागमनं गेहे संतोषो द्वारकौकसाम्॥
सूर्यास्त्यमंतकप्राप्त्यार्याचनं तस्य वै हरेः॥३९॥
तत्संबंधाप्रसेनस्य वधोऽकीर्तिर्हरस्तथा॥
तन्मार्जनाय ऋक्षस्य गेहे गमनमेतयोः॥४०॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/२२



मार्गशीर्ष कृष्ण १४ भौमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	८	०	६	१०	११	५
२५	१८	१४	१२	१४	७	२७	२७
३३	३०	६	०	२५	३२	४४	४४
२६	०१	३८	४३	५८	१७	४७	४७
६१	४३	६	४	७१	४	३	३
४१	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	११	११

A महाराज का उत्सव B निज मंदिर में श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज ने पधराया (२०६३), ज्येष्ठायां भौमः २६/०, पूषायां बुधः ४६/४०

श्री वल्लभाब्दः ५४६ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ दिसम्बर सन् २०२३ दक्षिणायने हेमन्तर्तुः उत्तरायणे शिशिरर्तुश्चः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः		चन्द्रः			प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के							
															मा.	उ.	अ.				स्टे.	टा.	०६:३५	क.	वि.										राशि	घ.	प	ज्ये.	ज्ये.	पू.	पा.
१	बु	४६	५८	ज्ये	६	४६	शू	२२	४६	किं	२२	१६	$\frac{२६}{२६}$	२२	$\frac{१२}{१३}$	$\frac{७}{१२}$	$\frac{५}{४६}$	७	२६	३२	५६	६१	१	धनुषि	६	४६	व.ग. बुधः	१३/४०													
२	गु	४४	२२	मू	६	२६	गं	१५	३२	बा	१७	१०	२५	२३	१४	१३	४७	७	२७	३४	०	६१	०३	धनुषि			चन्द्रदर्शनम्	मु.३०,	दूज	का	चन्द्रमा										
३	शु	३८	१८	पू.पा	$\frac{२}{१०}$	$\frac{५५}{०}$	वृ	$\frac{७}{५६}$	$\frac{४३}{३५}$	तै	११	२०	२५	२४	१५	१३	४७	७	२८	३५	३	६१	०३	मकरे	१६	२१															
४	श	३२	०१	श्र	५३	३१	व्या	५१	२६	व	५	१०	२५	२५	१६	१४	४८	७	२६	३६	६	६१	०३	मकरे			भ.प्र.५/१०,	नि.३२/०१,	मूले	धनुषि	च	रविः	२१/५५	धनुर्मासारम्भः							
५	र	२५	५०	घ	४६	१२	ह	४३	२५	बा	२५	५०	२४	२६	१७	१४	४८	८	०	३७	०६	६१	४	कुम्भे	२१	१६	श्री	मदनमोहन	जी	का	पाटोत्सव,	पंचक	प्रारम्भ	दोपहर	३	बजके	४५	मिनित	A		
६	चं	२०	०१	श	४५	२१	व	३५	४३	तै	२०	०१	२४	२७	१८	१५	४६	८	१	३८	१३	६१	४	कुम्भे																	
७	मं	१४	४२	पू.भा	४२	०	सि	२८	३०	व	१४	४२	२४	२८	१६	१५	४६	८	२	३६	१७	६१	५	मीने	२७	४५	भ.प्र.१४/४२,	नि.४२/२२,	श्री	गोकुलनाथजी	का	उत्सव									
८	बु	१०	०१	उ.भा	३६	१८	व्य	२१	४३	ब	१०	०१	२३	२६	२०	१६	४६	८	३	४०	२२	६१	५	मीने			सात	स्वरूप	का	उत्सव	श्री	गोवर्द्धनेश	जी	महाराज	कृत,	बुधाष्टमी					
९	गु	५	५७	रे	३७	१४	व	१५	२६	कौ	५	५७	२३	३०	२१	१६	४६	८	४	४१	२७	६१	५	मेघे	३७	१४	श्री	गुसाईजी	के	उत्सव	की	बधाई	(लाल	घटा),	पंचक	समाप्त	रात्रि	के	B		
१०	शु	२	३३	अ	३५	५१	प	६	४८	ग	२	३३	२३	पौ	२२	१७	५०	८	५	४२	३२	६१	६	मेघे			भ.प्र.३१/१२,	नि.५६/५१,	गीता	जयंती,	उत्तरायण	शिशिर	ऋतु	प्रारम्भः							
११	शु	५६	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०															
१२	श	५७	५२	भ	३५	०७	शि	४	३७	ब	२८	५१	२३	२	२३	१७	५०	८	६	४३	३८	६१	५	वृषे	५०	०२	मोक्षदा	११	व्रतम्	(बादाम)											
१३	र	५६	३६	कृ	३५	०६	सि	$\frac{००}{५६}$	$\frac{१}{०१}$	कौ	२७	१४	२३	३	२४	१८	५१	८	७	४४	४३	६१	६	वृषे			प्रदोषः,	वृश्चिके	भृगुः	५८/३८											
१४	चं	५६	१५	रो	३५	५५	शु	५२	४२	ग	२६	२६	२३	४	२५	१८	५१	८	८	४५	४६	६१	६	वृषे			भ.प्र.५६/१५														
१५	मं	५६	५४	मृ	३७	३६	शु	५०	०६	वि	२६	३५	$\frac{२६}{२३}$	५	$\frac{१२}{२६}$	$\frac{७}{१६}$	$\frac{५}{५२}$	८	९	४६	५५	६१	७	मिथुने	६	३८	भ.नि.२६/३५,	पूर्णिमा	व्रतम्	गोपमास	की	समाप्ति,	छप्यनभोग								

अयनांशः २४/११/२४

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

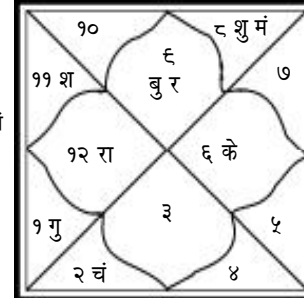
धनु संक्रान्ति

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ शनौ इष्ट २१/५५ समये विष्टि करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं अश्वं उपवाहनं सिंहः धैर्यः फलं असित वस्त्रं पट्टमुपवस्त्रं कुत्तायुद्धं चित्रान्नं भक्ष्यं ओतुमदः लेपनं द्विजजातिः दूर्वाः पुष्पं पत्रं भोजनपात्रं गुंजाभूषणं नील कञ्चुकी गोदावरी स्नानं वृद्धावस्था मुहूर्ताः ३० सम्पार्थ फलं (धान्यादि भाव समान) वार नाम राक्षसी चाण्डालः सुखिनः नक्षत्र नाम चरा चौराः सुखिनः वत्सः दक्षिणे राहुः पूर्वे मूलमूँ

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/१६

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ बुधे इष्ट ०१०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	७	८	०	६	१०	११	५	
३	२४	१०	११	२४	८	२७	२७	
४२	२०	०२	३५	०	०५	१८	१८	
०६	१४	३०	५१	१७	१८	४६	४६	
६१	४४	७५	२	७२	४	३	३	
५	मा.	व.	व.	मा.	मा.	११	११	



मार्गशीर्ष शुक्ल १५ भौमे इष्ट ०१०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	७	८	०	७	१०	११	५	
६	२८	२	११	१	८	२६	२६	
४८	४४	१०	२५	१४	३३	५६	५६	
४५	१८	०३	५६	२४	२३	४६	४६	
६१	४४	६६	१	७२	५	३	३	
०७	मा.	व.	व.	मा.	मा.	११	११	

A पश्चिमे अस्तं बुधः व.ग. मूले ४ बुधः २४/३८, विशाखायां भृगुः ४०/०३

B १० बजके ६ मिनित पर

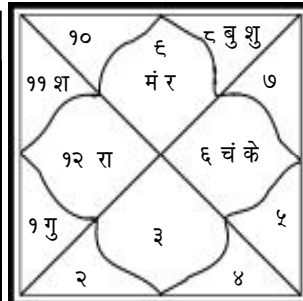
श्री वल्लभाब्दः ५४६ पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ दिसम्बर सन् २०२३-जनवरी सन् २०२४ उत्तरायणे शिशिरर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा.	स्प.	रवि.	गतिः	चन्द्र	प्रतिपदि	सू.	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
														पौ.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	मू.	ज्ये.	मू.	अश्वि.	वि.	शते.	रे.	चि.
१	बु	५८	४०	आ	४०	२८	ब्र	४८	२५	बा	२७	४७	२६	६	२२	७	५	८	१०	४८	०२	६१	७	मिथुने							नि.ली.गो.ति.१०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज का उत्सव A
२	गु	६०	०	पुन	४४	२४	ऐ	४७	४२	तै	३०	१२	२५	७	२८	१६	५३	८	११	४६	०६	६१	७	कर्के	२८	१८					गुरु पुष्यामृत योग रात्रि के १ बजके ४ मिनट से सूर्योदय तक B
२	शु	१	४३	पु	४६	३८	वै	४७	५३	ग	१	४३	२६	८	२६	२०	५४	८	१२	५०	१६	६१	७	कर्के							भ.प्र.३३/५३, पूषायां रवि: २७/२०
३	श	६	०२	आ	५५	५७	वि	४६	०	वि	६	०२	२७	६	३०	२०	५५	८	१३	५१	२३	६१	८	सिंहे	५५	५७					भ.प्र.६/०२, चतुर्थीव्रतम्
४	र	११	३१	म	६०	०	प्री	५०	५१	बा	११	३१	२८	१०	३१	२०	५५	८	१४	५२	३१	६१	८	सिंहे							मा.ग. गुरु: २/१०
५	चं	१७	५३	म	३	११	आ	५३	०८	तै	१७	५३	२८	११	१	२०	५६	८	१५	५३	३६	६१	८	सिंहे							जनवरी सन् २०२४ का प्रारम्भः, रेवत्यां ३ राहु: चित्रायां १ केतु: १७/०५
६	मं	२४	३७	पू.फा	१०	५५	सौ	५५	३०	व	२४	३७	२६	१२	२	२१	५६	८	१६	५४	४७	६१	६	कन्यायां	२७	५०					भ.प्र.२४/३७, नि.५३/५३, मा.ग. बुध: ३/१५
७	बु	३१	०६	उ.फा	१८	३४	शो	५७	२६	ब	३१	०६	३०	१३	३	२१	५७	८	१७	५५	५६	६१	६	कन्यायां							
८	गु	३६	५१	ह	२५	३१	अ	५८	३६	बा	४	०	३०	१४	४	२२	५८	८	१८	५७	०५	६१	६	तुलायां	५८	३४					
९	शु	४१	०३	चि	३१	११	सु	५८	३६	तै	८	५७	३०	१५	५	२२	५८	८	१९	५८	१४	६१	१०	तुलायां							श्रीमत्प्रभुचरण श्री विठ्ठलनाथजी का उत्सव
१०	श	४३	२३	स्वा	३५	०५	धृ	५७	०३	व	१२	१३	३१	१६	६	२३	५९	८	२०	५६	२४	६१	१०	तुलायां							भ.प्र.१२/१३, नि.४३/२३
११	र	४३	३२	वि	३६	५७	शु	५३	४७	ब	१३	२८	३२	१७	७	२३	६०	८	२२	०	३४	६१	१०	वृश्चिके	२१	४१					सफला ११ व्रतम् (फलों का भोग) धरना तथा दान करना C
१२	चं	४१	३४	अ	३६	४४	गं	४८	५४	कौ	१२	३३	३४	१८	८	२३	१	८	२३	१	४४	६१	१०	वृश्चिके							
१३	मं	३७	३६	ज्ये	३४	३४	वृ	४२	३१	ग	६	३७	३७	१६	६	२३	२	८	२४	२	५४	६१	१०	धनुषि	३४	३४					भ.प्र.३७/३६, भौम प्रदोषः
१४	बु	३२	०४	मू	३०	४६	धु	३४	४६	वि	४	५२	३६	२०	१०	२३	३	८	२५	४	०४	६१	६	धनुषि							भ.नि.४/५२
३०	गु	२५	१३	पू.षा	२५	४३	व्या	२६	०८	ना	२५	१३	२६	२१	१	२३	६	८	२६	५	१३	६१	१०	मकरे	३६	१८					अमावस्या, गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र D

अयनांशः २४/११/२६

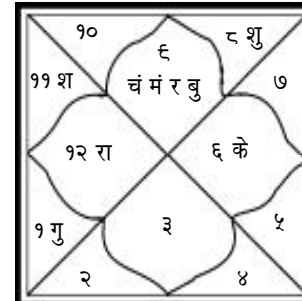
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

पौष कृष्ण ८ गुरौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	७	०	७	१०	११	५
१८	५	२८	११	१२	६	२६	२६
५६	२४	१६	२५	६	१६	३१	३१
०८	२७	३४	०५	४८	२८	४५	४५
६१	४४	२०	१	७४	६	३	३
०६	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११



ज्ञात्वा सुरर्षभं युद्धाज्जांबवत्याः समर्पणम्॥
 सत्राजितस्य प्राप्तस्य स्वतो दानं मुरारिणा॥४१॥
 विवाहः सत्यभामाया दत्तायाः प्रीतये हरेः॥
 रामेण सह कृष्णस्य गमनं गजसाहवयो॥४२॥
 अकूरकृतवर्मभ्यां प्रेरिताच्छतधन्वनः॥
 सत्राजितवयो मध्ये कृष्णाच्छतधनोर्वधः॥४३॥
 रामस्य मिथिलायात्रा गदाशिक्षा सुयोधने॥
 अकूरमणिदानं च शक्रप्रस्थे हरेर्गतिः॥४४॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/११/२७

पौष कृष्ण ३० गुरौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	८	०	७	१०	११	५
२६	१०	२	११	२०	६	२६	२६
७	३७	४५	३६	४२	५६	८	८
१६	३२	२३	६	४८	२८	४५	४५
६१	४५	५६	२	७४	६	३	३
१०	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A बुधोदय पूर्वे मूले धनुषि च भौमः ४२/३५, अनुराधायां भृगुः ४३/५८ B व.ग. वृश्चिके बुधः १०/१८ C ति. श्री गोविन्दजी महाराज का उत्सव, मूले धनुषि च बुधः ३३/४५, ज्येष्ठायां भृगुः ४१/०५

D चि. १०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा) का जन्मदिन (२०३७) शते २ शनिः ४/२८, उषायां रविः ३२/०८ पूर्वोदयः भौमः

श्री वल्लभाब्दः ५४६ पौष शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ जनवरी सन् २०२४ उत्तरायणे शिशिरर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.			गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के						
														पौ.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	उ.पा.	मू.		मू.	अश्वि.	ज्ये.	शते.	रे.	चि.	
१	शु	१७	३६	उ.पा	१६	५१	ह	१६	४८	ब	१७	३६	$\frac{२६}{४२}$	२२	$\frac{१}{१२}$	$\frac{७}{२३}$	$\frac{६}{४}$	८	२७	६	२३	६१	६	मकरे			चन्द्रदर्शनम् मु.३०						
२	श	०६	३३	श्र	१३	३८	व	$\frac{७}{५७}$	$\frac{०८}{३१}$	कौ	६	३३	४४	२३	१३	२३	५	८	२८	७	३२	६१	६	कुम्भे	४०	३३	पंचक प्रारम्भ रात्रि के ११ बजके ३५ मिनट पर						
३	र	१	३६	ध	७	३१	व्य	४८	१३	ग	१	३६	४५	२४	१४	२३	५	८	२६	८	४१	६१	८	कुम्भे			भ.प्र.२८/०५, नि.५४/३३, भोगी, धनुर्मास की समाप्ति, मकरे रवि: A						
४	र	५४	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
५	च	४७	१८	श	$\frac{१}{५७}$	$\frac{५३}{०१}$	व	३६	३३	ब	२०	५६	४७	२५	१५	२३	६	६	०	०६	४६	६१	८	मीने	४३	०८	मकर संक्रान्ति पुण्यकाल सूर्योदय प्रातः ७/२३ से दिन के ३ बजके B						
६	म	४१	३१	उ.भा	५३	११	प	३१	३८	कौ	१४	२५	४६	२६	१६	२३	७	६	१	१०	५७	६१	७	मीने			श्री दामोदरलाल जी महाराज का उत्सव						
७	बु	३६	५३	रे	५०	२८	शि	२४	३६	ग	६	१२	५२	२७	१७	२३	८	६	२	१२	०४	६१	६	मेघे	५०	२८	भ.प्र.३६/५३, पंचक समाप्त पिछली रात्रि के ३ बजके ३३ मिनट पर						
८	गु	३३	२६	अ	४६	०१	सि	१८	३४	वि	५	११	५४	२८	१८	२३	६	६	३	१३	१०	६१	५	मेघे			भ.नि.५/११, मूले धनुषि च भृगु: ३४/२०						
९	शु	३१	१६	भ	४८	४१	सा	१३	२६	बा	२	२३	५६	२६	१६	२३	६	६	४	१४	१५	६१	४	मेघे									
१०	श	३०	१४	कृ	४६	२६	शु	६	२२	तै	०	४५	५८	३०	२०	२३	१०	६	५	१५	१६	६१	४	वृषे	३	४८	पूषायां बुधः २०/३५						
११	र	३०	१५	रो	५१	१७	शु	६	०२	व	०	१५	$\frac{३७}{०}$	मा	२१	२३	११	६	६	१६	२३	६१	३	वृषे			भ.प्र.०/१५, नि.३०/१५, पुत्रदा ११ व्रतम् (श्री फल-गुड) C						
१२	च	३१	१८	मृ	५४	०३	ब्र	३	३३	ब	०	४७	३	२	२२	२२	१२	६	७	१७	२६	६१	२	मिथुने	२२	३४							
१३	मं	३३	१८	आ	५७	४३	ऐ	१	४८	कौ	२	१८	६	३	२३	२२	१३	६	८	१८	२८	६१	१	मिथुने			भौम प्रदोषः						
१४	बु	३६	१४	पुन	६०	०	वै	०	४६	ग	४	४६	८	४	२४	२२	१३	६	६	१६	२६	६१	०	कर्के	४६	०५	भ.प्र.३६/१४, श्रवणे रवि: ३७/५५						
१५	गु	४०	०६	पुन	२	१६	वि	०	२६	वि	८	१२	$\frac{२७}{११}$	५	$\frac{१}{२५}$	$\frac{७}{२१}$	$\frac{६}{१४}$	६	१०	२०	२६	६०	५६	कर्के			भ.नि.८/१२, पूर्णिमाव्रतम्, माघ स्नानारम्भः, गुरु पृथ्यामृत योग D						

अयनांशः २४/११/२६

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

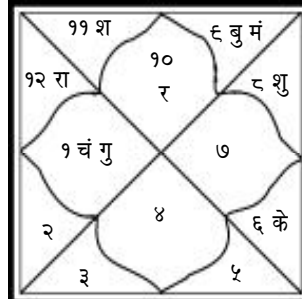
मकर संक्रान्ति

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

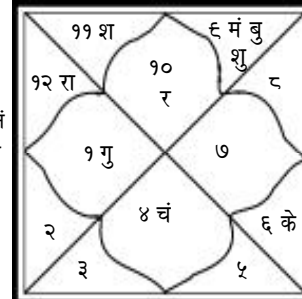
अयनांशः २४/११/३०

पौष शुक्ल ८ गुरौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	८	०	७	१०	११	५
३	१५	१०	११	२६	१०	२५	२५
१५	५३	२३	५६	१८	४२	४६	४६
१२	३२	४८	१६	४३	३३	४५	४५
६१	४५	७४	४	७३	७	३	३
०५	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११



पौष शुक्ल ४ रवौ इष्ट ४८/२४ समये विष्टि करणे प्रविष्टाः निविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं अश्वं उपवाहनं सिंहः धैर्यः फलं असित वस्त्रं पट्टमुपवस्त्रं कुन्तायुद्धं चित्रान्नं भक्ष्यं ओतुमदः लेपनं द्विजजातिः दुर्वाः पुष्पं पत्रं भोजनपात्रं गुंजाभूषणं नील कञ्चुकी गोदावरी स्नानं वृद्धावस्था मुहूर्ताः १५ महर्षे फलं (धान्यादि भाव महंगा) वार नाम घोरा शुक्राः सुखिनः नक्षत्र नाम चरा चौराः सुखिनः वत्सः दक्षिणे राहुः पूर्वे मूलवर्गे।



पौष शुक्ल १५ गुरौ इष्ट ०।०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	८	०	८	१०	११	५
१०	२१	१६	१२	७	११	२५	२५
२२	१०	३२	२६	५४	२८	२४	२४
२५	२७	२१	२३	४०	२८	४५	४५
६०	४५	८३	५	७४	६	३	३
५६	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A ४८/२४, पूषायां भौमः ३६/२५ B २३ मिनट तक, तिलवा गोपीवल्लभ या राजभोग में उत्तरायण, सोमवती पंचमी, C अभिजित प्रवृत्तौ रवि: २१/१३

D प्रातः ८/१७ से सूर्योदय तक अभिजित निवृत्तौ रवि: ३०/२५

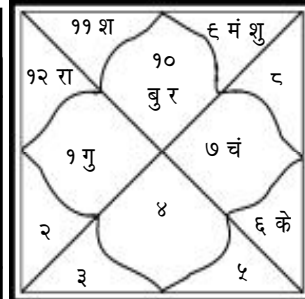
श्री वल्लभाब्दः ५४६ माघ (गु. पौष) कृष्णपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ जनवरी-फरवरी सन् २०२४ उत्तरायणे शिशिरर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः		चन्द्र		प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के								
														मा.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	श्र.	पू.षा.	पू.षा.	अश्वि.	मू.	शते.	रे.	चि.	
१	शु	४५	००	पु	७	५०	प्री	०	५५	बा	१२	३५	$\frac{२७}{१४}$	६	$\frac{१}{२६}$	$\frac{७}{२१}$	$\frac{६}{१४}$	६	११	२१	२८	६०	५६	कर्क			गणराज्य दिनम्					
२	श	५०	४३	आ	१४	१३	आ	२	०१	तै	१७	५२	१७	७	२७	२०	१५	६	१२	२२	२७	६०	५७	सिंहे	१४	१३						
३	र	५७	०६	म	२१	२४	सौ	३	४७	व	२३	५६	१६	८	२८	२०	१५	६	१३	२३	२४	६०	५७	सिंहे			भ.प्र.२३/५६, नि.५७/०६					
४	चं	६०	०	पू.फा	२६	०५	शो	६	०	ब	३०	३४	२१	६	२६	२०	१६	६	१४	२४	२१	६०	५७	कन्यायां	४६	०३	चतुर्थी व्रतम्, पूषायां भृगुः २४/०८					
४	मं	३	५६	उ.फा	३६	५६	अ	८	२६	बा	३	५६	२४	१०	३०	१६	१७	६	१५	२५	१८	६०	५५	कन्यायां			उषायां बुधः १/३८					
५	बु	१०	४५	ह	४४	३५	सु	१०	५५	तै	१०	४५	२८	११	३१	१६	१८	६	१६	२६	१३	६०	५५	कन्यायां								
६	गु	१६	५६	चि	५१	१८	धृ	१२	५३	व	१६	५६	३०	१२	$\frac{२}{१}$	१८	१८	६	१७	२७	८	६०	५४	तुलायां	१८	०४	भ.प्र.१६/५६, नि.४६/२५, मकरे बुधः १७/४०, उषायां भौमः १४/०					
७	शु	२१	५४	स्वा	५६	३६	शू	१४	०२	ब	२१	५४	३३	१३	२	१८	१६	६	१८	२८	०२	६०	५३	तुलायां			पीलीघटा					
८	श	२५	१०	वि	६०	०	गं	१३	५५	कौ	२५	१०	३६	१४	३	१७	२०	६	१६	२८	५५	६०	५३	वृश्चिके	४४	२८	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज का उत्सव, भरण्यां १ गुरुः १३/५३					
९	र	२६	२४	वि	००	०६	वृ	१२	१६	ग	२६	२४	३६	१५	४	१७	२०	६	२०	२६	४८	६०	५१	वृश्चिके			भ.प्र.५५/५४					
१०	चं	२५	२३	अ	१	३५	ध्रु	६	०	वि	२५	२३	४१	१६	५	१७	२१	६	२१	३०	३६	६०	५१	वृश्चिके			भ.नि.२५/२३, मकरे भौमः ३६/५					
११	मं	२२	१२	ज्ये	$\frac{०}{५७}$	$\frac{४६}{५६}$	व्या	$\frac{३}{५७}$	$\frac{५७}{१२}$	बा	२२	१२	४३	१७	६	१६	२२	६	२२	३१	३०	६०	५०	धनुषि	०	४६	षट्तिता ११ व्रतम् (तिल्ली) धनिष्ठायां रविः ४६/१०					
१२	बु	१६	५८	पू.षा	५३	२५	व	४६	०५	तै	१६	५८	४७	१८	७	१६	२३	६	२३	३२	२०	६०	४६	धनुषि			प्रदोषः, श्रवणे बुधः ५०/३३					
१३	गु	१०	०७	उ.षा	४७	२६	सि	३६	४७	व	१०	०७	$\frac{५०}{१६}$	१६	८	१५	२३	६	२४	३३	०६	६०	४७	मकरे	७	०४	भ.प्र.१०/०७, नि.३६/५					
१४	शु	२	०३	श्र	४०	३८	व्य	२६	४१	श	२	०३	$\frac{२७}{५६}$	२०	$\frac{२}{६}$	$\frac{७}{१४}$	$\frac{६}{२४}$	६	२५	३३	५५	६०	४७	मकरे			अमावस्या प्रातः ८ बजके ३ मिनट से, पूर्वे अस्तं बुधः उषायां भृगुः १२/२०					
३०	शु	५३	०८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अयनांशः २४/११/३१

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

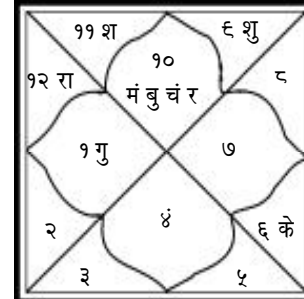
माघ कृष्ण ८ शनौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	६	०	८	१०	११	५
१६	२८	२	१३	१६	१२	२४	२४
३०	०	३२	१८	०	२६	५५	५५
४४	२७	५०	३२	३३	३२	४६	४६
६०	४६	६१	७	७४	७	३	३
५३	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११



कालिंदा संगतिः शौरेर्विवाहः स्वपुरे ततः॥
मित्रविवाहतिर्नामजित्युद्धाहोऽत एव च॥४५॥
भद्राया लक्ष्मणायाश्च विवाहो मुरघातिना॥
पितुस्तनयाना च नरकस्य च घातनम्॥४६॥
भूमिस्तुली राजकन्याप्रेषणं स्वपुरे ततः॥
गत्वा महेंद्रभवनं पारिजाताहतिर्बलात्॥४७॥
उद्धाहो राजकन्यानां रुक्मिणीकृष्णकौतुकम्॥
कृष्णभार्याकथा पुत्रनामान्युद्धाहपर्वणि॥४८॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/३२



माघ कृष्ण ३० भृगौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	६	०	८	१०	११	५
२५	२	११	१४	२६	१३	२४	२४
३५	३६	४६	०	२४	११	३६	३६
३२	१८	४६	३०	२३	३०	४६	४६
६०	४६	६५	७	७५	७	३	३
४७	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

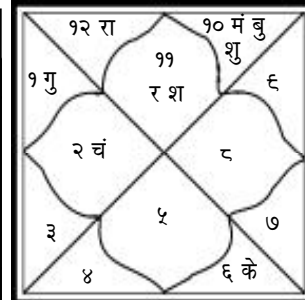
श्री वल्लभाब्दः ५४६ माघ शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ फरवरी सन् २०२४ उत्तरायणे शिशिरर्तुः वसन्तर्तुश्चः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.			गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के
														मा.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	ध. उ.पा. श्र.	भ. उ.पा. शते. रे. चि.		
१	श	४३	५७	ध	३३	२२	व	१६	१०	किं	१८	३३	$\frac{२७}{५७}$	२१	$\frac{२}{१०}$	$\frac{७}{१४}$	$\frac{६}{२५}$	६	२६	३४	४२	६०	४५	कुम्भे	७	०२	पंचक प्रारम्भ प्रातः १० बजके २ मिनट पर, शते ३ शनिः १२/५०
२	र	३४	५१	श	२६	०६	प	$\frac{८}{५८}$	$\frac{३४}{१४}$	बा	६	२४	$\frac{२८}{०}$	२२	११	१३	२५	६	२७	३५	२७	६०	४४	कुम्भे			चन्द्रदर्शनम् मु.३०, मकरे भृगुः ५४/१३
३	च	२६	२३	पू.भा	१६	२१	सि	४८	३१	तै	०	३७	३	२३	१२	१३	२६	६	२८	३६	११	६०	४२	मीने	५	५६	भ.प्र.५२/३५
४	म	१८	४७	उ.भा	१३	३०	सा	३६	४२	वि	१८	४७	६	२४	१३	१२	२६	६	२६	३६	५३	६०	४१	मीने			भ.नि.१८/४७, अंगारकी चतुर्थी श्री मुकुन्दराय जी का पाटोत्सव, A
५	बु	१२	२६	रे	८	५१	शु	३१	५६	बा	१२	२६	८	२५	१४	१२	२७	१०	०	३७	३४	६०	३६	मेघे	८	५१	वसन्त पंचमी, पंचक समाप्त दिनके १० बजके ४३ मिनट पर
६	गु	७	३८	अ	५	४१	शु	२५	३१	तै	७	३८	१२	२६	१५	११	२७	१०	१	३८	१३	६०	३७	मेघे			पश्चिमे अस्तं शनिः
७	शु	४	२५	भ	४	०५	ब्र	२०	२०	व	४	२५	१५	२७	१६	१०	२८	१०	२	३८	५०	६०	३६	वृषे	१८	५४	भ.प्र.४/२५, नि.३३/३७, धनिष्ठायां बुधः ३/१८
८	श	२	४६	कृ	४	०४	ऐ	१६	२७	ब	२	४६	१६	२८	१७	६	२६	१०	३	३६	२६	६०	३४	वृषे			
९	र	२	५१	रो	५	३६	वै	१३	४६	कौ	२	५१	२४	२६	१८	८	३०	१०	४	४०	०	६०	३२	मिथुने	३६	५५	श्रवणे भीमः ३८/१३
१०	चं	४	१८	मृग	८	३६	वि	१२	१३	ग	४	१८	२७	३०	१६	८	३०	१०	५	४०	३२	६०	३०	मिथुने			भ.प्र.३५/४२, वसन्त ऋतु प्रारम्भः, कुम्भे बुधः ५७/१५, शते रविः B
११	मं	७	०५	आ	१२	४७	प्री	११	३७	वि	७	०५	३१	फा	२०	७	३१	१०	६	४१	०२	६०	२६	मिथुने			भ.नि.७/०५, जया ११ व्रतम् (ईख)
१२	बु	१०	५७	पुन	१७	५६	आ	११	५२	बा	१०	५७	३५	२	२१	६	३२	१०	७	४१	३१	६०	२६	कर्के	१	३७	प्रदोषः
१३	गु	१५	४४	पु	२४	०६	सौ	१२	४६	तै	१५	४४	३६	३	२२	५	३३	१०	८	४१	५७	६०	२५	कर्के			गुरु पुष्यामृत योग प्रातः सूर्योदय से सायं ४ बजके ४३ मिनट तक
१४	शु	२१	१६	आ	३०	५४	शो	१४	१६	व	२१	१६	४२	४	२३	४	३४	१०	६	४२	२२	६०	२४	सिंहे	३०	५४	भ.प्र.२१/१६, नि.५४/२०, शते बुधः ४३/३०
१५	श	२७	२३	म	३८	१३	अ	१६	१८	ब	२७	२३	$\frac{२८}{४६}$	५	$\frac{२}{२४}$	$\frac{७}{४}$	$\frac{६}{३४}$	१०	१०	४२	४५	६०	२१	सिंहे			पूर्णिमाव्रतम्, माघ स्नान की समाप्ति, होलिका दण्डारोपणं, आज प्रातः C

अयनांशः २४/११/३३

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

माघ शुक्ल ८ शनौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	६	६	०	६	१०	११	५	
३	८	२४	१५	०६	१४	२४	२४	
४०	४४	५५	४	१८	०८	११	११	
५०	६	५८	३७	०३	३३	४७	४७	
६०	४६	१०२	६	७४	८	३	३	
३४	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	

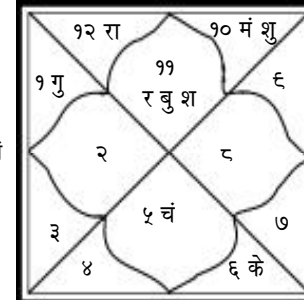


कुम्भ संक्रान्ति

माघ शुक्ल ४/५ भीमे इष्ट २१/२० समये बव करणे प्रविष्टः निविष्टः स्थितिः समं फलं श्वेत वस्त्रं श्वेतमुपवस्त्रं भुशुण्ड्या युधं अन्नं भक्ष्यं कस्तूरी लेपनं देवता जाति पुन्नाग पुष्पं सुवर्ण भोजनपात्रं नूपुर भूषणं विचित्र कञ्चुकी गंगास्नानं बालावस्था मुहूर्तः ३० वार नाम महोदरी चौरा सुखिनः नक्षत्र नाम मैत्रा राजा सुखिनः वत्सः पश्चिमे राहुः दक्षिणे मूलं पाताले।

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/३४



माघ शुक्ल १५ शनौ इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	६	१०	०	६	१०	११	५	
१०	१४	७	१६	१४	१४	२३	२३	
४३	७	१०	८	५६	५६	४८	४८	
५७	५६	०१	३६	४६	३१	४८	४८	
६०	४६	१०८	१०	७४	८	३	३	
२१	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११	

A कुम्भे रविः २१/२०

B ५७/३८, श्रवणे भृगुः ५६/३३

C सूर्योदयात् पूर्व ४ बजके ४६ मिनट पश्चात्, धमार का आरम्भ।

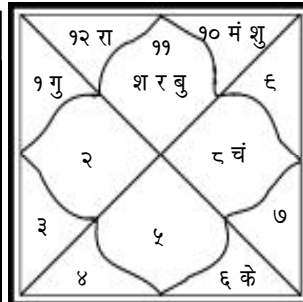
श्री वल्लभाब्दः ५४६ फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ फरवरी-मार्च सन् २०२४ उत्तरायणे वसन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.			गतिः		चन्द्र			प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के			
														फा.	उ.	अ.	स्टे.टा.	०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प	शते.	श्र.			शते.	भ.	श्र.
१	र	३३	५५	पू.फा	४५	५५	सु	१८	३५	बा	०	३६	$\frac{२८}{४७}$	६	$\frac{२}{२५}$	$\frac{७}{३}$	$\frac{६}{३४}$	१०	११	४३	०६	६०	२०	सिंहे						
२	च	४०	३७	उ.फा	५३	४५	वृ	२१	०२	तै	७	१६	$\frac{५१}{७}$	७	२६	२	३५	१०	१२	४३	२६	६०	१८	कन्यायां	२	५४				
३	म	४७	१२	ह	६०	०	शू	२३	३२	व	१३	५५	$\frac{५५}{८}$	८	२७	१	३५	१०	१३	४३	४४	६०	१७	कन्यायां			भ.प्र.१३/५५, नि.४७/१२, भरण्यां २ गुरुः १४/०८			
४	बु	५३	१६	ह	१	२४	गं	२५	४२	ब	२०	१६	$\frac{२६}{०}$	६	२८	$\frac{७}{०}$	३६	१०	१४	४४	०१	६०	१५	तुलायां	३५	०१	चतुर्थीव्रतम्			
५	गु	५८	२६	चि	८	२६	वृ	२७	२२	कौ	२५	५४	३	१०	२६	$\frac{६}{५६}$	३६	१०	१५	४४	१६	६०	१४	तुलायां						
६	शु	६०	०	स्वा	१४	३६	ध्रु	२८	११	ग	३०	२७	८	११	$\frac{३}{१}$	५६	३६	१०	१६	४४	३०	६०	१३	तुलायां			धनिष्ठायां भृगुः ४६/२५ पूभायां बुधः ५५/२३			
६	श	२	२४	वि	१६	२४	व्या	२७	५४	व	२	२४	१०	१२	२	५८	३७	१०	१७	४४	४३	६०	१०	वृश्चिके	३	२१	भ.प्र.२/२४, नि.३३/२६			
७	र	४	३३	अ	२२	२८	ह	२६	११	ब	४	३३	१५	१३	३	५७	३७	१०	१८	४४	५३	६०	०६	वृश्चिके			श्रीनाथजी का पाटोत्सवः			
८	चं	४	४६	ज्ये	२३	३६	व	२२	५६	कौ	४	४६	१७	१४	४	५६	३८	१०	१६	४५	०२	६०	८	धनुषि	२३	३६	रेवत्यां २ राहुः हस्ते ४ केतुश्च ११/५०, पूभायां रविः १४/०५			
९	मं	२	५६	मू	२२	४६	सि	१८	०६	ग	२	५६	२०	१५	५	५५	३८	१०	२०	४५	१०	६०	६	धनुषि			भ.प्र.३१/०, नि.५६/०३			
१०	मं	५६	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	बु	५३	२३	पू.षा	१६	५८	व्य	११	४१	ब	२६	१३	२३	१६	६	५५	३८	१०	२१	४५	१६	६०	५	मकरे	३३	५८	धनिष्ठायां भौमः ५३/१३			
१२	गु	४६	१०	उ.षा	१५	२८	व	$\frac{३}{५४}$	$\frac{४८}{४३}$	कौ	१६	४७	२६	१७	७	५४	३८	१०	२२	४५	२१	६०	३	मकरे			विजया ११ व्रतम् (दूध पेड़ा), मीने बुधः ५/४३, कुम्भे भृगुः ६/४५			
१३	शु	३७	४८	श्र	६	३५	शि	४४	४८	ग	११	५६	३०	१८	८	५३	४०	१०	२३	४५	२४	६०	१	कुम्भे	३६	१३	भ.प्र.३७/४८, प्रदोषः, महाशिवरात्रि, पंचक प्रारम्भ रात्रि के ६ बजके A			
१४	श	२८	४०	घ	$\frac{२}{५५}$	$\frac{४३}{१५}$	सि	३४	१५	वि	३	१४	३३	१६	६	५२	४०	१०	२४	४५	२५	५६	५६	कुम्भे			भ.नि.३/१४			
३०	र	१६	१३	पू.भा	४७	४५	सा	२३	३०	ना	१६	१३	$\frac{२६}{३५}$	२०	$\frac{३}{१०}$	$\frac{६}{५१}$	१०	२५	४५	२३	५६	५७	मीने	३४	३७	अमावस्या, बुधोदय पश्चिमे				

अयनांशः २४/११/३५

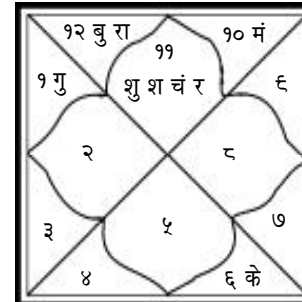
प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

फाल्गुन कृष्ण ८ सोमे इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	६	१०	०	६	१०	११	५
१६	२१	२३	१७	२६	१६	२३	२३
४५	५	५८	३६	५	०५	२०	२०
५५	४६	५४	३६	२६	२६	४८	४८
६०	४६	११५	१०	७४	८	३	३
०८	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११



रामाद्रुविमवधो द्यूते बाणस्य हरसंकथा॥
उषास्वनकथा चित्रलेख्या हरणं हरेः॥४६॥
पौत्रस्य बंधनं चापि बाणयादवसंयुगे॥
कृष्णशंकरयोर्युद्धं ज्वरसंस्तवनं ततः॥५०॥
बाणबाहुच्छिदा रुद्रस्तुतिर्बाणाभयं वरः॥
उषाप्रतिर्नृगाख्यानं बलभद्रजगमः॥५१॥
गोपीविलापो रामस्य स्तुतिर्गोपीभिरेव च॥
यमुनाकर्षणं काशीपतिर्पौड्रकथातनम्॥५२॥

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः



अयनांशः २४/११/३६

फाल्गुन कृष्ण ३० रवौ इष्ट ०।०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	६	११	०	१०	१०	११	५
२५	२५	०५	१८	३	१६	२३	२३
४६	४४	३५	४४	३०	४६	०१	०१
०५	४०	३१	३७	१५	२४	४६	४६
५६	४७	११५	११	७५	७	३	३
५७	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A २० मिनट पर शते ४ शनिः ४२/२५, उभायां बुधः ४६/५३

श्री वल्लभाब्दः ५४६ फाल्गुन शुक्लपक्ष : संवत् २०८० शकः १९४५ मार्च सन् २०२४ उत्तरायणे वसन्तर्तुः

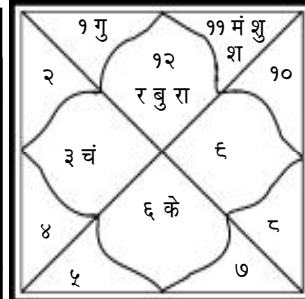
ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः		चन्द्र		प्रतिपदि	सू. मं बु गु शु श रा के		
																		स्टे.टा. ०६:३५	क.	वि.	राशि	घ.	प			पू.भा. ध. उ.भा. भ. ध. शते. रे. ह.	
१	चं	६	५३	उ.भा	४०	३८	शु	१२	५३	ब	६	५३	२६ ४०	२१	३ ११	६ ५०	६ ४१	१०	२६	४५	२०	५६	५६	मीने			चन्द्रदर्शनम् मु.४५
२	मं	०१	०५	रे	३४	१५	शु	२ ५३	४५ २३	कौ	१	०५	४५	२२	१२	४६	४१	१०	२७	४५	१६	५६	५३	मेघे	३४	१६	पंचक समाप्त रात्रि के ८ बजके २६ मिनट पर, शते भृगुः ३३/०३
३	म	५३	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
४	बु	४६	४०	अ	२६	०५	ऐ	४५	०५	व	१६	५७	४८	२३	१३	४८	४२	१०	२८	४५	०६	५६	५१	मेघे			भ.प्र.१६/५७, नि.४६/४०
५	गु	४१	४३	भ	२५	२५	वै	३८	०५	ब	१४	१२	५१	२४	१४	४७	४२	१०	२६	४५	०	५६	४६	वृषे	३६	४६	मीने रविः १४/३५
६	शु	३८	३५	कृ	२३	३०	वि	३२	३३	कौ	१०	०६	५३	२५	१५	४६	४३	११	०	४४	४६	५६	४७	वृषे			कुम्भे भौमः २८/२८, रेवत्यां बुधः ५८/५८
७	श	३७	२०	रो	२३	२५	प्री	२८	३०	ग	७	५८	५५	२६	१६	४५	४३	११	१	४४	३६	५६	४५	मिथुने	५४	०४	भ.प्र.३७/२०, श्री मधुरेशजी का पाटोत्सव, गो.ति.१०८ A
८	र	३७	५८	मृ	२५	१३	आ	२५	५८	वि	७	३६	३० ३०	२७	१७	४४	४४	११	२	४४	२१	५६	४२	मिथुने			भ.नि.७/३६, होलिकाष्टकारम्भः, उभायां रविः ३५/३०
९	चं	४०	२३	आ	२८	४३	सौ	२४	४८	बा	६	११	४	२८	१८	४२	४४	११	३	४४	०३	५६	४०	मिथुने			
१०	मं	४४	१६	पुन	३३	४६	शो	२४	५१	तै	१३	५०	१०	२६	१६	४१	४५	११	४	४३	४३	५६	३८	कर्के	१७	२३	
११	बु	४६	२१	पु	३६	५८	अ	२५	५३	व	१६	४६	१३	३०	२०	४०	४५	११	५	४३	२१	५६	३६	कर्के			भ.प्र.१६/४६, नि.४६/२१, आमलकी (कुंज) ११ व्रतम् (आंवला), पूर्वोदय शनिः
१२	गु	५५	१८	आ	४७	०३	सु	२७	४१	ब	२२	२०	१७	चै	२१	३६	४६	११	६	४२	५७	५६	३३	सिंहे	४७	०२	
१३	शु	६०	०	म	५४	३८	धृ	२६	५६	कौ	२८	३२	२०	२	२२	३८	४६	११	७	४२	३०	५६	३१	सिंहे			प्रदोषः
१३	श	१	४६	पू.फा	६०	०	शू	३२	२६	तै	१	४६	२५	३	२३	३७	४७	११	८	४२	०१	५६	२६	सिंहे			पूभायां भृगुः २०/८
१४	र	८	२१	पू.फा	२	२८	गं	३४	५६	व	८	२१	२७	४	२४	३६	४७	११	९	४१	३०	५६	२७	कन्यायां	१६	२३	भ.प्र.८/२१, नि.४१/३६, होली, होलिका प्रदीपनं १५, सोम के सूर्योदय B
१५	चं	१४	५१	उ.फा	१०	०६	वृ	३७	१६	ब	१४	५१	३० ३०	५	३	६	४७	११	१०	४०	५५	५६	२५	कन्यायां			पूर्णिमाव्रतम्, दोलोत्सव (डोल), धूलिवन्दन (धुरेण्डी), अश्विनी मेघे च बुधः ५१/२०

अयनांशः २४/११/३७

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

फाल्गुन शुक्ल ८ रवौ इष्ट ०१०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	११	०	१०	१०	११	५
२	१	१८	२०	१२	१७	२२	२२
४४	११	२४	४	०६	४०	३८	३८
४४	२३	०७	३७	५३	२२	५०	५०
५६	४६	६६	१२	७५	७	३	३
४२	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

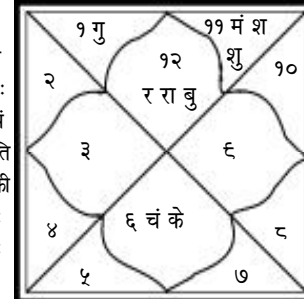


मीन संक्रान्ति

फाल्गुन शुक्ल ५ गुरौ इष्ट १४/३५ समये बालव करणे प्रविष्टाः स्थितिः मध्यमं फलं वाहनं व्याघ्रः उपवाहनमश्वः भयं फलं पीत वस्त्रं रक्तमुपवस्त्रं गदा युधं परमान्नं भक्ष्यं कुंकुम लेपनं भूत जातिः जाति पुष्पं रौप्यं भोजन पात्रं कंकण भूषणं पत्र कञ्चुकी यमुनास्नानं कुमारवस्था मुहूर्त्ता १५ वार नाम नन्दाः विप्राः सुखिनः नक्षत्र नाम उग्राः शुभ्राः सुखिनः वत्स पश्चिमे राहुः दक्षिणे मूलं भूमौ।

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/३८



फाल्गुन शुक्ल १५ सोमे इष्ट ०१०

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	११	०	१०	१०	११	५
१०	७	२६	२१	२२	१८	२२	२२
४०	२४	१३	४१	३	३६	१३	१३
५५	०७	२६	३५	२०	१६	५१	५१
५६	४७	५४	१३	७४	७	३	३
२५	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	११	११

A श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेशजी) महाराज का जन्मदिन (२००६) भरण्यां ३ गुरुः ३५/३५

B ६ बजके ३६ मिनट पूर्व शते भौमः ३/०५

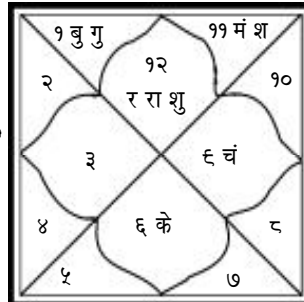
श्री वल्लभाब्दः ५४६ चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः संवत् २०८० शकः १९४५ मार्च-अप्रैल सन् २०२४ उत्तरायणे वसन्तर्तुः

ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	भा.	अं.	र.	र.	प्रा. स्प. रवि.		गतिः	चन्द्रः			प्रतिपदि सू. मं बु गु शु श रा के उ.भा. शते. रे. भ. पू.भा. शते. रे. ह.										
																		स्टे.टा.	०६:३५		क.	वि.	राशि	घ.	प.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	मं	२०	५६	ह	१७	३१	ध्रु	३६	२१	कौ	२०	५६	$\frac{३०}{३५}$	६	$\frac{३}{२६}$	$\frac{६}{३४}$	$\frac{६}{४८}$	११	११	४०	२०	५६	२३	तुलायां	५०	५६	द्वितीया पाट							
२	बु	२६	२६	चि	२४	१६	व्या	४०	५४	ग	२६	२६	३८	७	२७	३३	४८	११	१२	३६	४३	५६	२१	तुलायां			भ.प्र.५८/४८							
३	गु	३१	०६	स्वा	३०	१६	ह	४१	४४	वि	३१	०६	४३	८	२८	३२	४६	११	१३	३६	०४	५६	१६	तुलायां			भ.नि.३१/०६, चतुर्थी व्रतम्							
४	शु	३४	३६	वि	३५	१६	व	४१	४४	ब	२	५३	४५	९	२९	३१	४६	११	१४	३८	२३	५६	१७	वृश्चिके	१६	०८								
५	श	३६	५४	अ	३८	५६	सि	४०	४४	कौ	५	४७	५०	१०	३०	३०	५०	११	१५	३७	४०	५६	१६	वृश्चिके										
६	र	३७	३६	ज्ये	४१	११	व्य	३८	३४	ग	७	१७	५२	११	३१	२६	५०	११	१६	३६	५६	५६	१४	धनुषि	४१	१२	भ.प्र.३७/३६, रेवत्यां रविः ३/४८, मीने भृगुः २५/४५							
७	चं	३६	४६	मू	४१	५४	व	३५	०७	वि	७	१४	५७	१२	$\frac{४}{१}$	२८	५१	११	१७	३६	१०	५६	१२	धनुषि			भ.नि.७/१४, शीतला पूजनम् गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) A							
८	मं	३४	१६	पू.षा	४०	५६	प	३०	२४	बा	५	३५	$\frac{३१}{०}$	१३	२	२७	५१	११	१८	३५	२२	५६	१०	मकरे	५५	२८								
९	बु	३०	१२	उ.षा	३८	२७	शि	२४	२२	तै	२	१६	२	१४	३	२६	५१	११	१६	३४	३२	५६	८	मकरे			भ.प्र.५७/२५, उभायां भृगुः ७/४०							
१०	गु	२४	३७	श्र	३४	३२	सि	१७	०६	वि	२४	३७	७	१५	४	२५	५२	११	२०	३३	४०	५६	७	मकरे			भ.नि.२४/३७, अश्वत्थ पूजनं (दशमाता)							
११	शु	१७	४७	घ	२६	२२	सा	$\frac{८}{५६}$	$\frac{५२}{३६}$	बा	१७	४७	१०	१६	५	२४	५२	११	२१	३२	४७	५६	५	कुम्भे	२	०५	पापमोचिनी ११ व्रतम् (लौग इलायची), पंचक प्रारम्भ प्रातः ७ बजके B							
१२	श	६	५७	श	२३	१४	शु	४६	५४	तै	६	५७	१२	१७	६	२३	५२	११	२२	३१	५२	५६	३	कुम्भे			शनि प्रदोषः, पूभायां १ शनि १६/१०, वारुणि योग प्रातः १० बजके C							
१३	र	१	२४	पू.भा	१६	३४	ब्र	३६	५२	व	१	२४	१७	१८	७	२२	५३	११	२३	३०	५५	५६	०१	मीने	३	१७	भ.प्र.१/२४, नि.२६/५८							
१४	र	५२	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०							
३०	चं	४३	४६	उ.भा	६	४४	ऐ	२६	४४	च	१८	११	$\frac{३१}{२०}$	१६	$\frac{४}{८}$	$\frac{६}{२१}$	$\frac{६}{५३}$	११	२४	२६	५५	५८	५६	मीने			सोमवती अमावस, स्याद वर्ष हर्ष वर्षदम्							

अयनांशः २४/११/३६

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

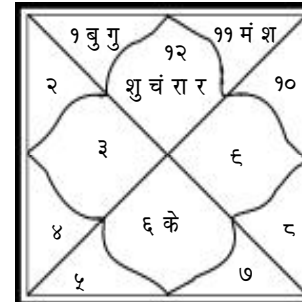
चैत्र कृष्ण ८ भौमे इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	०	०	११	१०	११	५	
१८	१३	३	२३	१	१६	२१	२१	
३५	३७	०	२२	५६	३१	४८	४८	
०४	५०	५३	३१	०	१७	५२	५२	
५६	४६	३	१३	७५	७	३	३	
१०	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	११	११	



काशीदाहः स्वकृत्यातो द्विविदस्य बलाद्धयः॥
 लक्ष्मणाहरणं रामविक्रमो गजसाहवये॥५३॥
 नारदेन हरेर्लीलादर्शनं गृहमेधिनाम्॥
 आह्विकं वासुदेवस्य राज्ञां विज्ञापनं लुपेः॥५४॥
 मंत्रणादुद्धवस्यैन्द्रप्रस्थे गमनमीशितुः॥
 जरासंधवधः स्तोत्रं राज्ञां सत्कृतिरेव च॥५५॥
 राजसूये हरेः पूजा शिशुपालवधस्तथा॥
 दुर्योधनाभिमानस्य भंगः प्रद्युम्नशाल्वयोः॥५६॥
 क्रमशः.....

प्रातः स्पष्टा ग्रहाः

अयनांशः २४/११/४०



चैत्र कृष्ण ३० सोमे इष्ट ०।०	र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	०	०	११	१०	११	५	
२४	१८	१	२४	०६	२०	२१	२१	
२६	१७	२	४१	२०	११	२२	२८	
२०	३७	४२	२७	३५	१३	५३	५३	
५८	४६	३७	१३	७४	६	३	३	
५६	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	११	११	

A महाराज के पौत्र गो.चि. १०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा) के पुत्र गो.चि. १०५ श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा) का जन्मदिन (२०७५) व.ग. बुधः ५३/१५, भरण्यां ४ गुरुः ४६/१३

B १२ मिनट पर, पश्चिमे अस्ते बुधः

C २१ मिनट से दोपहर ३ बजके ४१ मिनट तक

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभास्त होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाविन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभाति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विजय मिटे, धन को लाभ होय

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

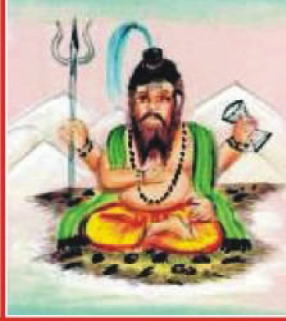
रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

विशेष : यद्यपि इनको चौघड़िया कहते हैं किन्तु दिनमान एवं रात्रिमान के समान आठ भाग करके ही फल देखना चाहिये।

बोधे विदोर्थायशनेर्गृहाण होरां गमेच्छस्य गुरोर्विवाहे। समस्तकार्येषु विधोर्नरिन्द्रसेवासु भानोः समरे कुसूनोः॥१॥ प्रकीर्तित यस्य नभश्चरस्य यत्कर्मवारेऽपि बुधाग्रगण्यैः। होराभिधायां शुचरस्य तस्य विधीयतेऽनुककम् नित्यम्॥२॥ होरायां दिवसविभोर्नोन्नवस्त्र द्वौचावौ किमु नकुलौ तथा कुदेवाः। चत्वारः स्त्रिवती भुजश्च गोरजक्या उक्षैको मिलति गमे तथा कुमारी॥३॥ होरायां शशिनो मृदंगं नकुलोष्ट्राः स्त्रीक्ष्यं श्वाविगो भेरीकाकखरोहयश्च कुसुमं विप्रद्वयं भृशुवः। षण्ठः श्वत्रितयं विडालसमर गेहस्य दाहो रजः संयुक्तायुवतिः कलिः परिजने ननो विमुक्तो द्विजः॥४॥ बालः स्त्रीसुमचापचातकगजाः पूर्णो घटो दर्पणो निशेषशकुनौ ना सन्ध्या होराभिधायां विदः। मार्गोऽर्च्यस्य बकश्च काकगणकोणीधेनु बभ्रुद्विजा वेश्या बह्व उताबला सतयुता साभ्यो घटो हंसराट्॥५॥ शुक्रस्याडिभ्रमवत्रयं च गणकः काकात्रय पंच वा मघं विट्पुलधेनुधान्यगणिकाः षण्ठोद्विजेन्द्रः शनैः। होरायां यवनप्रणयडभृतका नग्नो नपुंसो रजोयुक्तास्त्री विधवा युवा च दहनी गृधः पिशाचः पथि॥६॥

न्यौषावर २०) रूपया • मुद्रक : इण्डिया ऑफसेट प्रिन्टर्स, अजमेर मो. 9314393305



यह श्रीनाथपंचांग नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्रीदाऊजी (श्रीराजीवजी) महाराज
के चिरस्मरणार्थ

**गो. ति. श्री १०८ श्रीइन्द्रदमनजी (श्री शकेशजी) महाराज
की आज्ञा से**

नाथद्वारा निवासी गुर्जरगौड़ त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दनजी शास्त्री द्वारा
दृश्य चित्रापक्षीय अयनांशानुसार निर्माण कराकर प्रकाशित किया।

नि.ली.गो.ति.श्री १०८
श्रीदाऊजी (श्रीराजीवजी) महाराज

प्रकाशक - त्रिपाठी यदुनन्दन श्री नारायणजी शास्त्री विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

